SHREE GURU GITA

श्री गुरु गीता

श्रोत्रिये ब्रह्मनिष्ठ परिव्रजकाचार्य
यति चक्रवर्ती युगविवर्ती १०८
आवाहन पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर
डॉ. स्वामी शिवेन्द्रपुरीजी महाराज

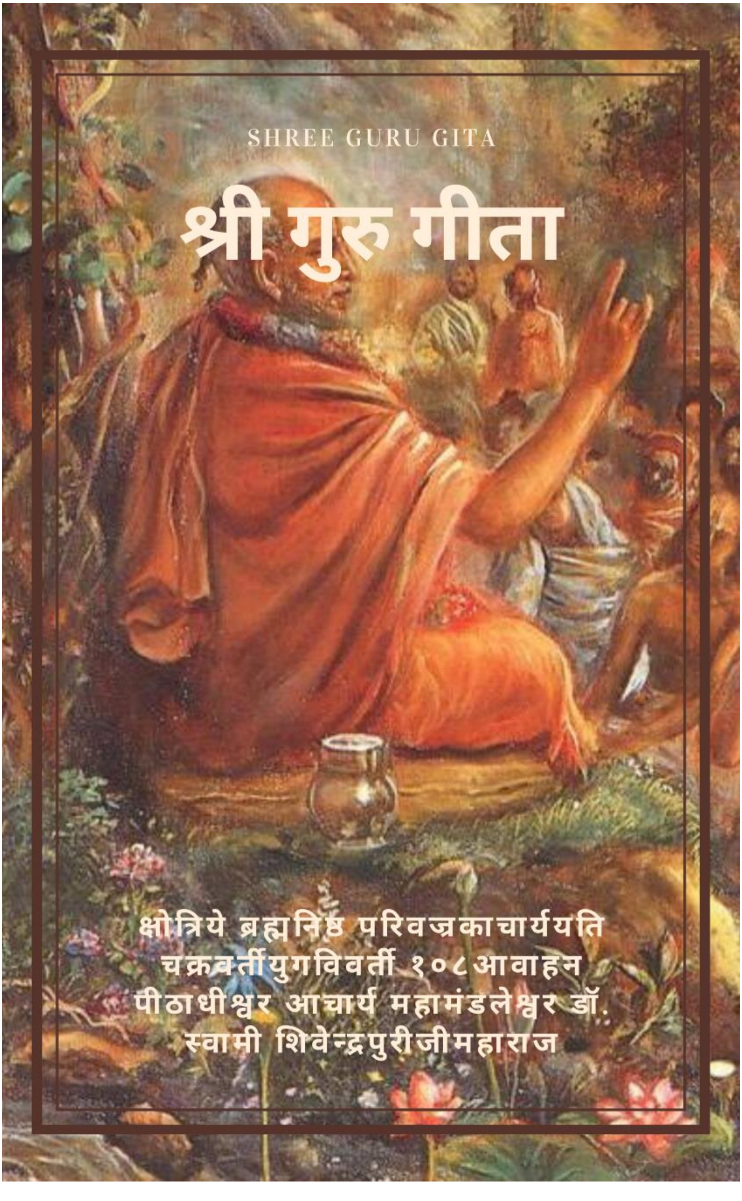
SHREE GURU GITA
श्री गुरु गीता
क्षोत्रिये ब्रह्मनिष्ठ परिवज्रकाचार्ययति
चक्रवर्तीयुगविवर्ती १०८आवाहन
पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर डॉ.
स्वामी शिवेन्द्रपुरीजीमहाराज

श्री गुरु गीता

Śrī Guru Gītā

श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ परिव्राजकाचार्य
यति चक्रवर्ती युगविवर्ती
आवाहन पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर
श्री १०८ डॉ. स्वामी शिवेन्द्रपुरीजी महाराज

Shrotriya Brahmaniṣṭha Parivrājakācārya
Yati Cakravartī Yugavivartī
Āvāhana Pīṭhādhīśvara Ācārya Mahāmaṇḍalēśvara
Śrī 108 Dr. Svāmī Śivēndrapurījī Mahārāja

भूमिका

नमो नारायण, नमः शिवाय

Introduction

Namō Nārāyaṇa, Namaḥ Śivāya

भगवान् शिव इस अखिल ब्रह्माण्ड के अभियंता, नियंता, साक्षी एवं सर्वेसर्वा हैं, जो सदा एक रस प्रतिपल प्रत्येक स्थान पर सम एवं सर्व शक्तिमान हैं। सभी धर्मावलंबी सर्वोपरि एक अदृश्य शक्तिमान सत्ता पर विश्वास करते हैं तथापि हिन्दू सनातन धर्मावलबियों की तो परिपूर्ण आस्था है। संसार में दो प्रकार की निष्ठाएं हैं, साकार और निराकार अर्थात निर्गुण और सगुण। साकार ईश्वर जिससे वरदायी होने के लिए सभी प्रार्थना करते हैं।

Lord Śiva is the creator, controller, witness, and protagonist of the entire cosmos who pervades all space uniformly and holds the supreme power. All men who believe in the Dharma (Sanskrit: eternal law, right actions, and duties, specifically in the context of the Vedas) believe in the rule of one unseen Almighty. True believers of eternal Hindu Dharma carry an absolute faith in Lord Śiva. There are two types of religious convictions in this world—the form and the formless—a belief in God with a form (God manifested) and God without a form (God unmanifested). Most people pray and seek blessings from God, personified in some way.

वेद-वेदांगो तथा पुराणों के महाज्ञाता शौनकादि ऋषिओं ने सूत जी से सद्गुरू के विषय में जो प्रश्न किये हैं, उनके जनकल्याणकारी उत्तर श्री गुरु गीता में समाहित हैं। श्री गुरु गीता सद्गुरु की महिमा के विषय में भगवान् शिव और माँ पार्वती के दिव्य संवाद का महाग्रन्थ है।

The Sages Śaunakādī (seven sages, teachers), who were the supreme knower of the Vedas, and Purāṇa (Sanskrit: ancient Hindu sacred texts) questioned Sage Sūta about an Enlightened Guru. Guru Gītā includes answers of Sage Sūta ji, in response to the questions posited by Sages Śaunakādī, which were written for the benefit of human beings. Śrī Guru Gītā is a sublime sacred text which includes a Divine conversation between Lord Śiva with Goddess Pārvatī highlighting an Enlightened Guru.

सूतजी ने कहा कि गुरु गीता की महिमा अपरम्पार है। सभी उपासकों के लिए अत्यंत ज्ञानप्रद है। भगवान् शिव के उपासक, माँ शक्ति के उपासक, सभी मतवादी श्री गुरु गीता का पाठ करते हैं। श्री गुरु गीता की इतनी महिमा है कि यदि मृत्यु शैय्या पर भी इसका जाप करें तो वह निश्चित ही मोक्ष प्राप्ति करता है। श्री गुरु गीता के नियमित जाप से जन्म मरण के चक्र से मुक्ति मिलती है। श्री गुरु गीता में इस बात का

उल्लेख है कि गुरु सेवा परम धर्म है और जो गुरु सेवा विमुख होता है, वह नरक का भागी बनता है। सद्गुरु की निष्ठा ही परम तप है। इस ब्रह्मांड में ७ करोड़ महामंत्र विद्यमान हैं। लेकिन गुरु गीता सबसे बड़ा, दुर्लभ गोपनीय महाग्रन्थ व सभी मन्त्रों का मुकुटमणि है।

Revered Sage Sūta ji asserted that the glory of Guru Gītā is supreme. This sacred text is an infinite source of knowledge for all devotees. All devotees, including the devotees of Lord Śiva, and Goddess Shakti, practice the teachings of Guru Gītā. Śrī Guru Gītā is so immensely useful that even when a person chants Guru Gītā on his death bed, he is sure to reach mōkṣa (Sanskrit: the purpose of life, absolute liberation from the cycle of rebirth and death, absolute freedom and happiness). Regularly studying the teachings of Śrī Guru Gītā liberates a person from the cycle of birth and death. This text Guru Gītā insists that Guru sēvā (Sanskrit: serving one's Guru selflessly) as supreme Dharma (Sanskrit: eternal law, duties, or righteous actions). The one who develops an aversion from serving one's Guru Dev calls for a passage to hell. Trust in one's Enlightened Guru is considered as a supreme penance. In this universe, there are 70 million established mantras. However, Guru Gītā is a secret and a rare collection of mantras that dwells as a jewel of the crown of all mantras.

भगवान् भोलेनाथ ने माँ पार्वती से कहा कि इस पृथ्वी पर श्री गुरु गीता जैसा कोई अन्य ग्रन्थ नहीं है। यह सभी दुखों का नाश करने वाला है। भगवान् शिव पार्वती से कहते हैं—हे देवी गुरु गीता को नित्य भावपूर्वक हृदय में धारण करो, महाव्याधि वाले दुखी लोगों को सदा आनंद से इसका जप करना चाहिए। जिससे उनके सारे कष्ट समाप्त हो जाते हैं। गुरु गीता सभी प्रकार के दारिद्र्य व कष्टों को दूर कर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान करने वाला है।

Lord Śiva said to Goddess Mother Pārvatī that on this earth, there is no other sacred text like Guru Gītā. Guru Gītā destroys all miseries and pains in life. Lord Śiva says, O’ Devi, accept Guru Gītā in your heart with a resolve to continually practice it. Guru Gītā dispels great sorrows and griefs in life and yields enduring happiness. So, one should consistently chant the mantras of Guru Gītā. Chanting verses of Guru Gītā removes all obstacles in life. It eliminates feelings of deficiency in mind (thoughts of limitedness and insecurity) and instead, fulfills all wishes, puts a person on the path of Dharma (Sanskrit: a moral life endowed with right actions) and ultimately grants mōkṣa (Sanskrit: complete freedom and liberation from the endless cycle of birth and death).

सदगुरु देव की असीम कृपाओं से भरी इस गुरु गीता के संकलन व टीका का श्रेयस्कर कार्य मेरे छोटे प्रिय गुरुभाई

डॉ संतोष मोटवानीजी और प्रकाशन सहयोग से श्री राम सोनी जी ने बड़ी लगन के साथ अनेक ग्रंथो की सहायता से किया है। हम कामना करते हैं कि समस्त श्रद्धालु श्री गुरु गीता का नियमित जप कर अपने जीवन को समस्त कष्टों से मुक्त करें।
—स्वामी नवेन्दुपुरी

This commentary on Guru Gītā is full of divine blessings from our most Revered Guru Dev. The honors also go to my younger brother Dr. Santosh Motwani Ji for his support in the compilation of this publication, and to Śrī Ram Soni Ji for his unwavering determination in the release of this edition of this work. I wish all genuine devotees will accept Guru Gītā in their lives, as their regular daily practice, to relieve themselves from all worries in life.
—Swami Navendu Puri

श्री गणेशाय नमः
प्रथमोऽध्यायः

Śrī Gaṇeśāya Namaḥ
Prathamo'dhyāyaḥ

Salutations to Lord Ganesha

Chapter 1

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गणात्मने ।
समस्त जगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ।। १ ।।

Acintyāvyaktarūpāya Nirguṇāya Gaṇātmane I
Samasta Jagadādhāramūrtaye Brahmaṇe Namaḥ II 1 II

जो ब्रह्म अचिन्त्य, सत, तम, रज, तीनों, गुणों से रहित होकर भी जो अज्ञान रूपी अन्धकार की उपाधि को दूर करने वाले त्रिगुणात्मक समस्त जगत का अधिष्ठान रूप है, ऐसे ब्रह्म को नमस्कार है।

I offer my salutations to that Brahma (Sanskrit: unseen unmanifest Supreme God), who is free from all worries, who, while being apart from three basic properties of matter—sat (Sanskrit: harmony, compassion, truth, love and sacrifice), raja (Sanskrit:

passion, adventure, desire and materialism), and tam (Sanskrit: dark and negative aspect of human life)—destroys the ignorance caused by the darkness of the form. Brahma is the basis and form of the entire material cosmos, which is formed out of three material characteristics (elements)—sat, raj, and tam.

ऋषयः ऊचुः ।

Ṛṣaya: Ūcu: I

Sages Śaunakādī speak…

सूत सूत महाप्राज्ञ निगमागमपारगम् ।
गुरुस्वरुपमस्माकं ब्रूहि सर्वमलापहम् ।। २ ।।

Sūta Sūta Mahāprājña Nigamāgamapāragam I
Gurusvarupamasmākaṃ Brūhi Sarvamalāpaham II 2 II

शौनकादि ऋषियों ने कहा—हे महाज्ञानी वेद-वेदांगों तथा पुराणों के निष्णात ज्ञाता प्रिय सूत जी सर्वपापों एवं दुःखों का नाश करने वाले सद्गुरु के विषय में हमें उपदेश करें।

The Sages Śaunakādī asked—Dear Sūta ji, you are firmly established in, and the knower of all Vedas and Purāṇa (Sanskrit: ancient sacred texts that forms the foundation of the Vedas), so, please expand and teach us about SadhGuru, who is the destroyer of all pains and sorrows in life.

यस्य श्रवणमात्रेण देही दुःखा द्विमुच्यते ।

येन मार्गेण मुनयः सर्वज्ञत्वं प्रपेदिरे ।। ३ ।।
यत्प्राप्य न पुनर्याति नरः संसारबन्धनम् ।
तथाविधं परं तत्त्वं वक्तव्यमधुना त्वया ।। ४ ।।

Yasya Śravaṇamātreṇa Dehī Duḥkhā Dvimucyate I
Yena Mārgeṇa Munaya: Sarvajñatvaṃ Prapedire II 3 II
Yatprāpya Na Punaryāti Naraḥ Saṃsārabandhanam I
Tathāvidhaṃ Paraṃ Tattvaṃ Vaktavyamadhunā Tvayā II 4 II

जिसको सुनने मात्र से मनुष्य दु:खों से विमुक्त हो जाता है। जिसके बताये मार्ग और उपाय से मुनियों ने सर्वज्ञता प्राप्त की है। जिसको प्राप्त करने से मनुष्य मोक्ष के द्वार का मार्ग प्राप्त करता है और संसार रूपी मोह में नहीं बंधता है।

SadhGuru is the one by merely listening to whom, relieves humans from all pains and sorrows. By walking on the path shown by SadhGuru, sadhus have attained omniscience (Self-knowledge or cosmic consciousness), attaining which, one reaches the doors of mōkṣa (Sanskrit: absolute freedom, liberation from the endless cycle of birth and death) and is not deceived into the bondage of this creation existing in the form of worldly attractions.

गुह्याद्गुरुह्यातम् सारं गुरुगीता विशेषतः ।
त्वत्प्रसादाच्च श्रोतव्या तत्सर्वं ब्रूहि सूत नः ।। ५ ।।

Guhyādguruhyātam Sāraṃ Gurugītā Viśēṣata: I
Tvatprasādācca Śrotavyā Tatsarva Brūhi Sūta Na: II 5 II

जो परम तत्व, परम रहस्यमय एवं सर्वश्रेठ सारभूत है। विशेष कर जो गुरु गीता है। वह आपकी कृपा से हम सुनना चाहते हैं। प्यारे सूत जी कृपा करके वह सब हमें सुनाइये।

The one which is the supreme entity, the one which is the most secretive essence of all knowledge, especially Guru Gītā, we would like to be blessed by hearing it from you. Dear Sūta ji, please narrate it for us.

श्री सूत जी उवाच ।

Śrī Sūta Jī Uvāca I

Sage Śrī Sūta Jī speaks…

इति संप्रार्थितः सूतो मुनिसंघैर्मुहुर्मुहुः ।
कुतूहलेन महता प्रोवाच मधुरं वचः ।। ६ ।।

Iti Saṃprārthitaḥ Sūto Munisaṃghairmuhurmuhuḥ I
Kutūhalena Mahatā Provāca Madhuraṃ Vacaḥ II 6 II

इस प्रकार बार-बार वंदन एवं प्रार्थना किये जाने पर सूत जी शौनकादि ऋषिओं से प्रसन्न होकर मुनि समूह से मधुर वाणी में बोले।

In this way, after listening to repeated requests from Sages Śaunakādī, Śrī Sūta ji was delighted. In his sweet voice he says…

श्रुणुध्वं मुनयः सर्वे श्रद्धया परया मुदा ।
वदामि भवरोगघ्नीं गीतां मातृस्वरुपिणीम ॥ ७ ॥

Śruṇudhvaṃ Munayaḥ Sarve Śraddhayā Parayā Mudā I
Vadāmi Bhavarogaghnīṃ Gītāṃ Mātṛsvarupiṇīma II 7 II

सूतजी ने कहा—हे शौनकादि ऋषियों जो गुरु गीता मैं आपको सुना रहा हूँ उसको आप अत्यंत श्रद्धा और प्रसन्नता पूर्वक सुनिये संसार रुपी रोग का नाश करने वाली माता के समान ध्यान रखने वाली गुरुगीता है।

Sage Sūta Ji says, Dear Sages Śaunakādī, Guru Gītā, which I am about to narrate it to you, please listen to it joyfully with much reverence. This Guru Gītā is like a mother who takes care (protects) and annihilates sickness, which exists in the form of this material world.

पुरा कैलावसशिखरे सिद्धगन्धर्वसेविते ।
तज्ञ तत्र कल्पलतापुष्पमन्दिरेऽत्यन्तसुन्दर ।। ८ ।।
व्याघ्राजिने समासीनं शुकादिमुनिवन्दितम् ।
बोधयन्न परं तत्वं मध्येमुनिगण क्वचित ।। ९ ।।
प्रणम्रवदना शश्वन्नमस्कुवन्तमादरात ।
दृष्टवा विस्मयमापन्ना पार्वती परिपच्छात ।।१० ।।

Purā Kailāvasaśikhare Siddhagandharvasevite I
Tajña Tatra Kalpalatāpuṣpamandire'tyantasundara II 8 II
Vyāghrājine Samāsīnaṃ Śukādimunivanditam I
Bodhayatna Paraṃ Tatvaṃ Madhyemunigaṇa Kvacita II 9 II
Praṇamravadanā Śaśvannamaskuvantamādarāta I
Dṛṣṭavā Vismayamāpannā Pārvatī Paripacchāta II 10 II

पूर्व काल में सिद्ध और गन्धर्वों का निवास स्थान कैलाश पर्वत के शिखर पर था, वहाँ कल्पवृक्ष के फूलों से बने

हुए अत्यन्त सुन्दर मंदिर में बैठे हुए शुकादि ऋषियों के बीच में, व्याघ्रचर्म पर बैठे हुए, ऋषियों के द्वारा बार-बार वन्दन किये जाने वाले परम तत्व का बोध देते हुए भगवान शंकर को, बार-बार नमस्कार करते देखकर अतिशय नम्र मुखवाली पार्वती ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

During ancient times, various siddha and gandharva (enlightened sages, angels, and celestial beings) lived at mount Kailāśa, the abode of Lord Śiva. On mount Kailāśa, there was a beautiful temple built with the flowers of the Kalpavṛkṣa tree (Sanskrit: the tree that fulfills wishes). In that temple, Lord Śiva sitting on his tiger-skinned seat was imparting Self-knowledge to many sages, including the Sage Śukādi, after their many humble requests. However, Goddess Pārvatī (consort of Lord Śiva) was astonished to see that Lord Śiva himself was bowing in reverence repeatedly. Seeing this gesture of Lord Śiva, Goddess Pārvatī asks Lord Śiva with much humility and great inquisitiveness:

पार्वत्युवाच ।

Pārvatyuvāca I

Goddess Pārvatī says…

ॐ नमो देव देवेश परात्पर जगद्गुरो ।
त्वां नमस्कुर्वते भक्त्या सुरासुरनराः सदा ।। ११ ।।

Oṃ Namo Deva Deveśa Parātpara Jagadguro I
Tvāṃ Namaskurvate Bhaktyā Surāsuranarā: Sadā II 11 II

पार्वती ने कहा—हे ओंकार रूप ब्रह्मा, विष्णु, महेश, देवों के देव महादेव, श्रेष्ठ जगद् गुरु आपको प्रणाम है। देवता, दानव तथा मनुष्य सब आपको सदैव भक्ति भाव पूर्वक प्रणाम करते हैं।

Goddess Pārvatī says, O' Oṃkāra (Lord Śiva is being addressed as manifestation of Oṃ), O' Esteemed Brahma, Viṣṇu, and Mahesh (The Trinity), O' Enlightened Jagad Guru (Sanskrit: Jagad means entire creation, meaning Guru of the entire universe), I bow to you. All demigods (celestial beings and angels), demons, and humans always bow to you with utter devotion…

विधिविष्णुमहेन्द्राद्यैर्वन्द्यः खलु सदा भवान् ।
नमस्करोषि कस्मै त्वं नमस्काराश्रयः किल ।। १२ ।।

Vidhiviṣṇumahendrādyairvandya: Khalu Sadā Bhavān I
Namaskaroṣi Kasmai Tvaṃ Namaskārāśraya: Kila II 12 II

आप ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रादि देवताओं से सदा पूज्य हैं। इतने महान होने पर आप किसका आश्रय लेते हैं? आप किसको नमस्कार करते हैं?

Devi Pārvatī continues asking Lord Śiva—Brahma (the God of creation), Viṣṇu (the God of preservation), the demigods, and the King of demigods, the Indra, all of them forever worship you. You are the Lord of the Lords and higher than the highest, still, in whom do you take refuge? To whom do you bow?

भगवन् सर्वधर्मज्ञ व्रतानां व्रतनायकम् ।
ब्रूहि मे कृपया शम्भो गुरुमाहात्म्यमुत्तमम् ।। १३ ।।

Bhagavan Sarvadharmajña Vratānāṃ Vratanāyakam I
Brūhi Me Kṛpayā Śambho Gurumāhātmyamuktamam II 13 II

हे भगवान् आप सभी धर्मों के ज्ञाता हैं। हे शंभो! जो व्रत सब व्रतों में श्रेष्ठ है, ऐसे उत्तम गुरु-माहात्म्य सुनने की मेरी इच्छा है। कृपा करके मुझे सुनाएं।

O' Lord, you are the knower of all Dharma (Sanskrit: right actions, eternal and universal laws and duties as written in the Vedas). It is my wish to listen to Guru Gītā, which is the highest category of fasting (austerity, penance). Please bless me by narrating the supreme Guru Gītā.

इति संप्रार्थितः शश्वन्महादेवो महेश्वरः ।

आनंदभरितः स्वान्ते पार्वतीमिदमब्रवीत् ।। १४ ।।

Iti Saṃprārthitaḥ Śaśvanmahādevo Maheśvaraḥ I
Ānaṃdabharitaḥ Svānte Pārvatīmidamabravīt II 14 II

पार्वती देवी द्वारा इस प्रकार बार-बार प्रार्थना किए जाने पर भगवान शंकर, अन्तःकरण से प्रसन्न होते हुए पार्वती जी से इस प्रकार बोले ।

Seeing Goddess Pārvatī requesting and praying to Lord Śiva many times, with deep reverence, Lord Śiva became internally happy and said to Pārvatī:

श्री महादेव उवाच ।

Śrī Mahādeva Uvāca I

Lord Śiva replies…

न वक्तव्यमिदं देवी रहस्यातिरहस्यकम् ।
न कस्यापि पुरा प्रोक्तं त्वद्भक्त्यर्थं वदामि तत् ।। १५ ।।

Na Vaktavyamidaṃ Devī Rahasyātirahasyakam I
Na Kasyāpi Purā Proktaṃ Tvadbhaktyartha Vadāmi Tat II 15 II

श्री महादेव जी ने पार्वती जी से कहा, हे देवी यह तत्व रहस्यों का भी रहस्य है। इसलिए कहना उचित नहीं है और पहले किसी से भी नहीं कहा परन्तु मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूँ इसलिए वह रहस्य कहता हूँ।

Lord Śiva replies to Goddess Pārvatī, O' Devi, this knowledge (about Guru) is secret of all secrets. Neither it is right to speak it aloud, nor I have ever revealed it to

anyone; however, I am pleased with your devotion; therefore, I will tell you this secret.

मम रूपासि देवि त्वमतस्क्त्कथयामि ते ।
लोकोपकरकः प्रश्नो न केमापि कृतः पूरा ।। १६ ।।

Mama Rūpāsi Devi Tvamataskatkathayāmi Te I
Lokopakaraka: Praśno Na Kemāpi Kṛta: Pūrā II 16 II

हे देवी! तुम मेरा ही स्वरुप हो, तुम्हारा यह प्रश्न लोक कल्याणकारक है। ऐसा प्रश्न पहले कभी किसी ने नहीं किया इसलिए यह रहस्य तुमको कहता हूँ।

O' Devi, you my own form. The question you have asked me is for the well-being of the entire world. Until today, no one has asked me this question. Therefore, now, I will tell you this secret.

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ।। १७ ।।

Yasya Deve Parā Bhaktiryathā Deve Tathā Gurau I
Tasyaite Kathitā Hyarthā: Prakāśante Mahātmana: II 17 II

जिस प्रकार मनुष्य की परमात्मा में उत्तम भक्ति होती है, जिसकी भक्ति सद्गुरु में होती है, ऐसे महात्माओं को ही यहाँ कही हुई बात समझ में आएगी।

Only those human beings who have great devotion towards God and equally towards their Guru, only those

great souls will be able to understand (assimilate the meaning) my words.

यो गुरुः स शिवः प्रोक्तोयय: शिवः स गुरुस्मृतः ।
विकल्पं यस्तु कुर्वीत स नरो गुरुतल्पगः ।। १८ ।।

Yo Guru: Sa Śiva: Proktoyaya: Śiva: Sa Gurusmṛta: I
Vikalpaṃ Yastu Kurvīta Sa Naro Gurutalpaga: II 18 II

जो गुरु है वही शिव है, जो शिव है वही गुरु है। दोनों में जो अंतर मानता है, वह गुरुपत्नी गमन करने वाले के समान है।

Guru is Śiva, and Śiva is Guru. The one who sees a difference between Guru and Śiva does sin equivalent to eloping with wife of one's teacher.

वेदशास्त्रपुराणानि चेतिहासदिकानि च ।
मंत्रयंत्रादिविद्यानामं मोहनोच्चाटनादिकम् ।। १९ ।।
शैवशाक्तागमादीनि ह्यन्ये च बहवो मताः ।
अपभ्रंशाः समस्तांना जीवानां भ्रान्तचेतसाम् ।। २० ।।
जपस्तपोव्रतं तीर्थं यज्ञो दानं तथैव च ।
गुरुतत्वमविज्ञाय सर्व व्यर्थं भवेत्प्रिये ।। २१ ।।

Vedaśāstrapurāṇāni Cetihāsadikāni Ca I
Maṃtrayaṃtrādividyānāmaṃ Mohanoccāṭanādikam II 19 II
Śaivaśāktāgamādīni Hyanye Ca Bahavo Matā: I
Apabhraṃśā: Samastāṃnā Jīvānāṃ Bhrāntacetasām II 20 II
Japastapovrataṃ Tīrtha Yajño Dānaṃ Tathaiva Ca I
Gurutatvamavijñāya Sarva Vyarthaṃ Bhavetpriye II 21 II

हे प्रिये—वेद, शास्त्र पुराण, इतिहास, आदि, मंत्र, तंत्र, यज्ञ, सम्मोहन, वशीकरण, उच्चाटनादि, विद्या, शैव, शाक्त, आगम और सभी मतमतांतर, ये सब बातें बिना गुरुतत्व को जाने बिना जीवों का मार्ग भ्रांत करने वाले हैं। अतः इन सभी चीजों को सद्गुरु के बिना नहीं जाना जा सकता है। बिना सद्गुरु के जप, व्रत, तीर्थ, यज्ञादि, दान, अनुष्ठान आदि ये सब व्यर्थ हो जाते हैं।

O' Dear Devi, the study and practice of—Śāstra, Purāṇa (ancient sacred texts before the Vedas and Upanishads), Itihāsa (ancient sacred historical literature and stories), etc.; Mantra, Taṃtra, Yajña, Sammohana, Vaśīkaraṇa, Uccāṭana, etc. (names of different types of occult practices and mystical studies); Self-knowledge, Śaiva, Śākta, Āgama and all other great paths—is useless without the understanding Guru (the true Divine nature of Guru, Guru tattva). Studying or practicing these sacred writings and rituals would only confuse a person (seeker). Without an Enlightened Guru, it is not possible to internalize or understand these verses and rituals. Without a Guru, japa (mantra chanting), fasting, visiting temples, and sacred places of worship, performing yajña (fire sacrifice), charity, rituals, etc. are all meaningless and futile.

गुरुबुद्ध्यात्मनो नान्यत् सत्यं सत्यं वरानने ।

तल्लाभार्थं प्रयत्नस्तु कर्तव्यश्च मनीषिभिः ।। २२ ।।

Gurubuddhyātmano Nānyat Satyaṃ Satyaṃ Varānane I
Tallābhārtha Prayatnastu Kartavyaśca Manīṣibhi: II 22 II

हे पार्वती देवी—आत्मा में सद्गुरु के द्वारा दी गयी बुद्धि के सिवा अन्य कुछ भी सत्य नहीं है। इसलिए इस तत्व रहस्य को जानने के लिए और आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए बुद्धिमानों को प्रयत्न करना चाहिए।

O' Pārvatī Devi, inside Ātmā (a person's Consciousness; Self), nothing is true except for the wisdom given by an Enlightened Guru. Therefore, those wise people should make efforts to understand the secrets of Ātmā to attain Self-knowledge.

गुढाविद्या जगन्माया देहश्चायज्ञानसम्भवः ।
विज्ञानं यत्प्रसादेन गुरुशब्देन कथ्यते ।। २३ ।।

Guḍhāvidyā Jaganmāyā Dehaścāyajñānasambhava: I
Vijñānaṃ Yatprasādena Guruśabdena Kathyate II 23 II

यह संसार गूढ अविद्यात्मक माया रूप है और यह शरीर अज्ञान से उत्पन्न हुआ है। इनका विश्लेषणात्मक ज्ञान जिनकी कृपा से होता है या उस ज्ञान को जानने वाले को ही सद्गुरु देव कहते हैं।

This world is a secretive form of Māyā1, and the human body is also born with innate ignorance (human beings are born under the veil of ignorance of their true nature or Self). The one by who’s blessings an individual can analyze this illusionary world, or the one who has the knowledge of the Self (who is completely established in one’s conscious Self) is known as an Enlightened SadhGuru Dev.

देही ब्रह्म भ्वेद्यस्मात् त्वत्कृपार्थवदामि तत् ।
सर्वपापविशुद्धात्मा श्रीगुरोः पादसेवनात् ।। २४ ।।

Dehī Brahma Bhvedyasmāt Tvatkṛpārthavadāmi Tat I
Sarvapāpaviśuddhātmā Śrīguro: Pādasevanāt II 24 II

जिस सद्गुरु देव के चरणों की सेवा करने से मनुष्य के सभी पाप मिट जाते हैं और वह विशुद्धात्मा होकर ब्रह्मरूप हो जाता है। अतः वह अंत समय में मोक्ष को प्राप्त होता है।

All sins of a person are destroyed by serving at his SadhGuru’s feet and those purified souls become one with the Divine. At the end of life, that person reaches mokṣa (Sanskrit: complete liberation from the endless cycle of

---

[1] Māyā is the Goddess of the illusionary universe who manifests herself as the known physical world. This world is a secretive, illusionary Māyā, and this body has arisen from ignorance. The discriminatory analytical intellect (that discriminates between real and unreal) with which this world can be correctly interpreted, is obtained by kind blessings of Guru. Guru is referred to as ‘SadhGuru Dev,’ Sadh means truth, Guru means teacher, and Dev means a Divine being.

births and deaths, from the illusionary physical world, absolute peace and happiness).

शोषणंपापपंकस्य दीपनं ज्ञानतेजसः ।
गुरोः पादोदकं सम्यक् संसारार्णवतारकम् ।। २५ ।।

Śoṣaṇampāpapaṃkasya Dīpanaṃ Jñānatejasa: I
Guro: Pādodakaṃ Samyak Saṃsārārṇavatārakam II 25 II

श्री गुरुदेव के चरणामृत से पाप रुपी कीचड़ हट जाता है। जिस प्रकार कमल कीचड़ में उगता है परन्तु कमल का पुष्प उस कीचड़ से ऊपर उठने पर ही खिलता है। उसी प्रकार गुरुदेव का चरणामृत ज्ञानतेज का सम्यक उद्दीपक है। इस संसार रुपी सागर से तारने में सद्गुरु ही समर्थ हैं।

The nectar that flows from Guru's Lotus-feet removes the sins (dwelling in mind) like dirt or sludge. Like a lotus flower that grows in dirty water, but blooms into a beautiful flower when it rises above the water; likewise, the ambrosia from the Lotus-feet of Guru lights the fire of knowledge (in student's heart). The Guru is the only one who can liberate a person from this ocean-like world (saṃsāra, the world with an endless cycle of pains, and pleasures, rebirths, and deaths).

अज्ञानमूलहरणं जन्मकर्मनिवाकरम् ।
ज्ञानवैराग्यसिदध्यर्थं गुरुपादोदकं पिबत् ।। २६ ।।

Ajñānamūlaharaṇaṃ Janmakarmanivākaram I
Jñānavairāgyasidadhyartha Gurupādodakaṃ Pibat II 26 II

अज्ञान को जड़ से उखाड़ने वाले, अनेकानेक जन्मों के कर्मों तथा कुकर्मों का निवारण करने वाले, ज्ञान और वैराग्य को सिद्ध करने वाले ऐसे सद्गुरु देव के चरणामृत का पान करना चाहिए।

SadhGuru, who uproots ignorance in us, frees us from the bondage of karmas and dispels our sins from this and previous lives, who actualizes knowledge and renunciation in us; one should drink the nectar flowing from that Guru's Lotus-feet.

स्वदेशिकस्यैव च नामकीर्तनम्
भवेदनन्तस्य शिवस्य कीर्तनम् ।
स्वदेशिकस्यैव च नामचिन्तनम्
भवेदनन्तस्य शिवस्य चिन्तनम् ।। २७ ।।

Svadeśikasyaiva Ca Nāmakīrtanam
Bhavedanantasya Śivasya Kīrtanam I
Svadeśikasyaiva Ca Nāmacintanam
Bhavedanantasya Śivasya Cintanam II 27 II

जो सद्गुरु के नाम का कीर्तन या स्मरण करता है वह अनंत स्वरुप भगवान् शिव का ही कीर्तन करता है। जो सद्गुरु के नाम का चिन्तन करता है वह अनन्त स्वरुप भगवान् शिव का ही चिंतन करता है।

The one who repeats (says it aloud or in mind) the SadhGuru's nāma (Guru-mantra japa or repeats the word GuRu, Guru nāma), recites the name of countless forms of

Supreme Lord Śiva. The one who thinks and meditates on SadhGuru thinks about several forms of Supreme Lord Śiva.

काशीक्षेत्रं निवासश्च जान्हवी चरणोदकम् ।
गुरुर्विश्वेश्वरः साक्षात् तारकं ब्रह्मनिश्चयः ।। २८ ।।

Kāśīkṣetraṃ Nivāsaśca Jānhavī Caraṇodakam I
Gururviśveśvara: Sākṣāt Tārakaṃ Brahmaniścaya: II 28 II

जिस प्रकार से भगवान् शंकर का निवास स्थान काशी में है, उसी प्रकार सद्गुरु देव का निवास स्थान भी काशी क्षेत्र में है। सद्गुरु देव का चरणामृत गंगाजी के समान है। जैसे भगवान् विश्वनाथ अपने भक्त को इस संसार के माया से मुक्त कर देते हैं, उसी तरह सद्गुरु देव भी निश्चित ही साक्षात् तारने वाले ब्रह्म हैं।

Like the place where Lord Śiva lives is referred to as Kāśī; similarly, SadhGuru's abode is also called as Kāśī. The nectar that flows from the Lotus-feet of SadhGuru Dev is like the river Gangā (that flows through Kāśī). Like Lord Viśvanātha (Lord Śiva), who liberates his devotees from this illusionary world, likewise, SadhGuru Dev is also the manifestation of the Supreme Lord who frees his devotees from the bondage of illusionary Māyā of this world.

गुरुसेवा गया प्रोक्ता देहः स्याद् सक्षयो वटः ।

तत्पादं विष्णुपादं स्यात् तत्र दत्तमनन्तकम् ।। २९ ।।

Gurusevā Gayā Proktā Deha: Syād Sakṣayo Vaṭaḥ I
Tatpādaṃ Viṣṇupādaṃ Syāt Tatra Dattamanantakam II 29 II

जो मनुष्य सद्गुरु देव की सेवा करता है। गुरुदेव की सेवा ही तीर्थराज गया के समान है। गुरुदेव का शरीर अक्षय वटवृक्ष है। गुरुदेव के श्रीचरण भगवान् श्री हरि विष्णु के चरण हैं। वहां लगाया हुआ मन तदाकार हो जाता है।

The one who serves Guru, for him—serving Guru is like the supreme pilgrimage Gayā. Guru's body is like an everlasting banyan tree. Guru's revered feet are same as the feet of Śrī Hari Lord Viṣṇu. The mind engrossed in Guru's feet eventually becomes one with the Divine.

गुरुवक्त्रे स्थितं ब्रह्म प्राप्यते तत्प्रसादतः ।
गुरोर्ध्यानं सदा कुर्यात् पुरुषं स्वैरिणी यथा ।। ३० ।।

Guruvaktre Sthitaṃ Brahma Prāpyate Tatprasādataḥ I
Gurordhyānaṃ Sadā Kuryāt Puruṣaṃ Svairiṇī Yathā II 30 II

श्री गुरूदेव के मुखारविन्द से निकले हुए वचनामृत में ही ब्रह्म स्थित है। गुरु की कृपा से ब्रह्म को भी प्राप्त किया जा सकता है। जिस प्रकार से सौभाग्यशालिनी स्त्री अपने प्रेमी पुरुष का चिंतन करती है, उसी प्रकार सदैव सद्गुरु देव का ध्यान करना चाहिए।

Brahma (Sanskrit: Supreme unmanifested God) resides in the nectar-like words spoken from the lotus-mouth of Śrī Guru Dev. With Guru's grace, one can attain

even Brahma. Just like the focus of a very fortunate woman who always remains engrossed in the thoughts of her beloved, likewise, one may constantly meditate on the Guru.

स्वाश्रमं च स्वजातिं च स्वकीर्ती पुष्टिवर्धनम् ।
एतत्सर्व परित्यज्य गुरुमेव समाश्रयेत्क ।। ३१ ।।

Svāśramaṃ Ca Svajātiṃ Ca Svakīrtī Puṣṭivardhanam I
Etatsarva Parityajya Gurumeva Samāśrayetka II 31 II

अपने ब्रह्मचर्याश्रमादि में जाति, कीर्ति, पदप्रतिष्ठा पालन-पोषण से सब बातें छोड़कर सद्गुरुदेव का ही सम्यक आश्रय लेना चाहिए।

In one's present life-stage (existing āśrama), an individual should discard all discussions about caste, fame, social position (prestige, status), and sustenance and should solely depend on one's SadhGuru (for his future).

गुरुवक्त्रे स्थिता विद्या गुरुभक्त्या च लभ्यते ।
त्रैलोक्ये स्फुटवक्तारो देवर्षिपितृमानवाः ।। ३२ ।।

Guruvaktre Sthitā Vidyā Gurubhaktyā Ca Labhyate I
Trailokye Sphuṭavaktāro Devarṣipitṛmānavā: II 32 II

जैसे विद्या गुरुदेव के मुख में रहती है और वह विद्या गुरुदेव की भक्ति से ही प्राप्त की जा सकती है। यह बात तीनों लोकों में देव, ऋषि, पितृ और मानवों द्वारा स्पष्ट रूप से कही गयी है।

Self-knowledge resides on the tongue of Guru, and this knowledge can only be obtained by absolute faith in one's Guru. The beings in all the three worlds— devatā (demigods), ṛṣi (rishis or sages), ancestors, and humans have been told about this, very clearly.

गुकारश्चान्धकारो हि रुकारस्तेज उच्यते ।
अज्ञानग्रासकं ब्रह्म गुरुरेव न संशयः ।। ३३ ।।

Gukāraścāndhakāro Hi Rukārasteja Ucyate I
Ajñānagrāsakaṃ Brahma Gurureva Na Saṃśaya: II 33 II

गु शब्द का अर्थ है, अन्धकार (अज्ञान) और रु शब्द का अर्थ है प्रकाश या ज्ञान, अज्ञान रुपी अन्धकार को नष्ट करने वाला जो ब्रह्म रूप प्रकाश है, वही सद्गुरु देव है। इसमें कोई संशय नहीं है।

In the word GuRu, Gu means darkness or ignorance, and Ru means light or knowledge. There is no doubt about the truth that Guru is the light of knowledge, who destroys the darkness of ignorance.

गुकारशचान्धकारस्तु रुकास्तन्निरोधकृत ।
अंधकारविनाशित्वात् गुरुरित्यभिधायते ।। ३४ ।।

Gukāraśacāndhakārastu Rukāstannirodhakṛta I
Aṃdhakāravināśitvāt Gururityabhidhāyate II 34 II

गु शब्द का अर्थ जिस प्रकार से अन्धकार है, उसको दूर करने वाले रु शब्द का अर्थ प्रकाश है। अतः अज्ञान रुपी अन्धकार को नष्ट करने वाले को ही सदगुरुदेव कहते हैं।

Like the word, Gu means darkness, likewise, the word Ru means the light that dispels that darkness. So, SadhGuru is the one who destroys the darkness of ignorance.

गुकारश्च गुणातीतो रूपातीतो रुकारकः ।
गुणरूपविहीनत्वात् गुरुरित्यभिधीयते ।। ३५ ।।

Gukāraśca Guṇātīto Rūpātīto Rukāraka: I
Guṇarūpavihīnatvāt Gururityabhidhīyate II 35 II

गु कार से गुणों का पता चलता है क्योंकि गु कार ही गुणातीत है। रू कार से ही रूप का पता चलता है। क्योंकि रु कार ही रूपातीत है। गुण और रूप से परे होने के कारण ही गुरु कहलाते हैं।

Gu represents guṇa, inherent characteristics. It is only through Gu that we perceive all physical characteristics, thus, Gu is beyond all qualities. Likewise, Ru that represents rūpa, shape and form, is also beyond all shapes and forms. (Ru represents rūpa, form, that makes possible our perception of all forms and shapes). Therefore, Guru is the one who is beyond all qualities and forms.

गुकारः प्रथमो वर्णो मायादि गुणभासकः ।
रुकोरोऽस्ति पर ब्रह्म मायाभ्रान्तिविमोचकम् ।। ३६ ।।

Gukāra: Prathamo Varṇo Māyādi Guṇabhāsaka: I
Rukoro'sti Para Brahma Māyābhrāntivimocakam II 36 II

गुरु शब्द का प्रथम अक्षर गु माया आदि गुणों का प्रकाशक है, और दूसरा अक्षर रु माया रुपी भ्रम को दूर करने वाला एवं मुक्ति का मार्ग दिखाने वाले परम ब्रह्म सद्गुरु देव ही हैं।

In the word GuRu, the first word Gu illumines the inherent qualities of this world (Māyā), and the second word Ru dispels the confusion (in the mind) in this creation. The Supreme Brahma Guru is the one who shows the path of liberation from this world.

आसनं शयनं वस्त्रं वाहनं भूषणादिकम् ।
साधकेन प्रदातव्यं गुरुसंतोष कारणम् ।। ३७ ।।

Āsanaṃ Śayanaṃ Vastraṃ Vāhanaṃ Bhūṣaṇādikam I
Sādhakena Pradātavyaṃ Gurusaṃtoṣa Kāraṇam II 37 II

गुरु भक्त शिष्य को चाहिए कि सद्गुरु देव की प्रसन्नता के लिए आसन, बिस्तर, वस्त्र, आभूषण, वाहन, आदि श्री सद्गुरु देव को समर्पित करें।

For the satisfaction of SadhGuru, a devoted disciple should make arrangements to present an āsana (a base for sitting), bed, clothes, ornaments, and transportation to his Guru.

शरीरमिन्द्रय प्राणमर्थव्सजनबान्धवान् ।
आत्मादारादिकं सर्वं सद्गुरुभ्यो निवेदयेत ।। ३८ ।।

Śarīramindraya Prāṇamarthavsajanabāndhavān I
Ātmādārādikaṃ Sarvaṃ Sadgurubhyo Nivedayeta II 38 II

अपना शरीर, इन्द्रियां, प्राण, धन, आदि सब कुछ श्री गुरुदेव को अर्पण करना चाहिए, अपने कुटुम्बीजनों, नातेरिश्तेदारों को सद्गुरु देव के बताये मार्ग पर चलने के लिए निवेदन करना चाहिए।

The student should offer his body, senses, life, wealth, etc. to his SadhGuru. He should also help and guide family members and relatives to walk on the path shown by his SadhGuru.

सर्वश्रुतिशिरोरत्नविराजितपदांबुजम् ।
वेदान्तार्थप्रवक्तारं तस्मात्संपूजयेद् गुरुम् ।। ३९ ।।

Sarvaśrutiśiroratnavirājitapadāṃbujam I
Vedāntārthapravaktāraṃ Tasmātsaṃpūjayed Gurum II 39 II

सद्गुरु देव वेदांत के अर्थों के प्रवक्ता हैं। सर्वश्रेष्ठ रत्नों से सुशोभित चरणकमल वाले उच्च्य सिंहासन पर विराजमान करके सद्गुरु देव की पूजा करनी चाहिए। जिस प्रकार से भगवान् श्रीकृष्ण ने सुदामाजी को अपने स्वर्णमण्डित सिंहासन पर बैठाकर धूप, दीप, नैवेद्य और ताम्बूल से अनेक प्रकार से उनकी पूजा की।

SadhGuru is the elaborator of the meaning of Vedas. SadhGuru should be worshipped after sitting him on the highest throne studded with most precious jewels, just as Lord Krishna worshipped His dear friend Sudhāmā while offering Him incense, food, betel leaves after sitting him on a golden throne.

यस्य स्मरणमात्रेण ज्ञानमुत्पद्यते स्वयम् ।
सः एव सर्वसम्पत्तिः तस्मात्संपूजयेद्गुरुम् ।। ४० ।।

Yasya Smaraṇamātreṇa Jñānamutpadyate Svayam I
Sa: Eva Sarvasampatti: Tasmātsaṃpūjayedgurum II 40 II

जिनके स्मरण मात्र से ज्ञान अपने आप ही प्रकट होने लगता है ऐसे सद् गुरुदेव ही सभी सम्पत्ति के रूप हैं। अतः गुरुदेव की पूजा करनी चाहिए।

Self-knowledge starts to emerge by itself by a mere thought of (by meditating upon) SadhGuru. Thus, SadhGuru is a form of all wealth (of Self-knowledge). Therefore, one should meditate on SadhGuru.

संसारवृक्षमारूढाः पतन्ति नरकार्णवे ।
यस्तानुद्धरते सर्वान् तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।। ४१ ।।

Saṃsāravṛkṣamārūḍhā: Patanti Narakārṇave I
Yastānuddharate Sarvān Tasmai Śrīguruve Nama: II 41 II

संसार रुपी वृक्ष पर चढे हुए लोग नरक रूपी सागर में गिरते हैं। परन्तु सद्गुरु देव सबका उद्धार करने वाले हैं, ऐसे श्रीगुरु को नमस्कार है।

People living on the tree of world, fall in the ocean of hell. But SadhGuru Dev provides salvation to everyone. My salutations to that Śrī Guru.

एक एव परो बन्धुर्विषमे समुपस्थिते ।
गुरुः सकलधर्मात्मा तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।। ४२ ।।

Eka Eva Paro Bandhurviṣame Samupasthite I
Guru: Sakaladharmātmā Tasmai Śrīguruve Nama: II 42 II

जब मनुष्य के सामने कोई विकट परिस्थिति उपस्थित होती है, तब गुरु ही एक परम सखा या परम मित्र है। क्योंकि वे सभी धर्मो के आत्मस्वरूप हैं। ऐसे श्री गुरुदेव को नमस्कार है।

When an individual encounter an undesirable situation, in that moment Guru is the only Supreme friend who may help him in that condition. This is because Guru is the core of all humans as Dharma (Sanskrit: eternal law that protects). My salutations to that Śrī Guru Dev.

भवारण्यप्रविष्टस्य दिङ मोहभ्रान्तचेतसः ।
येन सन्दर्शितः पन्थाः तस्मै श्री गुरुवे नमः ।। ४३ ।।

Bhavāraṇyapraviṣṭasya Diṅa Mohabhrāntacetasa: I
Yena Sandarśita: Panthā: Tasmai Śrī Guruve Nama: II 43 II

संसार रुपी शिखर में प्रवेश करने के बाद दिग्विमूढ़ की स्थिति में जब कोई मार्ग नहीं दिखाई देता एवं मन भ्रांत में फँस जाता है, उस समय जिन्होंने मार्ग दिखाया, ऐसे श्री सद्गुरु देव को नमस्कार है।

After entering in the forest of saṃsāra (Sanskrit: this world is the forest of pains and pleasures) when an ignorant person with his mind trapped in illusions, saw no way out of his misery, and became utterly confused in finding his way out, at that moment, the Guru is the one who guided him to the right path. I bow to that Śrī SadhGuru Dev.

तापत्रयाग्निप्तानां अशान्तप्राणीनां भुवि ।
गुरुरेव परा गंगा तस्मै श्री गुरुवे नमः ।। ४४ ।।

Tāpatrayāgniptānāṃ Aśāntaprāṇīnāṃ Bhuvi I
Gurureva Parā Gaṃgā Tasmai Śrī Guruve Nama: II 44 II

इस पृथ्वी पर त्रिविध ताप (दैहिक, दैविक व भौतिक) रुपी अग्नि से जलने के कारण अशांत हुए प्राणियों के लिए गुरुदेव ही एक मात्र उत्तम गंगा जी हैं। जैसे कि गंगा जी को उत्तम तीर्थ माना जाता है, ऐसे ही सद्गुरु देव को नमस्कार है।

In this world, there are three kinds of miseries—ādhidaihika or daihika (bodily suffering, both mental and physical); ādhidaivika or daivika (pains caused by celestial beings, demigods, or nature); and ādhibhautika or bhautika (sorrow and pains caused by others, fellow

beings). People perceive all these three kinds of sufferings as tāpa (Sanskrit: akin to the perception of heat emanating from fire). They continuously live in anxieties caused because of the sensation of heat (tāpa) coming from three kinds of sufferings in life. However, Guru is the only one who acts like the waters of the holy river Gangā, cooling down the heat. Like the sacred river Gangā that people consider as a supreme pilgrimage; likewise, SadhGuru is also like Gangā. My salutations to that SadhGuru Dev.

सप्तसागरपर्यन्तं तीर्थस्नानफलं तु यत् ।
गुरुपादपयोबिन्दोः सहस्त्रांशेन तत्फलम् ।। ४५ ।।

Saptasāgaraparyantaṃ Tīrthasnānaphalaṃ Tu Yat I
Gurupādapayobindo: Sahastrāṃśena Tatphalam II 45 II

सात समुद्र पर्यन्त और सात प्रकार के तीर्थों में स्नान करने से जितना फल प्राप्त होता है, उसका हजार गुना फल श्री गुरुदेव के चरणामृत की एक बूँद से प्राप्त होता है।

An individual attains thousand times more fruits by drinking a drop of caraṇāmṛta (Sanskrit: nectar or ambrosia that flows from the Lotus-feet of Guru) than the fruits gained by bathing in seven types of oceans and seven kinds of pilgrimages.

शिवे रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन ।
लब्ध्वा कुलगुरुं सम्यग्गुरुमेव समाश्रयेत् ।। ४६ ।।

Śive Ruṣṭe Gurustrātā Gurau Ruṣṭe Na Kaścana I
Labdhvā Kulagurum̩ Samyaggurumeva Samāśrayet II 46 II

यदि भगवान शंकर अप्रसन्न हो जायें तो सद्गुरु देव बचाने वाले हैं। परन्तु सद्गुरु देव रुष्ट हो जायें तो बचाने वाला कोई नहीं है। अतः श्री गुरुदेव को प्रसन्न करके सदैव उनकी शरण में रहना चाहिए।

If Lord Śaṃkara becomes angry, then SadhGuru Dev may protect a person. However, if SadhGuru Dev goes angry then no one can save that person. Therefore, one should always strive to keep Śrī Guru Dev happy and continually remain under His refuge.

गुकारं च गुणातीतं रुकारं रूपवर्जितम् ।
गुणातीतरूपं च यो दद्यात् स गुरुः स्मृतः ।। ४७ ।।

Gukāraṃ Ca Guṇātītaṃ Rukāraṃ Rūpavarjitam I
Guṇātītarūpaṃ Ca Yo Dadyāt Sa Guru: Smṛta: II 47 II

गुरु शब्द का गु अक्षर गुणातीत का बोध करता है। रु अक्षर रूप रहित स्थिति का बोध करता है। ये दोनों स्थितियाँ गुण और रूप जो देते है, उनको गुरु कहते हैं।

In the word GuRu, the letter Gu represents a state without any intrinsic characteristics or qualities, and the letter Ru points to a state without any shape or form. These two states from which arises all material qualities and forms are referred to as Guru. [All attributes, name, and forms of this perceived objective material world originate from GuRu, who Himself has no quality or form].

अत्रिनेत्रः शिवः साक्षात् द्विबाहुश्च हरिः स्मृतः ।
योऽचतुर्वदनो ब्रह्मा श्रीगुरुः कथितः प्रिये ।। ४८ ।।

Atrinetra: Śiva: Sākṣāt Dvibāhuśca Hari: Smṛta: I
Yo'caturvadano Brahmā Śrīguru: Kathita: Priye II 48 II

हे देवी, गुरु ही त्रिनेत्र रहित (दो आँखों वाले) साक्षात् स्वयं शिव ही हैं। दो हाथ वाले श्री हरि भगवान् विष्णु हैं और एक मुखवाले स्वयं ब्रह्मा जी हैं। इन्ही को गुरु कहते हैं।

O' Dear Devi, quite literally, Guru is the two-eyed embodiment of Lord Śiva (Śiva without three eyes), Guru is the two-handed form of Lord Viṣṇu, and Guru is none other than the one-faced incarnation of Lord Brahmā. He is the only one who is referred to as Guru.

देवकिन्नरगन्धर्वः पितृयक्षास्तु तुम्बुरुः ।
योऽचतुर्वदनो ब्रह्मा श्रीगुरुः कथितः प्रिये ।। ४९ ।।

Devakinnaragandharva: Pitṛyakṣāstu Tumburu: I
Yo'caturvadano Brahmā Śrīguru: Kathita: Priye II 49 II

देव, किन्नर, गन्धर्व, पितृ, यक्ष, ऋषि, तुम्बुरु (एक प्रकार की गन्धर्व जाति), और मुनि लोग गुरु सेवा की विधि नहीं जानते हैं।

O’ Dear Devi, demigods, celestial beings, ancestors, yakṣa (spirits), ṛṣi (sages), and tumburu (a kind of angelic beings)—even they do not know the way to selflessly serve (sevā) their Guru.

तार्किकाश्छान्दसाश्चैव देवज्ञाः कर्मठाः प्रिये ।
लोकिकास्ते न जानन्ति गुरुतत्वं निराकुलम् ।। ५० ।।

Tārkikāśchāndasāścaiva Devajñā: Karmaṭhā: Priye I
Lokikāste Na Jānanti Gurutatvaṃ Nirākulam II 50 II

हे प्रिये तर्क करने वाले, वेद को जानने वाले, ज्योतिष को जानने वाले एवं कर्मकाण्ड को जानने वाले पंडित, विद्वानजन, तथा लौकिक जन निर्मल गुरु तत्व को नहीं जानते हैं।

O' Dear Devi, the logicians[2], people who have learned the Vedas, astrologers, pundits who perform the rituals, great minded scholars, and worldly people, do not know the subtlest most fundamental Guru's true nature (Guru tatva).

महाहंकारगर्वेण तपोविद्याबलेन च ।
भ्रमन्त्येतस्मिन् संसारे घटीयन्त्र तथा पुनः ।। ५१ ।।

Mahāhaṃkāragarveṇa Tapovidyābalena Ca I
Bhramantyetasmin Saṃsāre Ghaṭīyantra Tathā Puna: II 51 II

---

[2] The term logician requires expansion here. One can have faith in Guru and avoid logic and trying to analyze Guru. An individual may use buddhi, logic, intellectual capabilities, cognitive abilities, reason, and argument to analyze the world to draw relatively accurate conclusions. However, in the case of Guru, it is best to follow the Guru with faith without much reasoning or logic.

तप, विद्या, बल, गर्व, महाअहंकार के कारण जीवात्मा इस संसार (सागर) के महाजाल में बार-बार चक्र की तरह भटकता रहता है।

Because of the individuality (ego) emerging out of practicing penance (austerities and hard work), education (vidyā), power and prestige, self-esteem, and super-ego, a person continues wandering in this mysterious oceanic world (saṃsāra, a never-ending cyclic world of rebirths and deaths, pains and sufferings).

यज्ञिनोऽपि न मुक्ताः स्युः न मुक्ताः योगिनस्तथा ।
तापसा अपि नो मुक्ता गुरुतत्त्वात्पराङ्मुखाः ।। ५२ ।।

Yajñino'pi Na Muktā: Syu: Na Muktā: Yoginastathā I
Tāpasā Api No Muktā Gurutattvātparāṅamukhā: II 52 II

यदि कोई मनुष्य गुरुतत्व से मुख को मोड़ दे तो याज्ञिक मुक्ति नहीं पा सकता। बिना सद्गुरु देव की कृपा से योगी और तपस्वी दोनों में से कोई भी मुक्ति नहीं पा सकते।

If a student turns his face against Guru tatva (moves away from Guru and does not consider the value of Guru’s essential nature), then he cannot attain liberation (mukti) by performing yajña (fire sacrifice Vedic ritual). Without the grace of SadhGuru Dev, neither yogīs nor spiritual aspirants can achieve emancipation.

न मुक्तास्तु गन्धर्वाः पितृयक्षास्तु चारणाः ।

ऋषयः सिद्धदेवाद्या गुरुसेवापराङ्मुखाः ।। ५३ ।।

Na Muktāstu Gandharvā: Pitṛyakṣāstu Cāraṇā: I
Ṛṣaya: Siddhadevādyā Gurusevāparāṅamukhā: II 53 II

गुरु की सेवा से यदि गन्धर्व, पितृ, यक्ष, चारण, ऋषि, सिद्ध आदि भी बहिर मुख हो जायें तो वह भी मुक्त नहीं होगा।

Even the celestial beings (gandharva), ancestors, spirits (yakṣa), people who chant praises (cāraṇa), sages, or other perfected beings (siddha) disengage themselves from serving their Guru (sevā) and become outwardly, they can never attain liberation (mukti).

इति श्री स्कान्दोत्तरखडे उमामहेश्वर संवादे श्री गुरुगीतायां प्रथमोऽध्यायः संपूर्णाम

Iti Śrī Skāndottarakhaṃḍe Umāmaheśvara Saṃvāde Śrī Gurugītāyāṃ
Prathamo'dhyāya: Saṃpūrṇāma

इस प्रकार श्री स्कन्दोत्तरखंड में शिव पार्वती संवाद श्री गुरुगीता का प्रथम अध्याय सम्पूर्ण हुआ।

This marks the end of the first chapter of Guru Gītā, that presents a conversation between Lord Śiva and Goddess Pārvatī, written in Śrī Skandottarakhaṃḍa.

द्वितीयोऽध्याय:

Dvitīyo'dhyāya:

Chapter 2

ब्रह्मानन्द परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलचलं सर्वधीसाक्षिभूतम्
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ।। ५४ ।।

Brahmānanda Paramasukhadaṃ Kevalaṃ Jñānamūrtiṃ
Dvandvātītaṃ Gaganasadṛśaṃ Tatvamasyādilakṣyam I
Ekaṃ Nityaṃ Vimalacalaṃ Sarvadhīsākṣibhūtam
Bhāvātītaṃ Triguṇarahitaṃ Sadguruṃ Taṃ Namāmi II 54 II

जो ब्रह्मानंद स्वरुप हैं, परम सुख देने वाले हैं, जो केवल ज्ञान स्वरुप हैं, ज्ञान देने वाले हैं, सुख-दुःख शीत उष्ण आदि द्वंदों से रहित हैं, सद्गुरु देव गगन के समान सूक्ष्म और सर्वव्यापक हैं, तत्व, रहस्यों आदि महालक्ष्यों को पाना ही अपना लक्ष्य समझते हैं, एक हैं, नित्य हैं, मलरहित हैं, अचल हैं, सभी बुद्धियों का साक्षी हैं, भावना से परे हैं। सत्, रज, तमोगुण तीनों गुणों से रहित हैं, ऐसे श्री सद्गुरु देव को मैं नमस्कार करता हूँ।

Guru—who is supreme bliss (Brahmānaṃda), the giver of supreme pleasure (sukha), who exists as knowledge (jñāna svarūpaṃ), the giver of knowledge,

devoid of all pains and pleasures, who is away from the atrocities of cold and heat, who is subtle like space and omnipresent, and the subtlest element, mysterious, who only aims for the highest, and considers attaining only the highest, who is non-dual (one), constant (unchanging, with no activity), with no impurities, immovable (acala), and witness of everyone's intelligence, away from all emotions, who is without the three qualities (three guṇa: sātvika rājasika tāmasika)—my salutations to that Guru.

गुरुपदिष्टमार्गेण मनः शुद्धि तु कारयेत् ।
अनित्यं खण्डयेत्सर्वं यत्किंचिदात्मगोचरम् ।। ५५ ।।

Gurupadiṣṭamārgeṇa Mana: Śuddhi Tu Kārayet I
Anityaṃ Khaṇḍayetsarvaṃ Yatkiṃcidātmagocaram II 55 II

श्री गुरुदेव के द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर अपने मन की शुद्धि करनी चाहिए। जो कुछ भी अनित्य वस्तु अपनी इन्द्रियों के बस में हो जाए, उनका निराकरण करना चाहिए।

One may purify his intelligence (buddhi) by following the path shown by SadhGuru Dev. A spiritual aspirant may try to negate any temporary material (anitya, an ever-changing thing, includes relationships) thing that captivates his senses.

किमत्र बहुनोक्तेन शास्त्रकोटिशतैरपि ।
दुर्लभा चित्तविश्रान्तिः विना गुरुकृपां पराम् ।। ५६ ।।

Kimatra Bahunoktena Śāstrakoṭiśatairapi I
Durlabhā Cittaviśrānti: Vinā Gurukṛpāṃ Parāṃ II 56 II

यहाँ ज्यादा कहने से क्या लाभ, श्री सद्गुरु देव की परम कृपा के बिना करोड़ों शास्त्रों से भी मन की शांति मिलना बहुत दुर्लभ है।

Here, it goes without enough saying, without the supreme grace of SadhGuru Dev, it is difficult to attain peace of mind[3] even by reading millions of sacred books.

करुणाखड्गपातेन छित्वा पाशाष्टक शिशोः ।
सम्यगानन्दजनकः सद्गुरु सोऽभिधियते ।। ५७ ।।
एवं श्रुत्वा महादेवी गुरुनिन्दां करोति यः ।
स याति नरकान् घोरान् यावच्चन्द्रदिवाकरौ ।। ५८ ।।

Karuṇākhaḍgapātena Chitvā Pāśāṣṭaka Śiśo: I
Samyagānandajanaka: Sadguru So'bhidhiyate II 57 II
Evaṃ Śrutvā Mahādevī Gurunindāṃ Karoti Ya: I
Sa Yāti Narakān Ghorān Yāvaccandradivākarau II 58 II

श्री सद्गुरु देव अपनी करुणारुपी तलवार के प्रहार से शिष्य के आठों पाशों संशय, दया, भय, संकोच, निद्रा, प्रतिष्ठा, कुल का अभिमान और संपत्ति को काटकर शीतल आनंद देने वाले को सद्गुरु कहते हैं। ऐसा सुनने पर जो मनुष्य गुरु की

[3] Here the peace of mind indicates an equanimous mind, a stabilized mind. An Enlightened Guru first gives a vision and wisdom to His student before he reads and understands religious texts.

निंदा करता है, वह मनुष्य जब तक सूर्य चाँद का अस्तित्व रहता है, तब तक घोर नरक में रहता है।

SadhGuru Dev cuts eight types of chords (bondages) of His students with blow of sword of compassion—doubt (saṃśaya), pity (dayā), fear (bhaya), hesitation (saṃkoca), sleepiness (nidrā), social status (pratiṣṭhā), pride of family lineage (kula) and wealth, and thereby gives His student supreme soothing bliss. Knowing all this, if a person still criticizes his Guru, he remains in a horrible hell until the sun and moon hold existence.

यावत्कल्पान्तको देहस्तावच्छेवि गुरुं स्मरेत् ।
गुरुलोपो न कर्तव्यः स्वच्छन्दो यदि वा भवेत् ।। ५९ ।।

Yāvatkalpāntako Dehastāvachevi Guruṃ Smaret I
Gurulopo Na Kartavya: Svacchando Yadi Vā Bhavet II 59 II

हे प्रिये, जब तक इस शरीर में सांस रहती है तब तक श्री गुरुदेव का स्मरण करना चाहिये। (स्वच्छन्द अर्थात् स्वरुप का बोध होने पर भी) शिष्य को सद्गुरुदेव की शरण नहीं छोडनी चाहिए।

O' Dear Devi, as long as a person is breathing, till then he should not leave his devotion toward his Guru—(svacchanda means, even after knowing the true nature of Self, or enlightenment)—one should never abandon the shelter of his SadhGuru Dev.

हुंकारेण न वक्तव्यं प्राज्ञशिष्यैः कदाचन ।
गुरोरग्र न वक्तव्यमसत्यं तु कदाचन ।। ६० ।।

Huṃkāreṇa Na Vaktavyaṃ Prājñaśiṣyai: Kadācana I
Guroragra Na Vaktavyamasatyaṃ Tu Kadācana II 60 II

श्री गुरुदेव के समक्ष ज्ञानवान शिष्य को कभी हुंकार से नहीं बोलना चाहिए। मैंने ऐसा काम किया। और कभी असत्य नहीं बोलना चाहिए।

In front of his SadhGuru Dev, a learned student should never speak with pride (huṃkāra means speaking with hum sound, using I, we, or us). For example, I did that work. Also, one should never lie to his Guru.

गुरुं त्वंकृत्य हुंकृत्य गुरुसान्निध्यभाषणः ।
अरण्ये निर्जले देशे संभवेद् ब्रह्मराक्षसः ।। ६१ ।।

Guruṃ Tvaṃkṛtya Huṃkṛtya Gurusānnidhyabhāṣaṇa: I
Araṇye Nirjale Deśe Saṃbhaved Brahmarākṣasa: II 61 II

गुरुदेव के समक्ष जो तू कहकर बोलता है अथवा गुरु के सामने सर उठाकर बोलता है, वह निर्जन मरुभूमि में ब्रह्मराक्षस होता है।

If a person speaks using a word tū in front of his SadhGuru Dev (i.e. directly using the word 'you' is a disrespectful way of addressing an elderly in traditional Indian culture. A more respectful way is to use the word āpa; it is like using the phrase 'your holiness'), or if a person speaks with his chin up (indicating arrogance), that person is like a lonely evil plant found in the desert.

अद्वैतं भावयेन्नित्यं सर्वावस्थासु सर्वदा ।
कदाचिदऽपि नो कुर्यादद्वैतं गुरुसन्निधौ ।। ६२ ।।

Advaitaṃ Bhāvayennityaṃ Sarvāvasthāsu Sarvadā I
Kadācida'pi No Kuryādadvaitaṃ Gurusannidhau II 62 II

सदैव और सभी अवस्थाओं में विरोध की भावना करनी चाहिए, परन्तु गुरुदेव के साथ कभी विरोध की भावना नहीं करनी चाहिए।

A person may always have an attitude of objection in all situations; however, one should not have an attitude of contradiction with his Guru Dev.

दृश्यविस्मृतिपर्यन्तं कुर्याद् गुरुपदार्चनम् ।
तादृशास्यैव कैवल्यं न च तद्व्यतिरेकिणः ।। ६३ ।।

Dṛśyavismṛtiparyantaṃ Kuryād Gurupadārcanam I
Tādṛśāsyaiva Kaivalyaṃ Na Ca Tadvyatirekiṇa: II 63 II

जब तक हमारी आखों की देखने की स्मृति बनी रहे, तब तक गुरुदेव के पावन चरणारविन्द की पूजा-अर्चना करनी चाहिए, ऐसा करने वाले को ही कैवल्य पद की प्राप्ति होती है। इससे विपरीत करने वाले को नहीं होती।

So long as a student has the power to perceive, until then, he may devote himself to the holy Lotus-feet of his Guru Dev, doing so, that student gets enlightenment, otherwise not.

अपि संपूर्णतत्वज्ञो गुरुत्यागी भवेद्यदा ।
भवत्येव हि तस्यान्तकाले विक्षेपमुत्कटम् ।। ६४ ।।

Api Saṃpūrṇatatvajño Gurutyāgī Bhavedyadā I
Bhavatyeva Hi Tasyāntakāle Vikṣepamutkaṭam II 64 II

सम्पूर्ण तत्वज्ञ पुरुष भी यदि गुरु का त्याग कर दें तो मृत्यु के समय उसे महान व्यथा होती है।

If a person abandons his Guru, even if that person is an enlightened being, he experiences atrocious misery at the time of death.

गुरौ सति स्वयं देवि परेषां तु कदाचन ।
उपदेशं न वै कुर्यात् तदा चेद्राक्षसो भवेत् ।। ६५ ।।

Gurau Sati Svayaṃ Devi Pareṣāṃ Tu Kadācana I
Upadeśaṃ Na Vai Kuryāt Tadā Cedrākṣaso Bhavet II 65 II

हे देवी, गुरु देव के साथ रहने पर कभी अपने आप किसी को उपदेश नहीं देना चाहिए। यदि कोई इस प्रकार उपदेश देता है, तो वह ब्रह्मराक्षस होता है।

O’ Devi, while living with his Guru, a student should not give spiritual guidance to anyone, by himself (trying to guide others in his own ways). A student behaving in this way makes himself a brahmarākṣasa (Sanskrit: an evil demon, or a ghost of a learned brahmin, who led an unholy life).

न गुरोराश्रमे कुर्यात् दुष्पानं परिसर्पणम् ।

दीक्षा व्याख्या प्रभुत्वादि गुरोराज्ञां न कारयेत ।। ६६ ।।

Na Gurorāśrame Kuryāt Duṣpānaṃ Parisarpaṇam I
Dīkṣā Vyākhyā Prabhutvādi Gurorājñāṃ Na Kārayeta II 66 II

गुरु के आश्रम में मदिरा पान नहीं करना चाहिए। घूमना-फिरना नहीं चाहिए, किसी को दीक्षा नहीं देनी चहिये। व्याख्यान देना और अपना प्रभुत्व नहीं दिखाना चाहिए और गुरु को आज्ञा करना ये सब कार्य गुरु के स्थान में वर्जित हैं।

One should not consume intoxicating beverages in Guru's ashram. One should not casually stroll within Guru's abode. A person should—not give deeksha (initiate someone, to make someone his own disciple) to other people, should not give guidance and display his dominance over other people, or give orders to Guru—such actions are prohibited at Guru's āśrama.

नापोश्रमं च पर्यकं न च पादप्रसारणम् ।
नाङ्गभोगादिकं कुर्यान्न लीलामपरामपि ।। ६७ ।।

Nāpośramaṃ Ca Paryakaṃ Na Ca Pādaprasāraṇam I
Nāṅgabhogādikaṃ Kuryānna Līlāmaparāmapi II 67 II

गुरु के आश्रम में अपना घर या पलंग नहीं बनाना चाहिए। गुरुदेव के सामने पैर नहीं पसारने चाहिए, शरीर के भोग और अन्य लीलाएँ नहीं करनी चाहिए।

A person should not make his Guru's ashram his permanent home or even make his bed. In front of Guru, one should not sit pointing his feet toward Guru, and one

should not involve in sensual pleasures or other pleasure-seeking activities.

गुरुणां सदसद्वापि यदुक्तं तन्न लंघयेत् ।
कुर्वन्नज्ञां दिवारात्रौ दासवन्निवसेद् गुरौ ।। ६८ ।।

Guruṇāṃ Sadasadvāpi Yaduktaṃ Tanna Laṃghayet I
Kurvannajñāṃ Divārātrau Dāsavannivased Gurau II 68 II

दिन हो या रात हो, सदैव गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए। गुरुदेव की बात सच्ची हो या झूठी, उनकी बात का कभी उल्लंघन नहीं करना चाहिए, उनके सान्निध्य में दास बनकर रहना चाहिए।

One should follow Guru's order all day and night. Either Guru's words seem true or untrue, one should never oppose Him. In Guru's association, a student should live just like a servant.

आदत्तं न गुरोर्द्रव्यमुपभुंजीत कर्हिचित् ।
दत्तं च रंकवद् ग्राह्यं प्राणोऽप्येतेन लभ्यते ।। ६९ ।।

Ādattaṃ Na Gurordravyamupabhuṃjīta Karhicit I
Dattaṃ Ca Raṃkavad Grāhyaṃ Prāṇo'pyetena Labhyate II 69 II

जो वस्तु गुरुदेव ने नहीं दी हो, उस वस्तु का उपयोग कभी भी नहीं करना चाहिए। गुरुदेव की दी हुई वस्तु को गरीब की तरह ग्रहण करना चाहिए। उससे प्राण को भी प्राप्त किया जा सकता है।

One should not use anything that has not been given by his Guru. Whatever Guru Dev gives to a student, he should receive it like a beggar. A gift given by the Guru to an individual is very precious; it can potentially save him from death.

पादुकासनशय्यादि गुरुणा यदाभिष्टितम् ।
नमस्कुर्वीत तत्सर्वं पादाभ्यां न स्पृशेत क्वचित् ।। ७० ।।

Pādukāsanaśayyādi Guruṇā Yadābhiṣṭitam I
Namaskurvīta Tatsarvaṃ Pādābhyāṃ Na Spṛśeta Kvacit II 70 II

चरण पादुका, आसन, बिस्तर आदि जो कुछ भी सद्गुरुदेव के उपयोग में आता है उन सब वस्तुओं को प्रणाम करना चाहिए, उनको कभी पैर से नहीं छूना चाहिए।

A student should bow to all those things that SadhGuru Dev uses like sleepers, seat, bed, etc. He should not touch those things with his feet.

गच्छतः पृष्ठतो गच्छेत् गुरुच्छायां न लंघयेत् ।
नोल्बणं धारयेद्वेष नालंकारांस्ततोल्बणान् ।। ७१ ।।

Gacchata: Pṛṣṭhato Gacchet Gurucchāyāṃ Na Laṃghayet I
Nolbaṇaṃ Dhārayedveṣa Nālaṃkārāṃstatolbaṇān II 71 II

चलते समय गुरुदेव के साथ-साथ नहीं चलना चाहिए, उनके पीछे चलना चाहिए। गुरुदेव की परछाई का भी उल्लंघन नहीं करना चाहिए। गुरुदेव के सामने कीमती वेशभूषा, आभूषण आदि को धारण नहीं करना चाहिए।

A student should not walk side-by-side (adjacent to) of his Guru Dev; he should walk behind his Guru. He should not even cross the shadow of his Guru. In front of his Guru, he should not wear expensive clothes, jewelry, etc.

गुरुनिन्दाकरं दृष्टवा धावयेदथ वासयेत् ।
स्थानं वा त्तपरित्याज्यं जिह्वाच्छेदाक्षमो यदि ।। ७२ ।।

Gurunindākaraṃ Dṛṣṭavā Dhāvyedatha Vāsayet I
Sthānaṃ Vā Ttaparityājyaṃ Jihvācchedākṣamo Yadi II 72 II

सद्गुरु देव की निंदा करने वाले को देखकर यदि उसकी जिह्वा काट डालने में समर्थ न हो तो उसे अपने स्थान से भगा देना चाहिए। वह यदि उस स्थान पर ठहरे तो स्वयं उस स्थान का त्याग कर देना चाहिए।

In a situation, if someone else criticizes SadhGuru Dev, if a student does not have the capability to quieten him, he should ask that person to leave that place. Otherwise, if that person (the one who criticized) resides in that place, then the Guru's devotee should immediately move out of that place.

मुनिभिः पन्नगैर्वापि सुरैर्वा शापितो यदि ।
कालमृत्युभयाद्वापि गुरुः संत्राति पार्वति ।। ७३ ।।

Munibhi: Pannagairvāpi Surairvā Śāpito Yadi I
Kālamṛtyubhayādvāpi Guru: Saṃtrāti Pārvati II 73 II

हे पार्वती—मुनियों, पन्नगों और देवताओं के शाप से तथा काल (यम) के आने पर भी तथा मृत्यु के भय (डर) से भी गुरुदेव अपने शिष्य को बचा सकते हैं।

O' Pārvatī, Guru can save his devotee from curses of sages, serpents, and celestial beings (devatā); Guru can save him from the fear of death when Yama (Sanskrit: death God) arrives.

विजानन्ति महावाक्यं गुरोश्चरणसेवया ।
ते वै संन्यासिनः प्रोक्ता इतरे वेषधारिणः ।। ७४ ।।

Vijānanti Mahāvākyaṃ Guruścaraṇasevayā I
Te Vai Saṃnyāsinaḥ Proktā Itare Veṣadhāriṇa: II 74 II

गुरुदेव के श्री चरणों की सेवा करके जो संन्यास का अर्थ समझ जाते हैं (काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयेविदुः) वे ही सच्चे संन्यासी हैं, अन्य तो मात्र वेश धारी हैं।

Those who understand the meaning of saṃnyāsa (Sanskrit: renunciation), after being in service at the Lotus-feet of Guru, they are the real renunciates, others are merely clad in sādhū's clothes.

नित्यं ब्रह्म निराकारं निर्गुण बोधयेत् परम् सत्यचिद्घनम् ।
भासयन ब्रह्मभावं च दीपो दीपान्तर यथा ।। ७५ ।।

Nityaṃ Brahma Nirākāraṃ Nirguṇa Bodhayet Param Satyaciddhanam I
Bhāsayana Brahmabhāvaṃ Ca Dīpo Dīpāntara Yathā II 75 II

गुरु वे हैं जो सदैव निर्गुण, निराकार, परम ब्रह्म का ज्ञान देते हैं। जैसे एक दीपक दूसरे दीपक को प्रज्ज्वलित करता है, वैसे ही गुरु भी अपने शिष्य के भीतर ब्रह्मज्ञान प्रकट करते हैं।

Guru is the one who gives the knowledge of the Supreme Brahma that is formless and without any attributes. Just like a candle lights another candle with its light, similarly, Guru transmits this supreme knowledge and gives enlightenment to His student.

गुरुप्रसादतः स्वात्मन्यात्मारामनिरीक्षणात् ।
समता मुक्तिमार्गेण स्वात्मज्ञानं प्रवर्तते ॥ ७६ ॥

Guruprasādata: Svātmanyātmārāmanirīkṣaṇāt I
Samatā Muktimārgeṇa Svātmajñānaṃ Pravartate II 76 II

श्री सद्गुरुदेव की कृपा से ही शिष्य अपने भीतर ही आत्मानन्द प्राप्त करके समता व मोक्ष के मार्ग के द्वारा ब्रह्मज्ञान को उपलब्ध होता है।

It is only by the grace of Śrī SadhGuru Dev that a student finds supreme happiness within, experiences oneness, obtains to mokṣa (Sanskrit: absolute freedom from all misery, absolute happiness), and becomes enlightened.

स्फटिके स्फाटिकं रुपं दर्पणे दर्पणो यथा ।
तथात्मनि चिदाकारमानन्दं सोऽहमित्युत ।। ७७ ।।

Sphaṭike Sphāṭikaṃ Rupaṃ Darpaṇe Darpaṇo Yathā I
Tathātmani Cidākāramānandaṃ So'hamityuta II 77 II

जैसे स्फटिक मणि में स्फटिक मणि तथा दर्पण में दर्पण दिखाई देता है, उसी प्रकार शिष्य भी गुरुदेव की कृपा से आत्मा में जो चित और आनंद दिखाई देता है वह मैं हूँ, ऐसा समझ पाता है।

Like an image of quartz is seen within the quartz rock, a mirror is seen within a mirror, likewise, with the grace of Guru, a student also realizes that he is none other than the consciousness and bliss of the Ātmā (Sanskrit: Self) within.

अंगुष्ठमात्रं पुरुषं धयायेच्च चिन्मयं हृदि ।
तत्र स्फुरति यो भावः श्रुणु तत्कथयामि ते ।। ७८ ।।

Aṃguṣṭhamātraṃ Puruṣaṃ Dhayāyecca Cinmayaṃ Hṛdi I
Tatra Sphurati Yo Bhāva: Śruṇu Tatkathayāmi Te II 78 II

हृदय में अंगुष्ठ परिमाण वाले चैतन्य पुरुष का ध्यान करना चाहिए। वहां जो भाव अंकुरित होता है वह मैं तुम्हे कहता हूँ उसे सुनो।

Of the size of the thumb, that conscious Puruṣa (Sanskrit: Self, God) resides in our heart; focusing on that generates a mental impression (emotions) that I now tell you.

अजोऽहम अमरोऽहम् च ह्यानादिनिधनो ह्याहम् ।
अविकारश्चिदानन्दो ह्याणीयान् महतो महान् ।। ७९ ।।

Ajo'hama Amaro'ham Ca Hyānādinidhano Hyāham I
Avikāraścidānando Hyāṇīyān Mahato Mahān II 79 II

मैं अजन्मा हूँ, मैं अमर हूँ, मेरा आदि, मध्य, अन्त नहीं है। (आदि-मध्य-अन्तहीन) मैं निर्विकार हूँ। मैं चिदानन्द हूँ। मैं निर्गुण हूँ। मैं अणु से भी छोटा हूँ। मैं महान से भी महामहान हूँ।

I am unborn and immortal. I have no beginning, no middle, and no end; I am changeless. I am consciousness and bliss. I have no attributes or qualities. I am smaller than the smallest form of matter (an atom). I am greater than the greatest.

अपूर्वमपरं नित्यं स्वयं जयोतिर्निरामयम् ।
विरजं परमाकाशं ध्रुवमानन्दमव्ययम् ।। ८० ।।
अगोचरं तथाऽगंम्य नाम रूपविवर्जितम् ।
निःशब्दं तु विजानीयात्स्वभावाद् ब्रह्म पार्वति ।। ८१ ।।

Apūrvamaparaṃ Nityaṃ Svayaṃ Jayotirnirāmayam I
Virajaṃ Paramākāśaṃ Dhruvamānandamavyayam II 80 II
Agocaraṃ Tathā'gaṃmya Nāma Rūpavivarjitam I
Ni:Śabdaṃ Tu Vijānīyātsvabhāvād Brahma Pārvati II 81 II

हे देवी—ब्रह्म को स्वभाव से ही पहले जिससे पूर्व कोई नहीं है, ऐसा अद्वितीय, नित्य, ज्योतिस्वरूप, निरामय, निर्मल, परम आकाश स्वरूप, अचल, आनन्द स्वरूप, अविनाशी अगम्य अगोचर, नाम और रूप से रहित निःशब्द जानना चाहिए।

O' Devi, Brahma (Sanskrit: Self) should be perceived, understood as the one, before which, nothing exists. Brahma is non-dual, eternal, changeless, like a light, pure, devoid of any impurities, taintless, supreme, unmoving, blissful, indestructible, infinite like the sky, unseen, hidden (beyond mind, which cannot be perceived through sense organs), beyond all names and forms.

यथा गन्धस्वभावत्वं कर्पूरकुसुमादिषु ।
शीतोष्णत्वस्वभावत्वं तथा ब्रह्मणि शाश्वतम् ।। ८२ ।।

Yathā Gandhasvabhāvatvaṃ Karpūrakusumādiṣu I
Śītoṣṇatvasvabhāvatvaṃ Tathā Brahmaṇi Śāśvatam II 82 II

जिस प्रकार कपूर, फूल इत्यादि में गंधत्व (सुगन्ध) का स्वभाव होता है। जैसे अग्नि का स्वभाव उष्णता है, यदि अग्नि को प्यार से भी छुआ जाए तो वह जलाती है। उसी प्रकार जल में शीतलता स्वभाविक है। इसलिए ब्रह्म में शाश्वतता भी स्वभाव सिद्ध है।

Like camphor and flower, naturally have a fragrance. Similarly, fire’s essential character is to burn; even if someone touches the fire with love, it will burn him. Likewise, coolness is an inherent property of water. In the same way, Brahma (Sanskrit: Self, God) is fundamentally eternal. [In Guru Gītā, Brahma is equated to Guru, indicating Guru is beginning-less and end-less, further implying that Guru is none other than Self].

यथा निजस्वभावेन कुंडलकटकादयः ।
सुवर्णत्वेन तिष्ठन्ति तथाऽहं ब्रह्म शाश्वतम् ।। ८३ ।।

Yathā Nijasvabhāvena Kuṃḍalakaṭakādaya: I
Suvarṇatvena Tiṣṭhanti Tathā'haṃ Brahma Śāśvatam II 83 II

जिस प्रकार कटक, कुंडल आदि आभूषण स्वभाव से सुवर्ण हैं, उसी प्रकार मैं स्वभाव से ही शाश्वत ब्रह्म हूँ।

Like gold ornaments such as bangles, earrings, etc. have the fundamental element of gold; likewise, I am primarily an eternal Brahma (Sanskrit: Self).

स्वयं तथाविधो भूत्वा स्थातव्यं यत्रकुत्रचित् ।
कीटो भृंग इव ध्यानाद्यथा भवति तादृशः ।। ८४ ।।

Svayaṃ Tathāvidho Bhūtvā Sthātavyaṃ Yatrakutracit I
Kīṭo Bhṛṃga Iva Dhyanadyatha Bhavati Tādṛśa: II 84 II

स्वयं वैसा होकर किसी न किसी स्थान में रहना जैसा भृंगी एक कीड़े को ले जाकर दीवार पर अपने रहने की जगह बंद कर देता है और वह कीड़ा उसका चिंतन करते-करते ही अपने पहले शरीर के त्याग किये बिना ही भृंगी कीड़ा बन जाता है।

Using one’s power of attention, one may become like another person while still being in one’s place. An insect, bhṛṃgī picks up an insect from outside and situates it in its comb and later shuts the door. After a while, inside the comb, that insect becomes like bhṛṃgī, without giving up its original body, by continually concentrating on bhṛṃgī.

गुरोर्ध्यानेनैव नित्यं देही ब्रह्ममयो भवेत् ।
स्थितश्च यत्रकुत्रापि मुक्तोऽसौ नात्र संशयः ।। ८५ ।।

Gurordhyānenaiva Nityaṃ Dehī Brahmamayo Bhavet I
Sthitaśca Yatrakutrāpi Mukto'sau Nātra Saṃśaya: II 85 II

सदैव सद्गुरुदेव का ध्यान करने से ही मनुष्य ब्रह्ममय हो जाता है। वह किसी भी स्थान में रहता हो फिर भी मुक्त ही है। इसमें कोई संशय नहीं। क्योकि यम नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि से परे संयम, मर्यादा उसका स्वभाव बन जाता है।

A person becomes enlightened by constantly meditating upon his SadhGuru Dev. Then no matter where he lives, he is free and there is no doubt about it. This is because, beyond yama (Sanskrit: universal morality), niyama (Sanskrit: strict routine), āsana (Sanskrit: physical yoga), prāṇāyāma (Sanskrit: breath yoga) pratyāhāra (Sanskrit: restraint, mastery over external influences), dhāraṇā (Sanskrit: determination), dhyāna (Sanskrit: focus), and samādhi (Sanskrit: deep meditative state)—self-control becomes that person’s nature.

ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्य यशः श्री समुदाहृतम ।
षड्गुणैश्वर्ययुक्तो हि भगवान् श्रीगुरुः प्रिये ।। ८६ ।।

Jñānaṃ Vairāgyamaiśvarya Yaśa: Śrī Samudāhṛtama I
Ṣaḍguṇaiśvaryayukto Hi Bhagavān Śrīguru: Priye II 86 II

भगवान् शिव कहते हैं—हे देवी भगवत स्वरुप श्री गुरुदेव ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, यश, लक्ष्मी, और मधुर वाणी, ये छः गुण ऐश्वर्य से संपन्न होते हैं। इसलिए उन्हें भगवद् स्वरूप ही मानना चाहिए।

Lord Śiva says—O' Devi, Śrī Guru, who is the form of God, is endowed with knowledge, dispassion, glory, fame, wealth, and sweet language (mellifluent and harmonious). Therefore, Guru should just be regarded as a form of God.

गुरुः शिवो गुरुर्देवो गुरुर्बन्धुः शरीरिणाम् ।
गुरुरात्मा गुरुर्जीवो गुरोरन्यन्न विद्यते ।। ८७ ।।

Guru: Śivo Gururdevo Gururbandhu: Śarīriṇām I
Gururātmā Gururjīvo Guroranyanna Vidyate II 87 II

मनुष्यों के लिए गुरु ही शिव है। गुरु ही देव है, गुरु ही नाते-रिश्तेदार है। गुरु ही आत्मा है। गुरु के सिवा अन्य कुछ भी नहीं है। इसलिए गुरु को सामान्य मनुष्य न समझकर उन्हें साक्षात् शिव, देवता परम बान्धव, सुहृद, मित्र, हितकारी मानकर उसी की शरण ग्रहण करनी चाहिए।

As for human beings, Guru is Śiva. Guru is devatā (Sanskrit: demigod), Guru is their relatives, Guru is their Ātmā (Sanskrit: Self). There is nothing besides Guru. Therefore, one should not regard his Guru as an ordinary human being. Humans should recognize that Guru is an incarnation of Śiva. They should accept Guru

as a devatā (Sanskrit: a demigod) and a most entrusted and valuable friend; thus, a person should only take refuge in his Guru.

एकाकी निस्पृहः शान्तः चिंतासूयादिवर्जितः ।
बाल्यभावेन यो भाति ब्रह्मज्ञानी स उच्यते ।। ८८ ।।

Ekākī Nispṛha: Śānta: Ciṃtāsūyādivarjitaḥ I
Bālyabhāvena Yo Bhāti Brahmajñānī Sa Ucyate II 88 II

अकेला, कामना रहित, शान्त चिन्ता रहित, ईर्ष्या रहित और बालक की तरह जो सुशोभित है वह ब्रह्मज्ञानी कहलाता है। वह बालक की तरह निर्दोष निर्विकार छल कपट से रहित होता है। वह किसी से ईर्ष्या नहीं करता, शिकायत नहीं करता। ब्रह्मज्ञानी के ये ही लक्षण हैं।

A person endowed by qualities like being alone, without any desires, calm, without any worries or jealousy like a child, is an enlightened (wise) person. Like a child, this person is without any wrong impressions of being cunning to others. He does not look at others with jealousy and does not complain. These are the characteristics of a Realized Soul.

न सुखं वेदशास्त्रेषु न सुखं मंत्रयंत्रके ।
गुरोः प्रसादादन्यत्र सुखं नास्ति महीतले ।। ८९ ।।

Na Sukhaṃ Vedaśāstreṣu Na Sukhaṃ Maṃtrayaṃtrake I
Guro: Prasādādanyatra Sukhaṃ Nāsti Mahītale II 89 II

वेदों और शास्त्रों में सुख नहीं है, मंत्र-यंत्र में सुख नहीं है। जैसे वेदों और शास्त्रों को जब तक सद्गुरुदेव न बताएं तब तक यह समझ में नहीं आते क्योंकि इस पृथ्वी पर गुरुदेव की कृपा प्रसादि के सिवाय अन्यत्र कहीं भी सुख नहीं है।

There is no pleasure in Vedas and other sacred scriptures, neither there is pleasure in the recitation of mantra and yaṃtra (Sanskrit: mystical instruments or diagram supposed to possess occult powers). Unless Guru Dev teaches the Vedas and holy scriptures, it is not possible to understand them because, on this earth, pure joy only comes by the grace of Guru and by no other means.

चार्वाकवैष्णवमते सुखं प्रभाकरे न हि ।
गुरोः पादान्तिके यद्वत्सुखं वेदान्तसम्मतम् ।। ९० ।।

Cārvākavaiṣṇavamate Sukhaṃ Prabhākare Na Hi I
Guro: Pādāntike Yadvatsukhaṃ Vedāntasammatam II 90 II

गुरुदेव के श्री चरणों में जो वेदान्त निर्दिष्ट सुख है, वह न तो चार्वाक मत में और न वैष्णव मत में और न कपिलाचार्य (सांख्य) मत में है।

The kind of joy mentioned in the Vedanta (end part of the Vedas), is only accessible through Guru’s Lotus-feet. This bliss is neither in Cārvāka school of thought nor in Vaiṣṇava (Sanskrit: school worshipping Lord Viṣṇu) or sage Kapilācārya’s (Sāṃkhya Philosophy) spiritual traditions.

न तत्सुखं सुरेन्द्रस्य न सुखं चक्रवार्तिनाम् ।
यत्सुखं वीतरागस्य मुनेरेकान्तवासिन: ।। ९१ ।।

Na Tatsukhaṃ Surendrasya Na Sukhaṃ Cakravārtinām I
Yatsukhaṃ Vītarāgasya Munerekāntavāsina: II 91 II

एकान्तवासी, वीतराग मुनि को जो सुख मिलता है, वह सुख न तो इन्द्र को और न चक्रवर्ती राजाओं को मिलता है, क्योंकि इन्द्र भी काम वासनाओं से ग्रस्त है। उसे भी राक्षसों कि चुनौती बनी रहती है। चक्रवर्ती राजा भी कामनाओं के कारण दु:खी रहता है। सुखी तो केवल वह मुनि हैं जो एकान्त में रहते हैं जिनकी सभी कामनाएँ छूट चुकी हैं।

A sage who is unattached and lives in solitude, experience bliss that is not even available to either Indra (king of demigods) or any other great king. Even Indra is always entangled in desires, for he must also face the challenges of demons. Likewise, a great king is also unhappy due to material aspirations. Only a sage who lives in solitude remains in pure bliss who has no worldly desires.

नित्यं ब्रह्मरसं पीत्वा तृप्तो य: परमात्मनि ।
इन्द्रं च मन्यते रंकं तुच्छं नृपाणां तत्र का कथा ।। ९२ ।।

Nityaṃ Brahmarasaṃ Pītvā Tṛpto Ya: Paramātmani I
Indraṃ Ca Manyate Raṃkaṃ Tucchaṃ Nṛpāṇāṃ Tatra Kā Kathā II 92 II

हमेशा ब्रह्म रस का पान करके जो परमात्मा में सन्तुष्ट हो गया है, वह ऋषि इन्द्र को भी गरीब मानता है, तो उन चक्रवर्ती राजाओं की तो बात ही क्या है?

An enlightened being who always resides in the contentment of the Divine (Self) considers even Indra (king of demigods) as poor, much less those great kings.

यतः परमकैवल्यं गुरुमार्गेण वै भवेत् ।
गुरुभक्तिरतिः कार्या सर्वदा मोक्षकांक्षिभिः ।। ९३ ।।

Yata: Paramakaivalyaṃ Gurumārgeṇa Vai Bhavet I
Gurubhaktirati: Kāryā Sarvadā Mokṣakāṃkṣibhiḥ II 93 II

मोक्ष की इच्छा करने वालों को गुरु भक्ति खूब करनी चाहिए भूलकर भी गुरुदेव की कोई बात नहीं काटनी चाहिए क्योंकि गुरुदेव के द्वारा ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

Those who have a desire for enlightenment (mokṣa—supreme freedom and happiness) should wholly be devoted to their Guru; even by mistake, they should not contradict Guru’s words because realization is attained only through Guru.

एक एवाद्वितीयोऽहं गुरुवाक्येन निश्चितः ।
एवमभ्यस्यता नित्यं न सेव्यं वै वनान्तरम् ।। ९४ ।।

Eka Evādvitīyo'haṃ Guruvākyena Niścita: I
Evamabhyasyatā Nityaṃ Na Sevyaṃ Vai Vanāntaram II 94 II

गुरुदेव के वाक्य की सहायता से जिसने ऐसा निश्चय कर लिया है कि मैं एक और अद्वितीय हूँ, और गुरु आज्ञा पालन में जो नित्यरत है, उसके लिए अन्य वनवास का सेवन आवश्यक नहीं है।

By practicing the Guru Dev's word (Guru-mantra japa), the one who has established himself in the knowledge that I alone exist in everyone, and who always lives in the service of his Guru; that person does not need to perform any other extreme austerity such as going to the forests or jungles.

अभ्यासान्निमिषेणैव समाधिमधिगच्छति ।
आजन्मजनितं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ।। ९५ ।।

Abhyāsānnimiṣeṇaiva Samādhimadhigacchati I
Ājanmajanitaṃ Pāpaṃ Tatkṣaṇādeva Naśyati II 95 II

क्योंकि अभ्यास से एक पल में समाधि लग जाती है और उसी पल इस जन्म से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि गुरुदेव के उपदेश के बिना आत्मबोध सम्भव नहीं है।

This is because, with practice, a person can reach the state of samadhi in a moment, while it is not possible to reach enlightenment without Guru-mantra.

गुरुर्विष्णुः सत्त्वमयो राजसश्चतुराननः ।
तामसो रूद्ररूपेण सृजत्यवति हन्ति च ।। ९६ ।।

Gururviṣṇu: Sattvmayo Rājasaścaturānana: I
Tāmaso Rūdrarūpeṇa Sṛjatyavati Hanti Ca II 96 II

गुरुदेव ही सत्वगुणी होकर विष्णु रूप से जगत् का पालन करते हैं। रजोगुणी होकर ब्रह्म रूप से जगत का सृजन करते हैं और तमो गुणी होकर शंकर रूप से जगत् का संहार करते हैं।

Guru's satva guṇa (Sanskrit: qualities like harmony, compassion, truth, love and sacrifice) sustains the entire creation in the form of Lord Viṣṇu; Guru's raj guna (Sanskrit: characteristics like passion, adventure, desire and materialism) does the creation of this world in the form of Lord Brahmā; and Guru's tam guna (Sanskrit: qualities such as darkness and inertia) destroys this existence in the form Lord Śiva.

तस्यावलोकनं प्राप्य सर्वसंगविवर्जितः ।
एकाकि निःस्पृहः शान्तः स्थातव्यं तत्प्रसादतः ।। ९७ ।।

Tasyāvalokanaṃ Prāpya Sarvasaṃgavivarjita: I
Ekākī Ni:Spṛha: Śānta: Sthātavyaṃ Tatprasādata: II 97 II

उनका (गुरुदेव का) दर्शन पाकर उनके कृपा प्रसाद से सभी प्रकार की आसक्ति छोड़कर एकाकी, निःस्पृह और शान्त होकर रहना चाहिए। साधक को सभी प्रकार की सांसारिक कामनाएं वासनाएं, आसक्ति, मोह, ममता आदि का त्याग कर देना चाहिए।

After having Guru's darśana (Sanskrit: an opportunity or occasion to see a holy person), one should leave all worries and stay calm. A student should let go of all worldly desires, material attachments, excessive attachments, etc.

सर्वज्ञपदामित्याहुर्देही सर्वमयो भुवि ।
सदाऽनन्दः सदा शान्तो रमते यत्रकुत्रचित् ।। ९८ ।।

Sarvajñapadāmityāhurdehī Sarvamayo Bhuvi I
Sadā'nanda: Sadā Śānto Ramate Yatrakutracit II 98 II

जो जीव आत्मा इस संसार में सर्वमय, आनन्दमय, और शान्त होकर सभी स्थानों पर विचरता है, उस जीव आत्मा को सर्वज्ञ कहते हैं। ऐसा ज्ञानी ही सर्वज्ञ होता है। वही शान्त और आनंदमय जीता है।

The being who always remains calm and blissful while wandering around all the places; such a soul is said to be omnipresent. Such a wise individual is said to be all-pervasive. He alone lives a serene and joyful life.

यत्रैव तिष्ठते सोऽपि स देशः पुण्यभाजनः ।
मुक्तस्य लक्षणं देवी तवाग्रे कथितं मया ।। ९९ ।।

Yatraiva Tiṣṭhate So'pi Sa Deśa: Puṇyabhājana: I
Muktasya Lakṣaṇaṃ Devī Tavāgre Kathitaṃ Mayā II 99 II

भगवान् शंकर ने कहा ऐसा पुरुष जहां रहता है, वह स्थान पुण्य तीर्थ है, जैसे हरिद्वार में गंगा जी को पुण्य तीर्थ

कहा गया है। हे प्रिये तुम्हारे समक्ष मैंने मुक्तपुरुष का लक्षण कहा।

Lord Śiva says, wherever such an Enlightened Soul lives, becomes a pilgrimage like the river Gangā, which is also considered as a holy pilgrimage in Haridwar. So, O' Dear Devi, I have revealed to you the characteristics of an Enlightened Being.

यद्यप्यधीता निगमाः षडंगा आगमाः प्रिये ।
अध्यात्मादिनि शास्त्राणी ज्ञानं नास्ति गुरुं विना ।। १०० ।।

Yadyapyadhītā Nigamā: Ṣaḍaṃgā Āgamā: Priye I
Adhyātmādini Śāstrāṇī Jñānaṃ Nāsti Guruṃ Vinā II 100 II

हे देवी मनुष्य चाहे चारों वेदों को पढ़ ले, वेद के अंग शिक्षा, व्याकरण, छंद, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प इन छः अंगों को पढ़ ले, अध्यात्म शास्त्र आदि अन्य सभी शास्त्र पढ़ ले फिर भी वह सद्गुरुदेव के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि सब के ज्ञानदाता केवल सद्गुरु ही हैं। उनकी शरण में जाना चाहिए।

O' Devi, a person may learn all four Vedas, or study all six parts of the Vedas—Śikṣā, Grammar, Chand, Nirukta (Sanskrit: etymology of Vedic literature), Astrology and Kalpa (Sanskrit: rituals) or read all Śāstra (sacred ancient texts), however still, it is not possible to assimilate the knowledge of the Self without SadhGuru. So, one should go to his Guru for this knowledge.

शिवपूजारतो वापि विष्णुपूजारतोऽथवा ।
गुरुतत्वविहीनश्चेत्तत्सर्वं व्यर्थमेव हि ।। १०१ ।।

Śivapūjārato Vāpi Viṣṇupūjārato'thavā I
Gurutatvavihīnaścettatsarva Vyarthameva Hi II 101 II

भगवान् शिव की पूजा में रत हो या भगवान् विष्णु की पूजा में रत हो, लेकिन गुरुतत्व के ज्ञान से रहित हो तो वह सब व्यर्थ है।

If a person is involved in the worship of Lord Śiva, or he is committed to the devotion of Lord Viṣṇu, however, if his practice is devoid of the knowledge of (understanding of) the Guru-element (Guru-tatva), it is all a waste.

सर्वं स्यात्सफलं कर्म गुरुदीक्षाप्रभावतः ।
गुरुलाभात्सर्वलाभो गुरुहीनस्तु बालिशः ।। १०२ ।।

Sarva Syātsaphalaṃ Karma Gurudīkṣāprabhāvata: I
Gurulābhātsarvalābho Guruhīnastu Bāliśa: II 102 II

गुरुदेव की दीक्षा के प्रभाव से जीव आत्मा के सभी कर्म सफल होते हैं और कुकर्म से मुक्ति होती है। गुरुदेव की संप्राप्ति रुपी परम लाभ से अन्य सभी लाभ मिलते हैं। जिस मनुष्य का गुरु नहीं है, वह मूर्ख है।

All karmas, efforts of a person are actualized, and his sins are dismissed after being initiated by a Guru. Having a Guru itself is a great success, following which

an individual attains all other achievements. The one who does not have a Guru is like a fool.

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सर्वसंगविवर्जितः ।
विहाय शास्त्रजालानि गुरुमेव समाश्रयेत् ।। १०३ ।।

Tasmātsarvaprayatnena Sarvasaṃgavivarjita: I
Vihāya Śāstrajālāni Gurumeva Samāśrayet II 103 II

इसलिए सभी प्रकार के प्रयत्न की आसक्तियों को छोड़कर अनासक्त होकर शास्त्र के मायाजाल को छोड़कर इस संसार रुपी माया को त्यागकर सदैव गुरुदेव की शरण लेनी चाहिए।

Therefore, being unattached, leaving all aspirations (desire to make efforts) and after withdrawing oneself from the web of this illusionary world, or even obscure scriptures, one should always go and take refuge in his Guru.

ज्ञानहीनो गुरुस्त्याज्यो मिथ्यावादी विडंबकः ।
स्वविश्रान्तिं न जानाति परशान्तिं करोति किम् ।। १०४ ।।

Jñānahīno Gurustyājyo Mithyāvādī Viḍaṃbaka: I
Svaviśrāntiṃ Na Jānāti Paraśāntiṃ Karoti Kim II 104 II

ज्ञान रहित, मिथ्या बोलने वाले और दिखावट करने वाले गुरु का त्याग कर देना चाहिए क्योंकि जो अपनी ही शान्ति पाना नहीं जानता वह दूसरों को क्या शान्ति दे सकेगा।

One should abandon a Guru who lacks knowledge, who speaks inaccurately, or who shows-off, because, the Guru who do not know how to obtain his own peace, how can he bring peace in others?

शिलायाः किं परं ज्ञानं शिलासंघप्रतारणे ।
स्वयं तर्तुं न जानति पर निस्तारयेत्कथम् ।। १०५ ।।

Śilāyā: Kiṃ Paraṃ Jñānaṃ Śilāsaṃghapratāraṇe I
Svayaṃ Tartuṃ Na Jānati Para Nistārayetkatham II 105 II

हे देवी, जैसे पत्थरों के समूह को तैरने का ज्ञान पत्थर में कहां से हो सकता है, जो खुद तैरना नहीं जानता वह दूसरे को क्या तैरायेगा? जिसे स्वयं तैरना नहीं आता वह दूसरे को डूबने से कैसे बचा सकता है।

O' Devi, how can a cluster of stones learn how to swim? The one who does not have the knowledge to swim, how can he teach the skill of swimming to others or even save others from drowning.

न वन्दनीयास्ते कष्टं दर्शनाद् भ्रान्तिकारकाः ।
वर्जयेत्तान् गुरुन् दूरे धीरानेव समाश्रयेत् ।। १०६ ।।

Na Vandanīyāste Kaṣṭaṃ Darśanād Bhrāntikārakā: I
Varjayettān Gurun Dūre Dhīrāneva Samāśrayet II 106 II

जो गुरु अपने दर्शन दिखाने से शिष्य को भ्रान्ति में डालता है ऐसे गुरु को प्रणाम नहीं करना चाहिए। इतना ही नहीं, दूर से ही उसका त्याग कर देना चाहिए। ऐसी स्थिति में

धैर्यवान गुरु का आश्रय लेना चाहिए क्योंकि धैर्यवान गुरु दिखावा नहीं करता। वह शान्त होता है। ऐसे गुरु की ही खोज करनी चाहिए।

One should not bow to a Guru who creates delusion in the mind of his disciple. Furthermore, a seeker should not even go near to such a Guru. In this case, a spiritual aspirant should instead take shelter under a Guru who has great patience, who is not an excessive self-publicist (or demonstrates magic, shows-off), and remains calm; so, a person should only search for such a Guru.

पाखण्डिनः पापरता नास्तिका भेदबुद्धयः ।
स्त्रीलम्पटा दुराचाराः कृतघ्ना बकवृत्तयः ।। १०७ ।।

Pākhaṇḍina: Pāparatā Nāstikā Bhedabuddhaya: I
Strīlampaṭā Durācārā: Kṛtaghnā Bakavṛttaya: II 107 II

हे देवी—पाखण्डी, पाप से रत, नास्तिक, भेदबुद्धि उत्पन्न करने वाला स्त्रीलम्पट, दुराचारी, एहसान फरामोश बगुले की तरह ठगने वाला, जैसे बगुला पानी में आँख बंद करके एक पैर पर खड़ा होकर पाखण्ड करता है और मछली के आते ही वह मछली को खा लेता है, ऐसे व्यक्ति को गुरु नहीं बनाना चाहिए।

O’ Devi, one should not accept someone as a Guru who is a hypocrite, filled with sins, an atheist with his mind in duality, womanizer, and an ungrateful person like a crane. Like a crane that behaves hypocritically by

standing in the water pond with one leg, with its eyes closed, and catches the fish as soon as the fish comes closer, such a person should not be accepted as a Guru.

कर्मभ्रष्टाः क्षमानष्टाः निन्द्यतर्केच्क्ष वादिनः ।
कामिनः क्रोधिनश्चैव हिंस्त्राश्चंडाः शठास्तथा ।। १०८ ।।

Karmabhraṣṭā: Kṣamānaṣṭā: Nindyatarkeckṣa Vādina: I
Kāmina: Krōdhinaścaiva Hiṃstrāścaṃḍā: Śaṭhāstathā II 108 II

कर्म से भ्रष्ट, क्षमा रहित, निंदनीय तर्कों से वाद-विवाद करने वाला, कामवासनाओं से ग्रस्त, क्रोधी, हिंसक, उग्र स्वभाव वाले तथा दुष्ट को कभी गुरु नहीं बनाना चाहिए। वह साधक को भी अपने साथ नरक में ले जाता है।

One should not accept someone as Guru who does not do virtuous actions (devoid of holy karma), the one who has no forgiveness, involves in harmful or defamatory debates, who is entrenched in desires or lecherous behaviors, angry, intolerant, and a cruel person. Such a person goes to hell, along with his student.

ज्ञानलुप्ता न कर्तव्या महापापास्त्था प्रिये ।
एभ्यो भिन्नो गुरुः सेव्य एकभक्त्या विचार्य च ।। १०९ ।।

Jñānaluptā Na Kartavyā Mahāpāpāstthā Priyē I
Ēbhyō Bhinnō Guru: Sēvya Ēkabhaktyā Vicārya Ca II 109 II

जो स्वयं अपने ज्ञान के अनुसार ही सदाचरण से जीवन निर्वाह करने वाला हो, जो शिष्य को सद्मार्ग पर ला सके, ऐसा

विचार करके ऊपर दिए हुए लक्षणों वाले गुरु की एकनिष्ठ भक्ति से सेवा करनी चाहिए।

A student should dedicate himself with an unwavering (single-pointed) devotion to a Guru, who truthfully lives His life by real virtues and morals, a Guru, who has the capacity to drive a student on the right path. A spiritual aspirant should be able to discriminate between a right or wrong Guru, based on the characteristics asserted above.

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं धार्मसारं मयोदितम् ।
गुरुगीता समं स्तोत्रं नास्ति तत्वं गुरोः परम् ।। ११० ।।

Satyaṃ Satyaṃ Puna: Satyaṃ Dhārmasāraṃ Mayōditam I
Gurugītā Samaṃ Stōtraṃ Nāsti Tatvaṃ Gurō: Param II 110 II

गुरुगीता के समान अन्य कोई स्तोत्र नहीं है, गुरु से समान अन्य कोई तत्व नहीं है। समग्र धर्म का यह सार मैंने कहा है। केवल गुरु ही सभी धर्मों का सार है। यह सत्य है, सत्य है, और बार-बार सत्य है।

There is no sacred text like Guru Gītā; there is no element purer than Guru. I have shared the essence of the entire Dharma (Sanskrit: virtuous actions, eternal laws as written in the Vedas). Only Guru is the essence of all Dharma—this is the truth, is the truth, and again, is the truth.

अनेन यद् भवेद् कार्यं तद्वदामि तव प्रिये ।
लोकोपकारकं देवि लौकिकं तु विवर्जयेत् ।। १११ ।।

Anēna Yad Bhavēd Kāryaṃ Tadvadāmi Tava Priyē I
Lōkōpakārakaṃ Dēvi Laukikaṃ Tu Vivarjayēt II 111 II

हे पार्वतीः इस गुरुगीता का पाठ करने के से जो कर्म सिद्ध होता है वह अब कहता हूँ। हे देवी लोगों के लिए यह उपकारक है। मात्र लौकिक का त्याग करना चाहिए जो मनुष्य कि कामनाओं में आसक्ति है इनका त्याग करना चाहिए, इच्छाएँ और अपेक्षाएँ हैं उनका त्याग करना चाहिए, गुरुगीता ही लोगों पर उपकार कर सकती है, गुरुगीता से बढकर कोई ग्रंथ नहीं है।

O' Pārvatī, now I will tell you specific endeavors that are realized by reading Guru Gītā. O' Devi, Guru Gītā is very beneficial for people. People should renounce their material world, attachments to their passions, and their worldly desires. They should abandon their ambitions and aspirations. In this situation, Guru Gītā alone can be helpful to people. There is no sacred text better than Guru Gītā.

लौकिकाद्धर्मतो याति ज्ञानहीनो भवार्णवे ।
ज्ञानभावे च यत्सर्वं कर्म निष्कर्म शाम्यति ।। ११२ ।।

Laukikāddharmatō Yāti Jñānahīnō Bhavārṇavē I
Jñānabhāvē Ca Yatsarvaṃ Karma Niṣkarma Śāmyati II 112 II

जो कोई इसका उपयोग लौकिक कार्य के लिए करेगा वह ज्ञानहीन होकर संसार रूपी सागर में गिरेगा, वह इन संसार रुपी बन्धनों से कभी मुक्त नहीं हो सकता। ज्ञान भाव से जिस किसी कर्म में इसका उपयोग किया जाएगा वह कर्म निष्कर्म में परिणत होकर शान्त हो जाएगा।

A person will go down in the ocean-like world if one uses Guru Gītā for worldly affairs. That person would never be able to free himself from the bondage of karma. However, if someone does actions based on the knowledge obtained from Guru Gītā, his actions will be converted into in-action (nullifies the karma). Thus, an individual can liberate himself from the shackles of this world.

इमां तु भक्तिभावेन पठेद्धै श्रुणुयादपि ।
लिखित्वा यत्प्रदानेन तत्सर्वं फलमश्नुते ।। ११३ ।।

Imāṃ Tu Bhaktibhāvēna Paṭhaiddhai Śruṇuyādapi I
Likhitvā Yatpradānena Tatsarvaṃ Phalamaśnute II 113 II

भक्ति-भाव से जो गुरुगीता का पाठ करता है और सुनता है, लिखता है, वह साधक सब फल भोगता है, और जो अन्य कर्मों से दुर्लभ है।

The one who reads and practices Guru Gītā with devotion, listen to its verses, writes it, that student enjoys all kinds of fruits of his actions. Such fruits

(accomplishments) are not attainable through other types of actions (karma).

गुरुगीतामिमां देवि हृदि नित्यं विभावय ।
महाव्याधिगतैर्दुखैः सर्वदा प्रजपेन्मुदा ।। ११४ ।।

Gurugītāmimāṃ Dēvi Hṛdi Nityaṃ Vibhāvaya I
Mahāvyādhigatairdukhai: Sarvadā Prajapēnmudā II 114 II

भगवान् शिव पार्वती से कहते हैं—हे देवी इस गुरुगीता को नित्यभाव पूर्वक हृदय में धारण करो, महाव्याधिवाले दुःखी लोगों को सदा आनंद से इसका जप करना चाहिए।

Lord Śiva says to Devi Pārvatī—O' Devi, practice Guru Gītā every day and assimilate it (internalize) in your heart with devotion. Unhappy people, including those who suffer due to grave diseases should regularly practice Guru Gītā joyously.

गुरुगीताक्षरैकैकं मन्त्रराजमिदं प्रिये ।
अन्ये च विविध मन्त्राः कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।। ११५ ।।

Gurugītākṣaraikaikaṃ Mantrarājamidaṃ Priyē I
Anyē Ca Vividha Mantrā: Kalāṃ Nārhanti Ṣōḍaśīm II 115 II

हे देवी गुरुगीता का एक-एक अक्षर मन्त्रराज है अन्य जो विविध मंत्र हैं वे इसका सोलहवां भाग भी नहीं, इसलिये इसका सदैव जप करते रहना चाहिए।

O' Devi, each letter of the verses written in Guru Gītā is like 'king-mantra.' Other mantras are not even a

one-sixteenth part of it. Therefore, one may regularly keep chanting the mantras of Guru Gītā.

अनन्तफलमाप्नोति गुरुगीताजपेन तु ।
सर्वपापहरा देवी सर्वदारिद्र्यनाशिनी ।। ११६ ।।

Anantaphalamāpnōti Gurugītājapēna Tu I
Sarvapāpaharā Dēvī Sarvadāridrayanāśinī II 116 II

हे प्रिये, गुरुगीता के जप से अनन्त फल मिलता है। गुरुगीता सभी पापों को हरने वाली और दारिद्र्य का नाश करने वाली है।

O' Dear Devi, chanting Guru Gītā gives countless fruits. Guru Gītā takes away all sins and destroys poverty.

अकालमृत्युहर्त्री च सर्वसंकटनाशिनी ।
यक्षराक्षसभूतादिचोरव्यघ्राविघातिनी ।। ११७ ।।

Akālamṛtyuhartrī Ca Sarvasaṃkaṭanāśinī I
Yakṣarākṣasabhūtādicōravyaghrāvighātinī II 117 II

जो गुरुगीता का प्रतिदिन पाठ करता है वह अकाल मृत्यु को रोकता है। सब संकटों का नाश करती है, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच, चोर, और शेर आदि का घात करती है।

The one who chants Guru Gītā every day evades his untimely death. Guru Gītā destroys all kinds of dangers—yakṣa (Sanskrit: a class of demigods), demons, ghosts, evil spirits, thieves, lions, etc.

सर्वोपद्रवकुष्ठादिदुष्टदोषनिवारिणी ।
यत्फलं गुरुसान्निध्यात्तत्फलं पठनाद् भवेत् ।। ११८ ।।

Sarvopadravakuṣṭhādiduṣṭadoṣanivāriṇī I
Yatphalaṃ Gurusānnidhyāttatphalaṃ Paṭhanād Bhavet II 118 II

गुरु गीता सब प्रकार के उपद्रवों कुष्ट आदि दुष्ट रोगों और दोषों मानसिक रोग, शारीरिक पीड़ा (दुःख) सभी प्रकार के रोगों तथा दोषों का निवारण करने वाली है। श्री सद्गुरुदेव के पावन सान्निध्य से जो फल मिलता है वह फल इस गुरु गीता के पाठ से मिलता है।

Guru Gītā eliminates all sorts of illnesses, sins, grave ailments, like leprosy including mental disorders or physical pains (in Sanskrit: duḥkha). The fruit that one gets by being in the company to his SadhGuru, is the same fruit that one gets by chanting Guru Gītā.

महाव्याधिहरा सर्वविभूतेः सिद्धिदा भवेत् ।
अथवा मोहने वश्ये स्वयमेव जपेत्सदा ।। ११९ ।।

Mahāvyādhiharā Sarvavibhūtē: Siddhidā Bhavēt I
Athavā Mōhanē Vaśyē Svayamēva Japētsadā II 119 II

इस गुरुगीता का पाठ करने से महाव्याधि दूर होती है। सभी प्रकार के ऐश्वर्य तथा सिद्धियों की प्राप्ति होती है। यदि कोई सम्मोहन, मारण, उच्चाटन अथवा वशीकरण में बंधा है तो उसे गुरु गीता के मन्त्रों का पाठ विधि विधान के साथ करना चाहिए।

Chanting Guru Gītā prevents an individual from severe diseases in life. A person who chants Guru Gītā gains grandeur, prosperity, and several spiritual powers. If a person is under the spell of practices[4] like, samōhana, māraṇa, uccāṭana, or vaśīkaraṇa, that person should put into practice the mantras of Guru Gītā in a recommended and methodological way.

मोहन सर्वभुतानां बन्धमोक्षकरं परम् ।
देवराज्ञां प्रियकरं राजानं वशमानयेत् ।। १२० ।।

Mohana Sarvabhutānāṃ Bandhamokṣakaraṃ Param I
Devarājñāṃ Priyakaraṃ Rājānaṃ Vaśamānayet II 120 II

इस गुरुगीता का पाठ करने वाले पर सभी प्राणी मोहित हो जाते हैं। बंधन में बंधे हुए लोगों को मुक्ति मिल जाती है। ऐसा व्यक्ति देवराज इन्द्र को भी प्रिय होता है और राजा उसके वश में होता है। राजा भी ऐसे व्यक्ति को सम्मान देता है।

Everyone loves the person who chants the mantras of Guru Gītā. A person chained in the bondage of karma attains freedom by reciting Guru Gītā. Even the Lord Indra (the Lord of all demigods) loves the person who chants Guru Gītā; more so, the king is also under the control of such a spiritual person and gives him honor.

---

[4] Practices, such as samōhana, māraṇa, uccāṭana, or vaśīkaraṇa, come under the science of tantra. Tantra is a yogic science that works on the subtle energies within the body for spiritual growth and physical well-being. This field also includes some abovementioned practices to control others, primarily done for controlling enemies.

मुखस्तम्भकरं चैव गुणानां च विवर्धनम् ।
दुष्कर्मनाशनं चैव तथा सत्कर्मसिद्धिदम ।। १२१ ।।

Mukhastambhakaraṃ Caiva Guṇānāṃ Ca Vivardhanam I
Duṣkarmanāśanaṃ Caiva Tathā Satkarmasiddhidama II 121 II

गुरुगीता का पाठ शत्रु का मुख बंद करने वाला है। उसके गुणों को बढाने वाला है। दुष्कर्मों का नाश करने वाला है और सत्कर्म में सिद्धि देने वाला है।

The chanting of Guru Gītā silences one's enemy. It enhances good qualities of a person. The practice of Guru Gītā destroys the evil karma of a person and brings fulfillment (success) of the good karma of that person.

प्रसिद्धं साधयेत्कार्यं नवग्रहभयापहम् ।
दुःस्वप्ननाशनं चैव सुस्वप्नफलदायकम् ।। १२२ ।।

Prasiddhaṃ Sādhayetkāryaṃ Navagrahabhayāpaham I
Du:Svapnanāśanaṃ Caiva Susvapnaphaladāyakam II 122 II

इसका पाठ असाध्य कार्यों की सिद्धि कराता है। नवग्रहों के दोष को हरता है। दुःस्वप्न का नाश करता है और सुस्वप्न के फल की प्राप्ति कराता है।

The chanting of Guru Gītā makes possible, the impossible tasks. It removes the negative influence of the nine planets. Practicing Guru Gītā destroys the corrupt impressions within a person and creates the reality of a lucky dream (destroys vices and fulfills virtuous wishes).

मोहशान्तिकरं चैव बन्धमोक्षकरं परम् ।
स्वरुपज्ञाननिलयं गीताशास्त्रमिंद शिवे ।। १२३ ।।

Mohaśāntikaraṃ Caiva Bandhamokṣakaraṃ Param I
Svarupajñānanilayaṃ Gītāśāstramiṃda Śive II 123 II

भगवान् शिव पार्वती से कहते हैं—हे शिवे यह गुरु गीता एक शास्त्र है। यह गुरुगीता रुपी शास्त्र मोह को शान्त करने वाला है। इसके नित्य पाठ करने से मोह आसक्ति एवं कामनायें शान्त हो जाती हैं।

Lord Śiva says to Devi Pārvatī—O' Śive, Guru Gītā is like a complete subject or a sacred text. Practicing this subject subdues delusion in mind (in Sanskrit: moha). Daily chanting of Guru Gītā diminishes errors in judgment (arising out of moha), excessive worldly attachments, and unwanted desires.

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चयम् ।
नित्यं सौभाग्यदं पुण्यं तापत्रयकुलापहम् ।। १२४ ।।

Yaṃ Yaṃ Cintayate Kāmaṃ Taṃ Taṃ Prāpnoti Niścayam I
Nityaṃ Saubhāgyadaṃ Puṇyaṃ Tāpatrayakulāpaham II 124 II

जीवात्मा जो-जो अभिलाषा करके इस गुरुगीता का पाठन या चिंतन करता है, उसे वह निश्चय ही प्राप्त होता है। यह गुरुगीता नित्य सौभाग्य और पुण्य प्रदान करने वाली तथा तीनों तापों (आधि, व्याधि, उपाधि) का शमन करने वाली है।

An individual who has some desire, chants, or attempts to understand Guru Gītā, definitely satisfies that desire. Guru Gītā invariably gives a vast fortune and culminates into auspicious, holy actions (karma). It destroys all three forms of suffering in life, namely bodily sufferings, pains caused by the world, and the problems created by the celestial demigods.

सर्वशान्तिकरं नित्यं तथा वन्ध्या सुपुत्रदम् ।
अवैधव्यकरं स्त्रीणां सौभाग्यस्य विवर्धनम् ।। १२५ ।।

Sarvaśāntikaraṃ Nityaṃ Tathā Vandhyā Suputradam I
Avaidhavyakaraṃ Strīṇāṃ Saubhāgyasya Vivardhanam II 125 II

यह गुरुगीता सब प्रकार की शान्ति प्रदान करने वाली है, वन्ध्या (बाँझ) स्त्री को सुपुत्र देने वाली, सधवा स्त्रियों के वैधव्य का निवारण करने वाली और सौभाग्य की वृद्धि करने वाली है।

Guru Gītā provides a harmony of all types. It grants children to women who can't bear a child and prevents a married woman from becoming a widow and brings good fate.

आयुरारोग्यमैश्वर्य पुत्रपौत्रप्रवर्धनम् ।
निष्कामजापी विधवा पठेन्मोक्षमवाप्नुयात् ।। १२६ ।।

Āyurārogyamaiśvarya Putrapautrapravardhanam I
Niṣkāmajāpī Vidhavā Paṭhenmokṣamavāpnuyāt II 126 II

यह गुरुगीता आयुष्य, आरोग्य, ऐश्वर्य, और पुत्र-पौत्रादि की सिद्धि करने वाली है, कोई विधवा निष्काम भाव से इसका पाठ करे तो मोक्ष की प्राप्ति होती है।

Guru Gītā gives a long life, free from diseases, and filled with prosperity, wealth, and progeny. If a widow chants Guru Gītā without desires, she obtains mokṣa (Sanskrit: freedom from all sufferings, absolute peace and happiness).

अवैधव्यं सकामा तु लभते चान्यजन्मनि ।
सर्वदुःखभयं विघ्नं नाशयेत्तापहारकम् ।। १२७ ।।

Avaidhavyaṃ Sakāmā Tu Labhate Cānyajanmani I
Sarvaduḥkhabhayaṃ Vighnaṃ Nāśayettāpahārakam II 127 II

यदि विधवा सकाम होकर जप करे तो अगले जन्म में उसको संताप हरने वाला सौभाग्य प्राप्त होता है। उसके सब दुःख, भय, विघ्न, और संताप का नाश होता है।

If a widow who has desires, chants Guru Gītā, in the next life she gets a fortune that takes away her sufferings. All her grief, fears, obstacles, and pains are destroyed.

सर्वपापप्रशमनं धर्मकामार्थमोक्षदम् ।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।। १२८ ।।

Sarvapāpapraśamanaṃ Dharmakāmārthamokṣadam I
Yaṃ Yaṃ Cintayate Kāmaṃ Taṃ Taṃ Prāpnoti Niścitam II 128 II

यह गुरुगीता का पाठ सब पापों का शमन करता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चार प्रकार के पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है तथा उसके सभी पापों का शमन होकर वह परम पवित्र हो जाता है। इस पाठ से जो जो आकांक्षायें की जाती है, वह अवश्य ही पूर्ण होती है।

Chanting Guru Gītā destroys all kinds of sins of a person and fulfills all his four objectives of life—Dharma (Sanskrit: living a virtuous and ethical life per eternal laws), artha (Sanskrit: earning money), kāma (Sanskrit: worldly desires) and mokṣa (Sanskrit: attainment of absolute freedom from all sufferings). A person becomes completely pure after the dissolution of his sins. Chanting of Guru Gītā fulfills all aspirations of a person that is expected of reading Guru Gītā.

लिखित्वा पूजयेद्यस्तु मोक्षश्रियमवाप्नुयात् ।
गुरुभक्तिर्विशेषेण जायते हृदि सर्वदा ।। १२९ ।।

Likhitvā Pūjayedyastu Mokṣaśriyamavāpnuyāt I
Gurubhaktirviśeṣeṇa Jāyate Hṛdi Sarvadā II 129 II

यदि कोई गुरुगीता को लिखकर उसकी पूजा करे तो उसे लक्ष्मी तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है और विशेष कर उसके हृदय में सदा सर्वदा गुरुभक्ति उत्पन्न होती रहती है।

If a person continues to write Guru Gītā and keeps worshiping it, he attains wealth and later attains mokṣa (Sanskrit: absolute freedom from all sufferings).

Especially his devotion towards his Guru continues to increase and endures forever.

जपन्ति शाक्ताः सौराश्च गाणपत्याश्च वैष्णवाः ।
शैवाः पाशुपताः सर्वे सत्यं सत्यं न संशयः ।। १३० ।।

Japanti Śāktā: Saurāśca Gāṇapatyāśca Vaiṣṇavā: I
Śaivāḥ Pāśupatā: Sarve Satyaṃ Satyaṃ Na Saṃśaya: II 130 II

शक्ति के उपासक, सूर्य के उपासक, गणपति के उपासक, शिव के उपासक, और पशुपति के उपासक सभी मतवादी इस गुरुगीता का पाठ करते रहते हैं। यह सत्य है, सत्य है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

All those who worship Goddess of Energy (Devi), the Sun God, Lord Śiva, Lord Ganesh, or devotees of other Gods, all of them chant (worship) Guru Gītā. This statement is the truth; it is the truth without an iota of doubt.

जपं हीनासनं कुर्वत् हीनकर्माफलप्रदम् ।
गुरुगीतां प्रयाणे वा संग्रामे रिपुसंकटे ।। १३१ ।।

Japaṃ Hīnāsanaṃ Kurvat Hīnakarmāphalapradam I
Gurugītāṃ Prayāṇe Vā Saṃgrāme Ripusaṃkaṭe II 131 II

बिना आसन के जप नीच कर्म हो जाता है निष्फल हो जाता है। यात्रा में, युद्ध में, शत्रुओं के उपद्रव में गुरुगीता का जप-पाठ करने से विजय मिलती है।

There is no fruit of chanting (Śrī Guru Gītā japa) without a properly assigned seat. Such a chanting practice becomes a lowly action. The chanting of Guru Gītā during travel, war, or while fighting the onslaught of enemies yields success.

जपन् जयमवाप्नोति मरणे मुक्तिदायिका ।
सर्वकर्माणि सिद्ध्यन्ति गुरुपुत्रे न संशयः ।। १३२ ।।

Japan Jayamavāpnoti Maraṇe Muktidāyikā I
Sarvakarmāṇi Siddhayanti Guruputre Na Saṃśaya: II 132 II

मरण काल अर्थात मरते समय गुरुगीता का स्मरण किया जाए तो मोक्ष की प्राप्ति होती है। यदि कोई शिष्य गुरु के पुत्र का भी गुरु के सदृश प्रतिदिन स्मरण करता है, तो उसके सभी कार्य पूर्ण होते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है।

If someone recites (chants) Guru Gītā at the time of death, he gets mokṣa (Sanskrit: absolute freedom from all sufferings). There is no doubt in the fact that a person realizes all his actions even if he invokes an image (meditates on) of his Guru’s son regularly.

गुरुमंत्रो मुखे यस्य तस्य सिद्ध्यन्ति नान्यथा ।
दीक्षया सर्वकर्माणि सिद्ध्यन्ति गुरुपुत्रके ।। १३३ ।।

Gurumaṃtro Mukhe Yasya Tasya Siddhayanti Nānyathā I
Dīkṣayā Sarvakarmāṇi Siddhayanti Guruputrake II 133 II

जिसके मुख में गुरुमंत्र है उसके सब कर्म सिद्ध होते हैं। दूसरे के नहीं, दीक्षा के कारण शिष्य के सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

Only that person who gets initiated by his Guru and who regularly chants Guru-mantra (keeps his Guru-mantra in his mouth), realizes all his actions (karmas), and not others.

भवमूलविनाशाय चाष्टपाशनिवृत्तये ।
गुरुगीताम्भसि स्नानं तत्वज्ञः कुरुते सदा ।। १३४ ।।

Bhavamūlavināśāya Cāṣṭapāśanivṛttaye I
Gurugītāmbhasi Snānaṃ Tatvajña: Kurute Sadā II 134 II

तत्वज्ञ पुरुष रुपी वृक्ष की जड़ नष्ट करने के लिए और आठों प्रकार के बंधन (संशय, दया, भय, संकोच, निंदा, प्रतिष्ठा, कुलाभिमान, और सम्पत्ति), की निवृत्ति करने के लिए गुरुगीता रुपी गंगा में सदा स्नान करते रहना चाहिए।

[Here an intellectual, spiritual person, or a student is equated to a ‘tree,’ who is rooted in this world] To cut the roots of a ‘tree-like’ spiritual seeker and to eliminate his eight kinds of bondages (disbelief, pity, fear, hesitation, condemnation, and pride due to social position, family heritage, and wealth), the student should regularly bathe himself in Guru Gītā, which is like the holy river Gangā.

सर्वशुद्धः पवित्रोऽसौ स्वभावाद्यत्र तिष्ठति ।
तत्र देवगणाः सर्वे क्षेत्रपीठे चरन्ति च ।। १३५ ।।

Sarvaśuddha: Pavitro'sau Svabhāvādyatra Tiṣṭhati I
Tatra Devagaṇā: Sarve Kṣetrapīṭhe Caranti Ca II 135 II

स्वभाव से ही सर्वदा शुद्ध और पवित्र है, ऐसे वे ब्रह्मज्ञानी महापुरुष जहाँ निवास करते हैं, वह तीर्थ बन जाता है। ऐसे तीर्थ में सभी देवी-देवता विचरण करते हैं।

Those great enlightened (realized) saints, who are always pure by nature, wherever they live that place becomes a pilgrimage. All gods and goddesses wander around in these areas of pilgrimages.

आसनस्था शयाना वा गच्छन्तस्तिष्ठन्तोऽपिवा ।
अश्वारुढाः गजारुढाः सुषुप्ता जाग्रतोऽपिवा ।। १३६ ।।

Āsanasthā Śayānā Vā Gacchantastiṣṭhanto'pivā I
Aśvāruḍhā: Gajāruḍhā: Suṣuptā Jāgrato'pivā II 136 II

आसन पर बैठे हुए या लेटे हुए खड़े रहते या चलते हुए हाथी या घोड़े पर सवार हुए जाग्रतावस्था में या (निद्रावस्था) सुषुप्तावस्था में भी साधक को गुरुगीता का जप-पाठ करते रहना चाहिए।

One should continuously chant Guru Gītā while sitting on one’s seat, or while lying down, walking, or riding on an elephant, or a horse, while being awake (waking state), or even while sleeping (deep sleep state).

शुचिभूता ज्ञानवन्तो गुरुगीतां जपन्ति ये ।
तेषां दर्शनसंस्पर्शात् पुनर्जन्म न विद्यते ।। १३७ ।।

Śucibhūtā Jñānavanto Gurugītāṃ Japanti Ye I
Teṣāṃ Darśanasaṃsparśāt Punarjanma Na Vidyate II 137 II

जो पवित्र ज्ञानवान् मनुष्य इस गुरुगीता का जप करते हैं उनके दर्शन और स्पर्श से पुनर्जन्म नहीं होता। ऐसे व्यक्ति के दर्शनों का भी सौभाग्य समझना चाहिए।

By seeing or touching those pure realized (knowledgeable) saints who sincerely chant Guru Gītā, escapes from the cycle of rebirth and death; they do not take another birth. One should consider even the sight of such pure souls (darśana) as a great fortune.

कुशदूर्वासनेदेवि ह्यासने शुभ्रकम्बले ।
उपविश्य ततो देवि जपेदेकाग्रमानसः ।। १३८ ।।

Kuśadūrvāsanedevi Hyāsane Śubhrakambale I
Upaviśya Tato Devi Japedekāgramānasa: II 138 II

हे पार्वती—गुरुगीता का जप करते समय शिष्य को कुश या दूर्वा आसन पर सफेद कंबल बिछाकर अथवा पीले ऊनी आसन पर बैठकर एकाग्र चित्त से इस गुरुगीता का जप करना चाहिए।

O’ Devi, while chanting (or reading) Guru Gītā, the student should sit and focus on a seat (on the floor) that is made up of kuśa or dūrvā (Sanskrit: big cordgrass or bermuda grass) and yellow-colored wool.

शुक्लं सर्वत्र वै प्रोक्तं वश्ये रक्तासनं प्रिये ।
पद्मासने जपेन्नित्यं शान्तिवश्यकरं परम् ।। १३९ ।।

Śuklaṃ Sarvatra Vai Proktaṃ Vaśye Raktāsanaṃ Priye I
Padmāsane Japennityaṃ Śāntivaśyakaraṃ Param II 139 II

सामान्यतया पीला या सफेद ऊनी आसन उचित है। क्योंकि सफेद या पीला रंग शीतलता का प्रतीक है। परन्तु वशीकरण में लाल आसन आवश्यक है, हे प्रिये शान्ति की प्राप्ति के लिए या वशीकरण में नित्य पद्मासन में बैठकर जप करें तो अच्छा है।

Typically, a yellow or white colored woolen seat is appropriate as these two colors represent coolness. But for vaśīkaraṇa (Sanskrit: practices for attraction, peace, or subjugation) one should regularly sit in a lotus pose on a red-colored seat, floor-cushion, and focus on Guru Gītā.

वस्त्रासने च दारिद्रयं पाषाणे रोगसंभवः ।
मेदिन्यां दुःखमाप्नोति काष्ठे भवति निष्फलम् ।। १४० ।।

Vastrāsane Ca Dāridrayaṃ Pāṣāṇe Rogasaṃbhava: I
Medinyāṃ Duḥkhamāpnoti Kāṣṭhe Bhavati Niṣphalam II 140 II

कपड़े के आसन पर बैठकर जप करने से दारिद्रता आती है । पत्थर के आसन पर रोग, जमीन (पृथ्वी) पर बैठकर जप करने से दुःख आता है और लकड़ी के आसन पर किये

हुए जप निष्फल होते हैं । अतः बिना विधि विधान से किया गया कार्य कभी सफलता नहीं देता ।

A person becomes poor when he does japa (Sanskrit: chanting) on a cloth-seat (in Sanskrit: āsana). It brings upon poor health if he does japa on a rock and gets suffering if he does japa sitting on the floor. If he does japa while sitting on a wooden seat, it makes his actions unfruitful. Therefore, doing activities without proper methods never brings upon success.

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिः मोक्षश्री व्याघ्रचर्मणि ।
कुशासने ज्ञानसिद्धिः सर्वसिद्धिस्तु कम्बले ।। १४१ ।।

Kṛṣṇājine Jñānasiddhi: Mokṣaśrī Vyāghracarmaṇi I
Kuśāsane Jñānasiddhi: Sarvasiddhistu Kambale II 141 II

जैसे काले मृगचर्म और दर्भासन पर बैठकर जप करने से ज्ञान की सिद्धि होती है, व्याघ्र चर्म पर जप करने से मुक्ति होती है। किन्तु कंबल के आसन ऊपर पीले ऊनी पर सर्वसिद्धि होती है।

A person obtains Self-knowledge when he does japa sitting on a deerskin or dūba or dūrvā (Sanskrit: bermudagrass) seat. An individual attains liberation if he does japa while seated on a tiger-skin cushion. However, one attains realization (perfection or actualization) of all his actions (karma) if he does japa when sitting on a yellow woolen cloth kept on a blanket.

आग्नेय्यां कर्षणं चैव वायव्यां शत्रुनाशनम् ।
नैर्ऋत्यां दर्शन चैव ईशान्यां ज्ञानमेव च ।। १४२ ।।

Āgneyyāṃ Karṣaṇaṃ Caiva Vāyavyāṃ Śatrunāśanam I
Nairṛtyāṃ Darśana Caiva Īśānyāṃ Jñānameva Ca II 142 II

पूर्व और दक्षिण के बीच अग्निकोण की ओर मुख करके जप-पाठ करने से आकर्षण, उत्तर और पश्चिम के बीच वायव्य कोण की ओर मुख करके जाप-पाठ करने से शत्रु का नाश, दक्षिण और पश्चिम के बीच नैर्ऋत्य कोण की तरफ मुख करके भगवान के दर्शन, उत्तर-पूर्व के बीच ईशान कोण की ओर मुख करके बैठने से ज्ञान व सर्वगुणों की प्राप्ति होती है।

When one worships in the direction of agnikoṇa, between the South and East directions, enhances the power of attraction; when individual prays or chants, facing the direction of vāyavya koṇa, between the North and East directions, it destroys enemies; when he prays facing the direction of nairṛtya koṇa, between South and West, he sees God; and when he worships facing the direct of īśāna koṇa, between the North and East, attains knowledge, and good qualities or traits.

उदमुखः शान्तिजाप्ये वश्ये पूर्वमुखस्तथा ।
याम्ये तु मारणं प्रोक्तं पश्चिमे च धनागमः ।। १४३ ।।

Udamukha: Śāntijāpye Vaśye Pūrvamukhastathā I
Yāmye Tu Māraṇaṃ Proktaṃ Paścime Ca Dhanāgama: II 143 II

उत्तर दिशा की ओर मुख करके जप पाठ करने से शान्ति, पूर्व दिशा की ओर वशीकरण, दक्षिण दिशा की ओर मृत्यु सिद्धि होती है और पश्चिम दिशा की ओर मुख करके जप-पाठ करने से धन की प्राप्ति होती है।

When a person worships facing North, attains peace; when facing East dispels the effect of vaśīkaraṇa (Sanskrit: occult practices for subjugation by the enemy); when he prays facing South defeats death; and when japa is done facing the West, he attains wealth.

इति श्री स्कान्दोत्तरखण्डे उमामहेश्वर संवादे
श्री गुरुगीतायां द्वितीयोऽध्याय: संपूर्णाम

Iti Śrī Skāndottarakhaṇḍe Umāmaheśvara Saṃvāde
Śrī Gurugītāyāṃ Dvitīyo'dhyāya: Saṃpūrṇāma

इस प्रकार श्री स्कन्दपुराण उत्तर खंड में शिव पार्वती संवाद में श्री गुरुगीता का दूसरा अध्याय समाप्त हुआ।

This ends the second chapter of Śrī Skandapurāṇa Uttara Khaṃḍa, detailing dialog between Lord Śiva and Devi Pārvatī.

तृतीयोऽध्यायः

Tṛtīyo'dhyāya:

Chapter 3

अथ काम्यजपस्थानं कथयामि वरानने ।
सागरान्ते सरित्तीरे तीर्थे हरिहरालये ।। १४४ ।।

Atha Kāmyajapasthānaṃ Kathayāmi Varānane I
Sāgarānte Sarittīre Tīrthe Hariharālaye II 144 II

हे सुमुखी, अब सकामियों के लिए जप करने के स्थानों का वर्णन करता हूँ। सकामियों के लिए सागर या नदी के तट पर, तीर्थ, शिवालय, या विष्णु के मंदिर जैसे स्थान जप के लिए उपयुक्त हैं।

O' Beautiful Devi, now I will tell you appropriate places to worship for people who want to fulfill their desires—worldly people. They may pray in places like a sea beach, a riverbank, pilgrimages, Lord Śiva's, or Lord Viṣṇu's temple.

शक्तिदेवालये गोष्ठे सर्वदेवालये शुभे ।
वटस्य धात्र्या मूले वा मठे वृन्दावने तथा ।। १४५ ।।

Śaktidevālaye Goṣṭhe Sarvadevālaye Śubhe I
Vaṭasya Dhātryā Mūle Vā Maṭhe Vṛndāvane Tathā II 145 II

देवी के मंदिर में, गौशाला में, सभी प्रकार के शुभ देवालयों में, वटवृक्ष या आँवले के पेड़ के नीचे, मठ में तुलसीवन जैसे स्थान सकामियों के जप के लिए उपयुक्त हैं।

Places like Devi's temple, cowshed, all types of pure and holy temples, under a banyan tree, gooseberry (in Sanskrit: āvalā) tree, or in the basil (in Sanskrit: tulasī) garden within a monastery, all these places are suitable for doing prayers.

पवित्रे निर्मले देशे नित्यानुष्ठानतोऽपि वा ।
निर्वेदनेन मौनेन जपमेतत् समरभेत् ।। १४६ ।।

Pavitre Nirmale Deśe Nityānuṣṭhānato'pi Vā I
Nirvedanena Maunena Japametat Samarabhet II 146 II

पवित्र निर्मल स्थान में प्रतिदिन अनुष्ठान के रूप में अनासक्त रहकर मौनपूर्वक इसके जपानुष्ठान् का आरम्भ करना चाहिए।

One should start this ritual of chanting Guru Gītā by staying quiet in a pure and serene place.

जाप्येन जयमाप्नोति जपसिद्धिं फलं तथा ।
हीनकर्म त्यजेत्सर्वं गार्हितस्थानमेव च ।। १४७ ।।

Jāpyena Jayamāpnoti Japasiddhiṃ Phalaṃ Tathā I
Hīnakarma Tyajetsarvaṃ Gārhitasthānameva Ca II 147 II

जप से जय प्राप्त होती है, तथा जप की सिद्धि रूप फल मिलता है। जपानुष्ठान के करने से सब नीच कर्म और

निन्दित स्थान जैसे जहाँ झूठ, कपट, छल, प्रपंच, निंदा ऐसे स्थानों का त्याग करना चाहिए।

When a person does japa, he attains success. Through japa, one attains siddhi (Sanskrit: realization of effort or enlightenment) as a fruit of practice. While doing this japa ritual, one should abandon all lowly actions and condemned places where people speak lies, do corrupt activities, manipulate others, or criticize others.

शमशाने बिल्वमूले वा वटमूलान्तिके तथा ।
सिद्धयन्ति कानके मूले चूतवृक्षस्यसन्निधौ ।। १४८ ।।

Śamaśāne Bilvamūle Vā Vaṭamūlāntike Tathā I
Siddhayanti Kānake Mūle Cūtavṛkṣasyasannidhau II 148 II

शमशान में, बेल के पेड़ के नीचे, वटवृक्ष के नीचे, या (कनक) धतूरे के वृक्ष के नीचे और आम के पेड़ के पास जप करने से सिद्धि जल्दी प्राप्त होती है।

When a person chants in a graveyard, under a bela tree (wood apple tree), banyan tree, dhaturā plant (daturas), or a mango tree, it brings him success faster.

आकल्पजन्मकोटीनां यज्ञव्रततपः क्रियाः ।
ताः सर्वाः सफला देवी गुरुसंतोषमात्रतः ।। १४९ ।।

Ākalpajanmakoṭīnāṃ Yajñavratatapa: Kriyā: I
Tā: Sarvā: Saphalā Devī Gurusaṃtoṣamātrata: II 149 II

हे देवी कल्प पर्यन्त के, करोड़ो जन्मों के यज्ञ, व्रत तप और शास्त्रोक्त क्रियाएँ ये सब गुरुदेव के संतोष मात्र से सफल हो जाते हैं क्योंकि इन सबकी सही विधि सद्गुरु देव ही जानते हैं।

O' Devi, only SadhGuru knows the correct method of all the rituals. So, all the rites, like yagya, fasting, and other scripture-based rituals, that a person has performed in the past many lives, for so long, are actualized (fulfilled) if one's Guru is pleased and happy.

मंदभाग्या ह्यशक्ताश्च ये जना नानुमन्वते ।
गुरुसेवासु विमुखाः पच्यन्ते नरकेऽशुचौ ।। १५० ।।

Maṃdabhāgyā Hyaśaktāśca Ye Janā Nānumanvate I
Gurusevāsu Vimukhā: Pacyante Narake'śucau II 150 II

भाग्यहीन, शक्तिहीन, और गुरुसेवा से विमुख जो लोग इस उपदेश को नहीं मानते, वे घोर नरक में पड़ते हैं।

Those people who are unfortunate, whose luck does not favor them, those who are powerless, those who do not have the privilege of Guru sevā (selfless serving one's Guru), and those men do not believe in these teachings (written in Guru Gītā), they fall into a terrible hell.

विद्या धनं बलं तेषां भाग्यं निरर्थकम् ।
येषां गुरुकृपा नास्ति अधो गच्छन्ति पार्वति ।। १५१ ।।

Vidyā Dhanaṃ Balaṃ Teṣāṃ Bhāgyaṃ Nirarthakam I
Yeṣāṃ Gurukṛpā Nāsti Adho Gacchanti Pārvati II 151 II

जिसके ऊपर श्री गुरुदेव की कृपा नहीं है, उसकी विद्या, धन, बल, और भाग्य निरर्थक है। हे पार्वती उसका अध: पतन होता है।

That individual who does not have a grace of Guru befalling upon him, his knowledge (education), wealth, power, and fortune (luck) are meaningless. O' Devi such a person falls from grace.

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः ।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता ।। १५२ ।।

Dhanyā Mātā Pitā Dhanyo Gotraṃ Dhanyaṃ Kulodbhava: I
Dhanyā Ca Vasudhā Devi Yatra Syād Gurubhaktatā II 152 II

जिसके अन्दर गुरुभक्ति हो उसकी माता धन्य है। उसका पिता धन्य है। उसका कुल धन्य है। उसके कुल में जन्म लेने वाले धन्य हैं। समस्त धरती माता धन्य है।

The one who is devoted to his Guru, blessed are his mother, father, and family lineage, and blessed are the ones who are born in his family. The whole earth is blessed.

शरीरमिन्द्रियं प्राणांचार्थः स्वजनबन्धुतां ।
मातृकुलं पितृकुलं गुरुरेव न संशयः ।। १५३ ।।

Śarīramindriyaṃ Prāṇāṃcārtha: Svajanabandhutāṃ I
Mātṛkulaṃ Pitṛkulaṃ Gurureva Na Saṃśaya: II 153 II

शरीर, इंद्रियाँ, प्राण, धन, स्वजन, बन्धुबान्धव, माता का वंश, पिता का कुल सब गुरुदेव ही हैं, इसमें संशय नहीं है।

There is no doubt in the fact that body, sense organs, life-force (breath), wealth, relatives, friends, mother’s family, and father’s lineage, all are forms of Guru.

गुरुर्देवो गुरुर्धर्मो गुरौ निष्ठां परं तपः ।
गुरोः परतरं नास्ति त्रिवारं कथयामि ते ।। १५४ ।।

Gururdevo Gururdharmo Gurau Niṣṭhāṃ Paraṃ Tapa: I
Guro: Parataraṃ Nāsti Trivāraṃ Kathayāmi Te II 154 II

सद्गुरुदेव ही भगवान हैं, धर्म ही गुरुदेव हैं, अतः गुरु में निष्ठा ही परम तप है। गुरुदेव से अधिक और कुछ नहीं है। यह मैं तीन बार कहता हूँ।

Guru is the God, and Dharma (Sanskrit: the eternal law) is the Guru; therefore, devotion in Guru is most supreme and austere spiritual practice. There is nothing beyond or higher than Guru. I repeat this, three times.

समुद्रे वै यथा तोयं क्षीरे क्षीरं घृते घृतम् ।
भिन्ने कुंभे यथाऽऽकाशं तथाऽऽत्मा परमात्मानि ।। १५५ ।।

Samudre Vai Yathā Toyaṃ Kṣīre Kṣrīraṃ Ghṛte Ghṛtam I
Bhinne Kuṃbhe Yathā"kāśaṃ Tathā"tmā Paramātmāni II 155 II

जिस प्रकार सागर में पानी, दूध में दूध, घी में घी अलग-अलग घड़ों में आकाश एक और अभिन्न है, उसी प्रकार परमात्मा में जीवात्मा एक और अभिन्न है।

Like water in an ocean, milk in milk, ghī (Sanskrit: purified butter) inside ghī, ākāśa (Sanskrit: ether, space) in different vessels are one and same, likewise supreme being is one and undifferentiated in all beings.

तथैव ज्ञानवान् जीवः परमात्मनि सर्वदा ।
ऐक्येन रमते ज्ञानी यत्र कुत्र दिवानिशम् ।। १५६ ।।

Tathaiva Jñānavān Jīva: Paramātmani Sarvadā I
Aikyena Ramate Jñānī Yatra Kutra Divāniśam II 156 II

इसी प्रकार ज्ञानी सदा परमात्मा के साथ अभिन्न होकर रात-दिन आनंद विभोर होकर सर्वत्र विचरते हैं और अज्ञानी लोग इस शरीर को ही अपना स्वरूप मानते हैं और इस माया रुपी संसार में फंस जाते हैं।

While, a knowledgeable, realized, or enlightened person (in Sanskrit: jñānī) becomes one with the Supreme being and wanders around everywhere in the state of bliss, others (non-realized ordinary people) consider their body as their own self, and remain trapped in the illusion of this world (Māyā).

गुरुसंतोषणादेव मुक्तो भवति पार्वति ।
अणिमादिषु भोक्तृत्वं कृपया देवि जायते ।। १५७ ।।

Gurusaṃtoṣaṇādeva Mukto Bhavati Pārvati I
Aṇimādiṣu Bhoktṛtvaṃ Kṛpayā Devi Jāyate II 157 II

हे प्रिये, गुरुदेव को सन्तुष्ट करने से साधक मुक्ति को प्राप्त हो जाता है। हे देवी, गुरुदेव की कृपा से वह अणिमा, महिमा, लघिमादि अष्ट सिद्धियों का भोग प्राप्त करता है।

O’ Dear Pārvatī, by making Guru happy and satisfied, a student becomes liberated. O’ Devi, by Guru’s grace, the student attains eight kinds of spiritual powers (in Sanskrit: siddhi) like aṇimā (Sanskrit: to be able to become small-sized), mahimā (Sanskrit: to be able to increase one’s size), laghimā (Sanskrit: to be able to make oneself very lightweight, to be able to fly with speeds more than air).

साम्येन रमते ज्ञानी दिवा वा यदि वा निशि ।
एवं विधो महामौनि त्रैलोक्यंसमतां व्रजेत् ।। १५८ ।।

Sāmyena Ramate Jñānī Divā Vā Yadi Vā Niśi I
Evaṃ Vidho Mahāmauni Trailokyaṃsamatāṃ Vrajet II 158 II

ज्ञानी पुरुष दिन हो या रात्रि हो सदा सर्वदा एक समान समत्व भाव से रमण करते हैं। इस प्रकार के महामौनी अर्थात् ब्रह्मनिष्ठ महात्मा तीनों लोकों में समान भाव से गति करते हैं क्योंकि ऐसे ज्ञानी सम्पूर्ण जगत को ब्रह्ममय समझते हैं।

Either it is day or night, realized souls continuously wander around everywhere with equanimity (omnipresent, all-pervasive). Likewise, totally silent enlightened saints who are fully established in Self

(Brahmaniṣṭha sadhus), travel through all three worlds with equanimity (as a witness), because for them, the entire creation belongs to God.

गुरुभावः परं तीर्थमन्यतीर्थं निरर्थकम् ।
सर्वतीर्थमयं देवि श्रीगुरोश्चरणाम्बुजम् ।। १५९ ।।

Gurubhāva: Paraṃ Tīrthamanyatīrthaṃ Nirarthakam I
Sarvatīrthamayaṃ Devi Śrīguroścaraṇāmbujam II 159 II

गुरुभक्ति ही सबसे श्रेष्ठ तीर्थ है। क्योंकि गुरुभक्ति से मन का मैल साफ़ हो जाता है। अन्य तीर्थ निरर्थक हैं। हे देवी, गुरुदेव के चरण कमल ही सर्वतीर्थमय हैं।

Devotion to Guru is the supreme and most auspicious pilgrimage because worshiping Guru purifies the mind. Other places of worship are meaningless. O' Devi, all places of worship (pilgrimages) reside in the Lotus-feet of Guru Dev.

कन्याभोगरतामन्दाः स्वकान्तायाः पराड्मुखाः ।
अतः परं मया देवि कथितन्न मम प्रिये ।। १६० ।।

Kanyābhogaratāmandā: Svakāntāyā: Parāḍmukhā: I
Ata: Paraṃ Mayā Devi Kathitanna Mama Priye II 160 II

हे पार्वती, हे देवी, कन्या के भोग में रत, अपनी स्त्रीसे बहिर्मुख और दूसरे से स्त्रीगामी, ऐसे बुद्धिशून्य को मेरा यह आत्मप्रिय परम बोध मैंने नहीं कहा, ऐसा व्यक्ति ज्ञान का सदुपयोग नहीं करेगा।

O’ Pārvatī, O’ Devi, I have not said this for those who are womanizers, who involve with women other than their wives. Those absent-minded men would not productively employ this knowledge.

अभक्ते वंचके धूर्ते पाखंडे नास्तिकादिषु ।
मनसाऽपि न वक्तव्या गुरुगीता कदाचन ।। १६१ ।।

Abhakte Vaṃcake Dhūrte Pākhaṃḍe Nāstikādiṣu I
Manasā'pi Na Vaktavyā Gurugītā Kadācana II 161 II

अभक्त, कपटी, धूर्त, पाखण्डी, नास्तिक इत्यादि को यह गुरुगीता कहने के लिए मन में सोचना तक नहीं चाहिए अर्थात ऐसे व्यक्ति को गुरुगीता कभी भी नहीं कहनी चाहिए।

One should never even think of reading Guru Gītā to those people who are not devoted to God (nonbelievers), wicked, cheaters, hypocritical, atheists, etc.

गुरवो बहवः सन्ति शिष्यवित्तस्यहारकाः ।
तमेकं दुर्लभं मन्ये शिष्यसंतापहारकाः ।। १६२ ।।

Guravo Bahava: Santi Śiṣyavittasyahārakā: I
Tamekaṃ Durlabhaṃ Manye Śiṣyasaṃtāpahārakā: II 162 II

शिष्य के धन को हरण करने वाले गुरु तो बहुत हैं, लेकिन शिष्य के हृदय के संताप का अपहरण करने वाला एक गुरु भी दुर्लभ है। ऐसा मैं मानता हूँ।

Many Gurus are there to steal disciple's wealth; however, that Guru, who takes away the mental afflictions of the student, is rare. This is what I believe.

चतुर्यवान्विवेकी च अध्यात्मज्ञानवान् शुचिः ।
मानसं निर्मलं यस्य गुरुत्वं तस्य शोभते ।। १६३ ।।

Caturyavānvivekī Ca Adhyātmajñānavān Śuci: I
Mānasaṃ Nirmalaṃ Yasya Gurutvaṃ Tasya Śobhate II 163 II

जो चतुर हों, विवेकी हों, अध्यात्म के ज्ञाता हों, पवित्र हों, तथा निर्मल मानसवाले हों, उनको ही गुरु पद पर आसीन होने का अधिकार है।

Only those Souls who are prudent (skillful), thoughtful, knower of Brahma (Sanskrit: Self, God), pure, and virtuous deserve to be on the position of a Guru.

गुरवो निर्मलाः शान्ताः साधवो मितभाषिणः ।
कामक्रोधविनिर्मुक्ताः कदाचारा जितेन्द्रियाः ।। १६४ ।।

Guravo Nirmalā: Śāntā: Sādhavo Mitabhāṣiṇa: I
Kāmakrodhavinirmuktā: Kadācārā Jitendriyā: II 164 II

गुरु निर्मल, शान्त, साधु स्वभाव के, मीठीवाणी वाला काम-क्रोध से अत्यन्त रहित, सदाचारी और जितेन्द्रिय होते हैं, किसी वस्तु की कामना नहीं करते, जो मिल जाए उसी में सन्तुष्ट रहते हैं।

Real Gurus are kind, calm, possess a saint-like nature, have a sweet voice, remain too far away from

desires and anger, perform righteous conduct, and have total control over their senses. They do not crave for material things and remain contented in whatever they get.

सूचकादि प्रभेदेने गुरवो बहुधा स्मृताः ।
स्वयं सम्यक् परीक्ष्याथ तत्वनिष्ठं भजेत्सुधीः ।। १६५ ।।

Sūcakādi Prabhedene Guravo Bahudhā Smṛtā: I
Svayaṃ Samyak Parīkṣyātha Tatvaniṣṭhaṃ Bhajetsudhī: II 165 II

सूचक आदि भेद से अनेक गुरु कहे गये हैं। बुद्धिमान मनुष्य को स्वयं योग्य विचार करके तत्वनिष्ठ सद्गुरु की शरण लेनी चाहिए।

Based on characteristics, many Gurus have been identified. But an intelligent, wise person should himself think carefully and take refuge in a Guru who is fully established in the Self (Brahmaniṣṭha Guru).

वर्णजालमिदं तद्वद्बाह्यशास्त्रं तु लौकिकम् ।
यस्मिन् देवि समभ्यस्तं स गुरुः सूचकः स्मृतः ।। १६६ ।।

Varṇajālamidaṃ Tadvadbāhyaśāstraṃ Tu Laukikam I
Yasmin Devi Samabhyastaṃ Sa Guru: Sūcaka: Smṛta: II 166 II

हे देवी वर्ण और अक्षरों से सिद्ध करने वाले बाह्य लौकिक शास्त्रों का जिसको अभ्यास है, वह गुरु सूचक गुरु कहलाता है।

O’ Devi, a Guru (or teacher) who knows letters (words) and its explanations, and the texts describing the

external world, that Guru is known as Sūcaka (Sanskrit: pointer, indicator) Guru.

वर्णाश्रमोचितां विद्यां धर्माधर्मविधायिनीम् ।
प्रवक्तारं गुरुं विद्धि वाचकस्त्विवति पार्वति ।। १६७ ।।

Varṇāśramocitāṃ Vidyāṃ Dharmādharmavidhāyinīm I
Pravaktāraṃ Guruṃ Viddhi Vācakastivati Pārvati II 167 II

हे देवी, धर्म-अधर्म का विधान करने वाले, वर्ण और आश्रम के अनुरूप विद्या का प्रवचन करने वाले गुरु को तुम वाचक गुरु जानो।

O' Devi, Gurus who knows the rituals and actions based on Dharma (Sanskrit: moral laws and ethics as described in the Vedas), and adharma (unethical actions); and those, who deliver knowledge according to one's caste (in Sanskrit: varṇa) and one's existing stage of life (in Sanskrit: āśrama), are referred to as Vācaka (Sanskrit: expressive speaker) Gurus.

पंचाक्षर्यादिमन्त्राणामुपदेष्टा तु पार्वति ।
स गुरुर्बोधको भूयादुभयोरयमुत्तमः ।। १६८ ।।

Paṃcākṣaryādimantrāṇāmupadeṣṭā Tu Pārvati I
Sa Gururbodhako Bhūyādubhayorayamuttama: II 168 II

पंचाक्षरी आदि मंत्रो का उपदेश देने वाले गुरु बोधक गुरु कहलाते हैं। हे पार्वती, प्रथम दो प्रकार के गुरुओं से यह उत्तम गुरु हैं।

Gurus who give the knowledge of mantras like paṃcākṣarī mantra (a specific Śiva mantra, underscoring five words or letters na: ma: śi vā ya:) are known as Bodha (Sanskrit: knowing or knowledge) Guru. O’ Pārvatī, this kind of Guru is better than other two abovementioned Gurus.

मोहमारणवशयादितुच्छमन्त्रोपदर्शिनम् ।
निषिद्धगुरुरित्याहुः पण्डितातत्वदर्शिनः ।। १६९ ।।

Mohamāraṇavaśayāditucchamantropadarśinam I
Niṣiddhagururityāhu: Paṇḍitātatvadarśina: II 169 II

मोहन, मारण, वशीकरण आदि तुच्छमंत्रो को बताने वाले गुरु को तत्वदर्शी पण्डित निषिद्ध गुरु कहते हैं।

Gurus who impart the knowledge of lowly mantras like mohana, māraṇa, vaśīkaraṇa (Sanskrit: occult practices to control others), other realized enlightened souls call them Niṣiddha (Sanskrit: forbidden) Gurus.

अनित्यमिती निर्दिश्य संसारे संकटालयम् ।
वैराग्यपथदर्शी यः स गुरुर्विहितः प्रिये ।। १७० ।।

Anityamitī Nirdiśya Saṃsāre Saṃkaṭālayam I
Vairāgyapathadarśī Ya: Sa Gururvihita: Priye II 170 II

हे प्रिये, यह संसार अनित्य और दुःखों का घर है। ऐसा समझकर जो गुरु वैराग्य का रास्ता बताते हैं वे विहित गुरु कहलाते हैं।

O' Dear, this world (entire creation) is an illusion and home of sufferings—understanding this, the Guru who teaches the path of dispassion (in Sanskrit: vairāgya) is known as Vihita (Sanskrit: accomplished) Guru.

तत्त्वमस्यादिवाक्यानामुपदेष्टा तु पार्वती ।
कारणाख्यो गुरुः प्रोक्तो भवरोगनिवारकः ।। १७१ ।।

Tattvamasyādivākyānāmupadeṣṭā Tu Pārvatī I
Kāraṇākhyo Guru: Prokto Bhavaroganivāraka: II 171 II

हे पार्वती तत्वमसि आदि महावाक्यों का उपदेश देने वाले तथा संसाररुपी रोगों का निवारण करने वाले गुरु कारणाख्य गुरु कहलाते हैं।

O' Pārvatī, those Gurus who discourses on supreme essences of the Vedas, Mahāvākya (Sanskrit: this is one of the four supreme truths, short phrases that emerge from each of the four Vedas) like Tat Tavaṃ Asi (Sanskrit: Thou That Art; You are the happiness that you are looking for); and those who eliminate people's worldly problems are referred to as Kāraṇākhya (Sanskrit: mind, ego, intellect, and other organs of sense perception) Gurus.

सर्वसन्देहसन्दोहनिर्मूलनविचक्षणः ।
जन्मृत्युभयघ्नो यः स गुरुः परमो मतः ।। १७२ ।।

Sarvasandehasandohanirmūlanavicakṣaṇa: I
Janmṛtyubhayaghno Ya: Sa Guru: Paramo Mata: II 172 II

सभी प्रकार की शंकाएं, सदेहों का जड़ से नाश करने में जो चतुर हैं। जन्म-मृत्यु तथा भय का जो विनाश करते हैं, वे परम गुरु कहलाते हैं। जो सद्गुरु साधक को आत्मस्वरुप का प्रत्यक्ष दर्शन करा देता है, वही परमगुरु अथवा सद्गुरु कहलाता है।

A Guru, who is prudent in removing all kinds of doubts and dis-beliefs from the student, including the fear of birth and death, is the most Supreme Guru. Supreme Guru is also referred to as SadhGuru who makes a student have direct experience (in Sanskrit: pratyakṣa darśana) of Self.

बहुजन्मकृतात् पुण्याल्लभ्यतेऽसौ महागुरुः ।
लब्धावाऽमुं न पुनर्याति शिष्यः संसारबन्धनम् ।। १७३ ।।

Bahujanmakṛtāt Puṇyāllabhyate'sau Mahāguru: I
Labdhāvā'muṃ Na Punaryāti Śiṣya: Saṃsārabandhanam II 173 II

जिस व्यक्ति के अनेक जन्मों में किये पुण्यों से ऐसे ब्रह्मज्ञानी गुरु प्राप्त होते हैं, उनको प्राप्त कर व्यक्ति पुनः इस संसार रुपी बंधन में नही बंधता है। अर्थात मुक्त हो जाता है।

An individual gets to meet a Supreme Guru, who is fully established in Self, as a result of virtuous actions, puṇya karma (Sanskrit: holy actions) performed in many past births. After meeting such a Guru, a student never gets bonded in the illusion of this world; he becomes liberated.

एवं बहुविधालोके गुरवः सन्ति पार्वती ।
तेषु सर्वप्रयत्नेन सेव्यो हि परमो गुरुः ।। १७४ ।।

Evaṃ Bahuvidhāloke Gurava: Santi Pārvatī I
Teṣu Sarvaprayatnena Sevyo Hi Paramo Guru: II 174 II

हे पार्वती—इस प्रकार संसार में अनेक प्रकार के गुरु होते हैं, इन सब में एक परम गुरु की ही सेवा सर्व प्रयत्नों से करना चाहिए।

O’ Pārvatī, like this, there are different types of Gurus in this world. Among such Gurus, one should strive to serve the most Supreme Guru (SadhGuru) by all possible means.

पार्वतयुवाच

Pārvatayuvāca

Goddess Pārvatī asks…

स्वयं मूढा मृत्युभीताः सुकृताद्विरतिं गताः ।
दैवान्निषिद्धगुरुगा यदि तेषां तु का गतिः ।। १७५ ।।

Svayaṃ Mūḍhā Mṛtyubhītā: Sukṛtāddhiratiṃ Gatā: I
Daivānniṣiddhagurugā Yadi Teṣāṃ Tu Kā Gati: II 175 II

पार्वती ने कहा—जो व्यक्ति प्रकृति से मूढ हो, मृत्यु से डरता हो, सत्कर्म से बहिर्मुख व्यक्तियों, दैवयोग से निषिद्ध गुरु का सेवन करे तो उसकी क्या गति होती है?

Goddess Pārvatī questions—What is the state of a person's fate who does not know the reality of this nature (creation), fears death, and virtuously serves worldly people, and by chance serves forbidden Gurus?

श्रीमहादेव उवाच

Śrīmahādeva Uvāca

Lords Śiva replies…

निषिद्धगुरुशिष्यस्तु दुष्टसंकल्पदूषितः ।
ब्रह्मप्रलयपर्यन्तं न पुनर्याति मर्त्यताम ।। १७६ ।।

Niṣiddhaguruśiṣyastu Duṣṭasaṃkalpadūṣita: I
Brahmapralayaparyantaṃ Na Punaryāti Martyatāma II 176 II

भगवान् श्री महादेव बोले,जो निषिद्ध गुरु का शिष्य, दुष्ट संकल्पों से दुष्ट कर्म करते है, उसे उन दुष्टकर्मों के कारण कल्प पर्यन्त मनुष्य योनि प्राप्त नहीं होती।

Śrī Lord Śiva replies—the one who is a student of a forbidden Guru, due to his actions based on evil motives, he would not get another human birth for the entire one cycle of creation.

श्रुणु तत्त्वमिदं देवि यदा स्याद्विरतो नरः ।
तदाऽसावधिकारीति प्रोत्यते श्रुतमस्तकैः ।। १७७ ।।

Śruṇu Tattvamidaṃ Devi Yadā Syādvirato Nara: I
Tadā'sāvadhikārīti Protyate Śrutamastakai: II 177 II

हे देवी, इस तत्व को सुनो, जब मनुष्य इस जगत् रुपी भोग-वासनाओं से विरक्त होता है, तभी वह अधिकारी कहा जाता है। ऐसा वर्णन उपनिषद करतें हैं, अर्थात दैवयोग से गुरु प्राप्त होने की बात अलग है और विचार से गुरु चुनने की बात अलग है।

O’ Devi, listen to this core truth—when an individual is wholly detached from the worldly and bodily pleasures, only then he is said to be truly deserving. The Upaniṣada (Sanskrit: sacred texts that forms the basis of the Vedas) explains like this, which means meeting a Guru by chance is a separate matter compared to choosing a Guru after much reflection or thought.

अखण्डैकरसं ब्रह्म नित्यमुक्तं निरामयम् ।
स्वस्मिन् सन्दर्शितं येन य भवेदस्य देशिकः ।। १७८ ।।

Akhaṇḍaikarasaṃ Brahma Nityamuktaṃ Nirāmayam I
Svasmin Sandarśitaṃ Yena Ya Bhavedasya Deśika: II 178 II

जो अखण्ड, एकरस, नित्यमुक्त और निरामाय ब्रह्म को अपने अन्तर बाहर दिखलाते हैं, वे ही गुरु होने चाहिए, ऐसा गुरु शिष्य को आत्मबोध कराता है। वह सद्गुरु ही आत्मा को जगाकर बोध कराता है कि तू ब्रह्म ही है।

Only those souls deserve to be Gurus who can bring out and makes visible—the indivisible, unchangeable, ever emancipated, and untainted Self (Brahma)—from inside of an individual and enlighten His

student. That SadhGuru awakens the Self of their students and makes them realize that ‘you’ are none other than Brahma (Sanskrit: unmanifest God without any qualities, shape, or form).

जलानां सागरो राजा यथा भवति पार्वति ।
गुरुणां तत्र सर्वेषां राजायं परमो गुरुः ।। १७९ ।।

Jalānāṃ Sāgaro Rājā Yathā Bhavati Pārvati I
Guruṇāṃ Tatra Sarveṣāṃ Rājāyaṃ Paramo Guru: II 179 II

हे पार्वती—जिस प्रकार सब नदियों, तालाबों, कूएं आदि का राजा सागर है, उसी प्रकार सब गुरुओं मे परम गुरु राजा है।

O’ Pārvatī, like the ocean, which is the king of all types of rivers, lakes, wells, etc.; similarly, the Supreme Guru (SadhGuru, Brahmaniṣṭha Guru) is the king of all types of Gurus.

मोहादिरहितः शान्तो नित्यतृप्तो निराश्रयः ।
तृणीकृतब्रह्मविष्णुवैभवः परमो गुरुः ।। १८० ।।

Mohādirahita: Śānto Nityatṛpto Nirāśraya: I
Tṛṇīkṛtabrahmaviṣṇuvaibhava: Paramo Guru: II 180 II

मोह, ममता, आसक्ति, कामनादि दोषों से रहित शान्त चित वाले, सदैव तृप्त, किसी के आश्रय रहित अर्थात स्वाश्रयी ब्रह्मा और विष्णु के वैभव को तुच्छ समझने वाले गुरु ही ‘परम गुरु’ हैं।

The Supreme Guru is free from shortcomings like the inability to discriminate (moha), self-interest (in Sanskrit: mamatā, sense of ownership), worldly attachments, and desires. He remains calm and ever content and does not depend on anyone, meaning He is Self-dependent Brahma, and considers even the glory of Lord Brahmā or Lord Viṣṇu as inferior.

सर्वकालविदेशेषु स्वतन्त्रो निश्चलस्सुखी ।
अखण्डैकरसास्वादतृप्तो हि परमो गुरुः ।। १८१ ।।

Sarvakālavideśeṣu Svatantro Niścalassukhī I
Akhaṇḍaikarasāsvādatṛpto Hi Paramo Guru: II 181 II

सर्व काल और सभी देशों में स्वतंत्र, सदैव निश्चल सुख और दुःख की परवाह नहीं करता, अखण्ड ब्रह्म के आनन्द से तृप्त रहता है। ऐसा गुरु ही परम गुरु होता है।

A Supreme Guru is beyond all space and time, forever remains equanimous (unwavering mind, stithapragya), and does not care about pains or pleasures in life. He always remains content in the bliss of the undivided Brahma (Sanskrit: unmanifest God without any qualities, shape or form).

द्वैताद्वैतविनिर्मुक्तः स्वानुभूतिप्रकाशवान् ।
अज्ञानान्धतमश्छेत्ता सर्वज्ञः परमो गुरु ।। १८२ ।।

Dvaitādvaitavinirmukta: Svānubhūtiprakāśavān I
Ajñānāndhatamaśchettā Sarvajña: Paramo Guru II 182 II

द्वैत और अद्वैत से मुक्त, अपने अनुभव रूप प्रकाश वाले, अज्ञान रूप अन्धकार को छेदने वाले और सर्वज्ञ ही परम गुरु हैं।

One who is free from duality and non-duality, the one who is self-illumined who pierces through the darkness of ignorance, and who is all-pervading, is none other than Supreme Guru.

यस्य दर्शनमात्रेण मनसः स्यात् प्रसन्नता ।
स्वयं भूयात् धृतिश्शान्तिः स भवेत् परमो गुरुः ।। १८३ ।।

Yasya Darśanamātreṇa Manasa: Syāt Prasannatā I
Svayaṃ Bhūyāt Dhṛtiśśāntiḥ Sa Bhavet Paramo Guru: II 183 II

जिनके दर्शन मात्र से मनुष्य का मन प्रसन्न होता है, अपने आप धैर्य और शान्ति आ जाती है। वे परम गुरु हैं।

Supreme Guru is the one who's mere sight produces happiness in mind; one gets courage and peace without any efforts.

स्वशरीरं शवं पश्यन् तथा स्वात्मानमद्वयम् ।
यः स्त्रीकनमेहघ्नः स भवेत् परमो गुरुः ।। १८४ ।।

Svaśarīraṃ Śavaṃ Paśyan Tathā Svātmānamadvayam I
Ya: Strīkanamehaghna: Sa Bhavet Paramo Guru: II 184 II

जो अपने शरीर को शव समान समझते हैं अपने आत्मा को अद्वय जानते है। जो कामिनी कंचन आदि भौतिक वस्तुओं के मोह को नष्ट कर देता है, वे परम गुरु है।

The one who considers his body as a corpse; knows his Self (in Sanskrit: Ātmā) as non-dual; the one who has destroyed his attraction for worldly attractions like women or gold (money), is the Supreme Guru.

मौनी वाग्मीति तत्त्वज्ञो द्विधाभूच्छ्णु पार्वति ।
न कश्चिन्मौनिना लाभो लोकेऽस्मिन्भवति प्रिये ।। १८५ ।।

Maunī Vāgmīti Tattvajño Dvighābhūcchaṇu Pārvati I
Na Kaścinmauninā Lābho Loke'sminbhavati Priye II 185 II

हे प्रार्वती सुनो, तत्त्वज्ञ दो प्रकार के होते हैं—मौनी और वक्ता। हे प्रिये, इन दोनों मे से मौनी गुरु द्वारा लोगों को कोई लाभ नहीं होता है। जो ब्रह्म की प्राप्ति कर लेता है वह मौन हो जाता है उस ब्रह्म के आनंद में ही मग्न रहता है।

O' Pārvatī, please listen, there are two kinds of realized souls—the one who remain silent (Maunī) and others who are speakers (Vaktā). O' Dear, out of these two types of Enlightened Gurus, silent Gurus do not benefit other people. The one who attained God (Brahma), becomes quiet and forever enjoys the bliss of Brahma.

वाग्मी तुत्कटसंसारसागरोत्तारणक्षमः ।
यतोऽसौ संशयच्छेत्ता शास्त्रयुक्त्यनुभूतिभिः ।। १८६ ।।

Vāgmī Tutkaṭasaṃsārasāgarottāraṇakṣama: I
Yato'sau Saṃśayacchettā Śāstrayuktyanubhūtibhi: II 186 II

किन्तु वक्ता गुरु इस संसार रुपी सागर को पार करने में समर्थ होते हैं। क्योंकि वे शास्त्र मुक्ति (तर्क) और अनुभूति से वे सर्वसंशयों का छेदन करते हैं।

But the Gurus who are speakers can make people cross this ocean-like illusionary world because the speaker Gurus can pierce through (remove) all doubts of the student through the sacred texts of liberation (via logic and arguments) and direct experience.

गुरुनामजपाद्येवि बहुजन्मार्जितान्यपि ।
पापनि विलयं यान्ति नास्ति सन्देहमण्वपि ।। १८७ ।।

Gurunāmajapādyevi Bahujanmārjitānyapi I
Pāpani Vilayaṃ Yānti Nāsti Sandehamaṇvapi II 187 II

हे देवी—गुरु नाम के जप से अनेक जन्म-जन्मान्तर के एकत्रित हुए पाप भी नष्ट होते हैं। इसमें अणुमात्र संशय नहीं है।

O' Devi, chanting Guru nāma (the word GuRu or Guru-mantra), destroys the sins accumulated through many previous lives. There is not even an iota of doubt in this.

कुलं धनं बलं शास्त्रं बान्धवास्सेदरा इमे ।
मरणे नोपयुज्यन्ते गुरुरेको हि तारकः ।। १८८ ।।

Kulaṃ Dhanaṃ Balaṃ Śāstraṃ Bāndhavāssedarā Ime I
Maraṇe Nopayujyante Gurureko Hi Tāraka: II 188 II

अपना कुल, धन, बल, शास्त्र, नाते-रिश्तेदार, भाई ये सब मृत्यु के अवसर पर कुछ काम नहीं आते, एक मात्र गुरुदेव ही उस समय तारण कर्ता हैं। इसलिए गुरु का साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

At the time of death, our family lineage, wealth, power, different types of learnings or specialized knowledge and skills, relatives, or brothers, all these are rendered useless. Only Guru comes for help (to cross this world and shows us the path of mokṣa) at that moment of passing. Therefore, one should never give up his relationship with one's Guru.

कुलमेव पवित्रं स्यात् सत्यं स्वगुरुसेवया ।
तृप्ताः स्युस्सकला देवा ब्रह्माद्या गुरुतर्पणात् ।। १८९ ।।

Kulameva Pavitraṃ Syāt Satyaṃ Svagurusevayā I
Tṛptā: Syussakalā Devā Brahmādyā Gurutarpaṇāt II 189 II

जो अपने गुरु की सेवा करता है, सचमुच उसका अपना सारा कुल पवित्र होता है। गुरुदेव के तर्पण से ब्रह्मा आदि सब देवता तृप्त होते हैं।

The one who serves his Guru, truly, his entire family lineage, clan (ancestors and descendants), are purified. When Guru is satisfied, then Lord Brahmā and all other demigods are also appeased (satiated).

स्वरूपज्ञानशून्येन कृतमप्यकृतं भवेत् ।

तपो जपादिकं देवि सकलं बालजल्पवत् ।। १९० ।।

Svarūpajñānaśūnyena Kṛtamapyakṛtaṃ Bhavet I
Tapo Japādikaṃ Devi Sakalaṃ Bālajalpavat II 190 II

हे देवी—स्वरूप के ज्ञान के बिना किये हुए जप-तप मंत्र साधना सब कुछ नाके बराबर है। जैसे बालक के बकवाद के समान (व्यर्थ) है, अतः उसका कोई प्रयोजन नहीं होता।

O' Devi, it is worthless, of zero value, to chant mantra and practice austere rituals without understanding the nature of the form of Self (God). It is like a child's blabber, which is of no importance.

न जानन्ति परं तत्त्वं गुरुदीक्षापराङ्मुखाः ।
भ्रान्ताः पशुसमा होते स्वपरिज्ञानवर्जिताः ।। १९१ ।।

Na Jānanti Paraṃ Tattvaṃ Gurudīkṣāparāṅmukhā: I
Bhrāntā: Paśusamā Hote Svaparijñānavarjitā: II 191 II

गुरुदीक्षा से विमुख रहे हुए लोग भ्रांत हैं और न अपने वास्तविक ज्ञान को जान सकते हैं। वे सच में पशु के समान हैं। परम तत्व को नहीं जान सकते, इस तत्त्व को जानने के लिए गुरु दीक्षा जरूरी है।

Those men who are devoid of an initiation through a Guru (Guru dīkṣā) are bewildered people who can never obtain the ultimate knowledge. Indeed, they are like animals, for they cannot realize the ultimate truth of this nature. To know the reality, an initiation through a Guru is necessary.

तस्मात्कैवल्यसिद्धयर्थं गुरुमेव भजेत्प्रिये ।
गुरुं विना न जानन्ति मूढास्तत्परमं पदम् ।। १९२ ।।

Tasmātkaivalyasiddhayarthaṃ Gurumeva Bhajetpriye I
Guruṃ Vinā Na Jānanti Mūḍhāstatparamaṃ Padam II 192 II

इसलिए हे प्रिये, कैवल्य की सिद्धि के लिए गुरु का ही भजन करना चाहिए, गुरु के बिना मूढ लोग (अज्ञानी लोग) परम पद को नहीं जान सकते।

Therefore O' Devi, to realize ultimate happiness or liberation, one should only worship his Guru. Those foolish people without a Guru cannot obtain the highest state of being.

भीद्यते हृदयग्रन्थिश्चिछद्यन्ते सर्वसंशयाः ।
श्रीयन्ते सर्वकर्माणि गुरोः करुणया शिवे ।। १९३ ।।

Bhīdyate Hṛdayagranthiścichadyante Sarvasaṃśayā: I
Śrīyante Sarvakarmaṇi Guro: Karuṇayā Śive II 193 II

हे शिवे! गुरुदेव की कृपा से हृदय की ग्रन्थि छिन्न हो जाती है। सब प्रकार के संशय कट जाते हैं और सर्व कर्म नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि इस ग्रन्थि को खोलने में केवल गुरुदेव ही सक्षम हैं। जो ईश्वरानुभूति कराकर उसकी प्रत्येक भ्रान्ति को मिटाते हैं।

O' Śive (Devi), with Guru's grace the knots (confusions) in mind are torn apart. All kinds of doubts are removed, and all karmas are destroyed. Only Guru can

open these mental knots. Guru makes it possible for the student to have direct experience of God and removes all clutter in his mind.

कृताया गुरुभक्तेस्तु वेदशास्त्रानुसारतः ।
मुच्यते पातकाद् घोराद् गुरुभक्तो विशेषतः ।। १९४ ।।

Kṛtāyā Gurubhaktestu Vedaśāstrānusārata: I
Muccate Pātakād Ghorād Gurubhakto Viśeṣata: II 194 II

वेद और शास्त्रों के अनुसार विशेष रूप से गुरु की भक्ति करने से गुरुभक्त घोर पाप से भी मुक्त हो जाता है।

According to the Vedas and sacred scriptures, especially Guru's worship liberates a student even from his most horrific sins.

दुःसंगं च परित्यज्य पापकर्म परित्यजेत् ।
चित्तचिह्ननमिदं यस्य तस्य दीक्षा विधीयते ।। १९५ ।।

Du:Saṃgaṃ Ca Parityajya Pāpakarma Parityajet I
Cittacihṛnamidaṃ Yasya Tasya Dīkṣā Vidhīyate II 195 II

दुर्जनों का संग त्यागकर पाप कर्म छोड़ देना चाहिए। जिसके चित्त में ऐसा चिह्न देखा जाता है, उसके लिए गुरुदीक्षा का विधान है, फिर वह गुरु की मर्यादा में बंध जाता है।

One should give up bad company and leave sinful acts. Guru's initiation (Guru dīkṣā) is prescribed for a person whose mind shows signs of a bad company. Then, that person gets bonded within the limits of his Guru.

चित्तत्यागनियुक्तश्च क्रोधगर्वविवर्जितः ।

द्वैतभावपरित्यागी तस्य दीक्षा विधीयते ।। १९६ ।।

Cittatyāganiyuktaśca Krodhagarvavivarjita: I
Dvaitabhāvaparityāgī Tasya Dīkṣā Vidhīyate II 196 II

चित्त का त्याग करने में जो प्रयत्नशील है, काम, क्रोध, लालच से जो रहित है। द्वैतभाव का जिसने त्याग किया है, उसके लिए गुरुदीक्षा का विधान है।

Guru's initiation is prescribed for the one who is eager to let go citta (remove mental afflictions) like desires, anger, and greed, and the one who has abandoned the sense of duality.

एतल्लक्षणसंयुक्तं सर्वभूतहिते रतम् ।

निर्मलं जीवितं यस्य तस्य दीक्षा विधीयत ।। १९७ ।।

Etallakṣaṇasaṃyuktaṃ Sarvabhūtahite Ratam I
Nirmalaṃ Jīvitaṃ Yasya Tasya Dīkṣā Vidhīyata II 197 II

जिसका जीवन इन लक्षणों से युक्त हो। निर्मल हो, जो सब जीवों के कल्याण में रत हो, उसके लिए गुरु दीक्षा का विधान है।

The ritual of Guru's initiation is suitable for the one who's life is endowed with the abovementioned characters—the one who is soft to others and who is continuously involved in the welfare of other people.

अत्यन्तचित्तपक्वस्य श्रद्धाभक्तियुतस्य च ।
प्रवक्तव्यमिदं देवि ममात्मप्रीतये सदा ।। १९८ ।।

Atyantacittapakvasya Śraddhābhaktiyutasya Ca I
Pravaktavyamidaṃ Devi Mamātmaprītaye Sadā II 198 II

हे देवी—जिसका चित्त अत्यंत परिपक्व हो, श्रद्धा और भक्ति परिपूर्ण हो, उसे यह तत्व सदा मेरी प्रसन्नता के लिए कहना चाहिए।

O' Devi, to make me happy, this Guru Gītā should always be recited to a person having a highly sensible (responsible) faithful and devoted mind.

सत्कर्मपरिपाकाच्च चित्तशुद्धस्य धीमतः ।
साधकस्यैव वक्तव्या गुरुगीता प्रयत्नतः ।। १९९ ।।

Satkarmaparipākācca Cittaśuddhasya Dhīmata: I
Sādhakasyaiva Vaktavyā Gurugītā Prayatnata: II 199 II

जिसका चित्त सत्यकर्म से परिपक्व हो और जो बुद्धिमान साधक हो, उसे ही गुरुगीता प्रयत्न पूर्वक कहनी चाहिए।

Guru Gītā should be read only to that person whose citta (faculty of mind that has mental impressions) is perfected doing right actions (doing truthful, virtuous, poise, and pure, holy practices) and is an intelligent seeker.

नास्तिकाय कृतघ्नाय दांभिकाय शठाय च ।

अभक्ताय विभक्तयाच न वाच्येयं कदाचन ।। २०० ।।

Nāstikāya Kṛtaghnāya Dāṃbhikāya Śaṭhāya Ca I
Abhaktāya Vibhaktayāca Na Vācyeyaṃ Kadācana II 200 II

नास्तिक, कृत्घन, दम्भी, शठ, अभक्त, पाखन्डी, अहंकारी, विरोधी को यह गुरुगीता कदापि नहीं कहनी चाहिए।

One should never recite Guru Gītā to an atheist, an ungrateful person (a person not in gratitude), a deceiver, a cheater, a person who is not a believer, a hypocrite, egotistical, or an antagonistic.

स्त्रीलोलुपाय मूर्खाय कामोपहतचेतसे ।
निन्दकाय न वक्तव्या गुरुगीतास्वभावतः ।। २०१ ।।

Strīlolupāya Mūrkhāya Kāmopahatacetase I
Nindakāya Na Vaktavyā Gurugītāsvabhāvata: II 201 II

स्त्री लम्पट, मूर्ख, कामवासना से ग्रस्त चित्त वाले तथा निन्दक को गुरुगीता बिल्कुल नहीं कहनी चाहिए।

One should not recite Guru Gītā to a philanderer, a fool whose citta (faculty of mind holding saṃskāra or mental impressions) is filled with sexual desires. Guru Gītā should also not be read to a blasphemer.

एकाक्षरप्रदातारं यो गुरुर्नैव मन्यते ।
श्वानयोनिशतं गत्वा चाण्डालेष्वपि जायते ।। २०२ ।।

Ekākṣarapradātāraṃ Yo Gururnaiva Manyate I
Śvānayoniśataṃ Gatvā Cāṇḍāleṣvapi Jāyate II 202 II

एकाक्षर मंत्र का उपदेश करने वाले जो गुरु नहीं मानता, वह सौ जन्मों तक कुत्ता (श्वान) होकर फिर चाण्डाल की योनि में जन्म लेता है।

The one who does not agree to instructions (advice) of a Guru—who is the provider of Ekākṣara mantra (monosyllable mantra)—that person becomes a dog for the next one hundred lives and then takes birth as a cāṇḍāla, an outcast, a despised or rejected person of the lowest caste. [A cāṇḍāla usually performs the task of burning dead bodies in the Hindu cremation grounds, generally considered as untouchable]

गुरुत्यागाद् भवेन्मृत्युर्मन्त्रत्यागाद्दरिद्रता ।
गुरुमन्त्रपरित्यागी रौरवं नरकं व्रजेत ।। २०३ ।।

Gurutyāgād Bhavenmṛtyurmantratyāgāddaridratā I
Gurumantraparityāgī Rauravaṃ Narakaṃ Vrajeta II 203 II

गुरु का त्याग करने से मृत्यु होती है। मंत्र जाप छोड़ने से दरिद्रता आती है और मंत्र का त्याग करने से महानर्क मिलता है।

Abandoning one's Guru leads to death. Discontinuing chanting of Guru's mantra brings financial difficulties and leaving both Guru and Guru-mantra recitations leads to a terrible hell.

शिवक्रोधाद् गुरुस्त्राता गुरुक्रोधाच्छिवो न हि ।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गुरोराज्ञां न लंघयेत् ।। २०४ ।।

Śivakrodhād Gurustrātā Gurukrodhācchivo Na Hi I
Tasmātsarvaprayatnena Gurorājñāṃ Na Laṃghayet II 204 II

भगवान शिव के क्रोध से गुरुदेव रक्षा करते हैं, परन्तु गुरुदेव के क्रोध से शिव जी रक्षा नहीं करते अतः सब प्रयत्नों से गुरुदेव की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए क्योंकि भगवान् श्री गुरु के माध्यम से ही किसी का उद्धार करते हैं।

Guru may protect people if Lord Śiva becomes angry; however, if Guru becomes angry, Lord Śiva does not protect. So, one should not disregard one's Guru's orders through all means possible, because God helps people only through a Guru.

सप्तकोटिमहामन्त्राश्चित्तविभ्रंशंकारकाः ।
एक एव महामन्त्रो गुरुरित्यक्षरद्यम् ।। २०५ ।।

Saptakoṭimahāmantrāścittavibhraṃśaṃkārakā: I
Eka Eva Mahāmantro Gururityakṣaradyayam II 205 II

सात करोड़ महामंत्र विद्यमान हैं, वे सब चित्त को भ्रमित करने वाले हैं, परन्तु गुरु नाम केवल दो अक्षर वाला एक मंत्र ही महामंत्र है।

There are seventy million great mantras; they all confuse citta (Sanskrit: faculty of mind that stores impressions, saṃskāra). However, the two-syllable word GuRu—Gu and Ru—is the ultimate mantra.

न मृषा स्यादियं देवि मदुक्तिः सत्यरूपिणी ।
गुरुगीतासमं स्तोत्र नास्ति नास्ति महीतले ।। २०६ ।।

Na Mṛṣā Syādiyaṃ Devi Madukti: Satyarūpiṇī I
Gurugītāsamaṃ Stotra Nāsti Nāsti Mahītale II 206 II

हे देवी, मेरा यह कथन कभी असत्य नहीं होगा, वह सत्य स्वरूप है, इस पृथ्वी पर गुरु गीता के समान अन्य कोई स्तोत्र नहीं है।

O' Devi, my words would never become untrue; it is the most fundamental truth—on this earth, there are no hymns of praise (sacred text) like Guru Gītā.

गुरुगीतामिमां देवि भवदुःखविनाशिनीम् ।
गुरुदीक्षाविहीनस्य पुरतो न पठेत्क्व ।। २०७ ।।

Gurugītāmimāṃ Devi Bhavadu:Khavināśinīm I
Gurudīkṣāvihīnasya Purato Na Paṭhetkva II 207 II

गुरुगीता सभी प्रकार के दुःखों का नाश करने वाली है, इसका पाठ गुरुदीक्षा विहीन मनुष्य के आगे कभी नहीं करना चाहिए।

Guru Gītā destroys all types of sufferings. One should not read (recite) Guru Gītā to those who are not initiated by a Guru.

रहस्यमत्यन्तरहस्यमेतन्न पापिना लभ्यमिदं महेश्वरि ।
अनेकजन्मार्जितपुण्यपाकाद् गुरोस्तु
तत्वं लभते मनुष्यः ।। २०८ ।।

Rahasyamatyantarahasyametanna Pāpinā Labhyamidaṃ Maheśvari I
Anekajanmārjitapuṇyapākād Gurostu
Tatvaṃ Labhate Manuṣya: II 208 II

हे महेश्वरी—यह रहस्य अत्यंत गुप्त रहस्य है। पापी व्यक्तियों को वह नहीं मिलता, अनेक जन्मों के किये हुए पुण्यों से परिपूर्ण मनुष्य ही गुरुतत्व को प्राप्त कर सकता है।

O' Maheshwari (another name of Goddess Pārvatī), this secret is exceptionally mysterious; sinners don't get that (Brahma), while a person who is duly filled with holy actions done in many past lives is only able to attain the core Guru element (Brahma).

सर्वतीर्थावगाहस्य संप्राप्नोति फलं नरः ।
गुरोः पादोदकं पीत्वा शेषं शिरसि धारयन् ।। २०९ ।।

Sarvatīrthāvagāhasya Saṃprāpnoti Phalaṃ Naraḥ I
Guro: Pādodakaṃ Pītvā Śeṣaṃ Śirasi Dhārayan II 209 II

श्री सद्गुरु के चरणामृत का पान करने से और उसे मस्तक पर धारण करने से मनुष्य सभी तीर्थों में स्नान करने का फल प्राप्त करता है। अतः उसे तीर्थ में जाने की आवश्यकता नहीं होती है।

A person gets the fruit of visiting all pilgrimages (holy places of worship), by having and smearing the nectar on one's forehead, that flows from the Lotus-feet of Guru (in Sanskrit: caraṇāmṛta). Therefore, he does not need to visit other places of worship.

गुरुपादोदकं पानं गुरोरुच्छिष्टभोजनम् ।
गुरुमूर्तेः सदा ध्यानं गुरोर्नाम्नः सदा जपः ।। २१० ।।

Gurupādodakaṃ Pānaṃ Gurorucchiṣṭabhojanam I
Gurumūrte: Sadā Dhyānaṃ Gurornāmna: Sadā Japa: II 210 II

गुरुदेव के चरणामृत का पान करना, गुरुदेव के भोजन में से बचा हुआ खाना, गुरुदेव की मूर्ति का ध्यान करना और गुरुनाम का जप करना चाहिए।

One should have the ambrosia of the Lotus-feet of Guru Dev, eat Guru's left-over food, meditate (focus) on the image of Guru, and chant the Guru-nāma (Guru-mantra, two-syllable word GuRu, or Lord's name).

गुरुरेको जगत्सर्वं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मात्संपूजयेद् गुरुम् ।। २११ ।।

Gurureko Jagatsarvaṃ Brahmaviṣṇuśivātmakam I
Guro: Parataraṃ Nāsti Tasmātsaṃpūjayed Gurum II 211 II

ब्रह्मा, विष्णु, और शिव सहित समग्र जगत् गुरुदेव से समाविष्ट है। गुरुदेव से अधिक और कुछ भी नहीं है। इसलिए गुरुदेव की पूजा करनी चाहिए।

Including Lord Brahmā, Viṣṇu, and Śiva, the entire creation is pervaded (permeated, infused) with(in) Guru. There is nothing beyond Guru; therefore, one should worship Guru Dev.

ज्ञानं विना मुक्तिपदं लभ्यते गुरुभक्तितः ।

गुरोः समानतो नान्यत् साधनं गुरुमार्गिणाम् ।। २१२ ।।

Jñānaṃ Vinā Muktipadaṃ Labhyate Gurubhaktita: I
Guro: Samānato Nānyat Sādhanaṃ Gurumārgiṇām II 212 II

गुरुदेव के प्रति अनन्य भक्ति से, ज्ञान के बिना भी, मोक्ष पद मिलता है। गुरु के बताये मार्ग पर चलने वालों के लिए गुरुदेव के समान अन्य कोई साधन नहीं है।

A person can attain enlightenment (mokṣa or self-knowledge) without acquiring knowledge, by sincerely worshipping (faith) his Guru. As for those walking on Guru's path, no other religious practice matches with worshipping their Guru.

गुरोः कृपाप्रसादेन ब्रह्मविष्णुशिवादयः ।
सामर्थ्यमभजन् सर्वे सृष्टीस्थित्यंतकर्मणि ।। २१३ ।।

Guro: Kṛpāprasādena Brahmaviṣṇuśivādaya: I
Sāmarthyamabhajan Sarve Sṛṣṭīsthityaṃtakarmaṇi II 213 II

गुरु के कृपा प्रसाद से ही ब्रह्मा जी सम्पूर्ण सृष्टि की रचना (उत्पत्ति) करते हैं। भगवान् विष्णु पालन करते हैं और भगवान् शिव प्रलय करने का सामर्थ प्राप्त करते हैं। इसलिए गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, शिव के समान मानना चाहिए।

It is only by the grace of the Guru, Lord Brahmā creates this entire creation, Lord Viṣṇu preserves the universe, and Lord Śiva brings dissolution. Therefore, Guru should be considered the same as Lord Brahmā, Lord Viṣṇu, and Lord Śiva.

मन्त्रराजमिदं देवि गुरुरित्यक्षरद्वयम् ।
स्मृतिवेदपुराणानां सारमेव न संशयः ।। २१४ ।।

Mantrarājamidaṃ Devi Gururityakṣaradvayam I
Smṛtivedapurāṇānāṃ Sārameva Na Saṃśaya: II 214 II

हे देवी—गुरु यह दो अक्षरों वाला मंत्र सब मंत्रो में राजा है, श्रेष्ठ है। स्मृतियों, वेद, और पुराणों का वह सार ही है। इसमें संशय नहीं है।

O’ Devi, there is no doubt that GuRu, the two-lettered mantra, is the king of all mantras. It is supreme. GuRu is the essence of all smṛti (Sanskrit: that which has been remembered, memory related, a Hindu religious text containing traditional teachings on religion, such as the Mahābhārata), Vedas, and Purāṇa (Sanskrit: ancient sacred text, mostly stories that form the basis of Vedas).

यस्य यस्य प्रसादत्त् अहमेव सर्व महमेव सर्व
परिकल्पितं च ।
इत्थं विजानामि सदात्यरूपं
तस्यांघ्रिपद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम् ।। २१५ ।।

Yasya Yasya Prasādatt Ahameva Sarva Mahameva Sarva
Parikalpitaṃ Ca I
Itthaṃ Vijānāmi Sadātyarūpaṃ
Tasyāṃghripadmaṃ Praṇato'smi Nityam II 215 II

मैं ही सब हूँ मुझमें ही सब कल्पित है, ऐसा ज्ञान जिनकी कृपा से हुआ है, ऐसे आत्म स्वरूप श्री सदगुरुदेव के श्री चरण कमलों में मैं सदैव नमन् करता हूँ।

I forever bow to the Lotus-feet of that Guru—Ātmā (Soul or Brahma)—by the grace of whom I have realized that I am everything, all exist within me.

अज्ञानतिमिरान्धस्य विषयाक्रान्तचेतसः ।
ज्ञानप्रभाप्रदानेन प्रसादं कुरु मे प्रभो ।। २१६ ।।

Ajñānatimirāndhasya Viṣayākrāntacetasa: I
Jñānaprabhāpradānena Prasādaṃ Kuru Me Prabho II 216 II

हे प्रभो—अज्ञान रुपी अंधकार में अंधे बने हुए और विषयों से आक्रान्त चितवाले मुझको ज्ञान का प्रकाश देकर कृपा करो, जैसे सूर्य नारायण के उदय होने पर संपूर्ण जगत् का अंधकार मिट जाता है। साधक को उसी ज्ञान रुपी प्रकाश के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

O' Lord, kindly shower your grace on me who is bonded in the darkness of ignorance; who's citta (mind's faculty that stores impressions, saṃskāra) is infected with material things. Remove my ignorance like the Sun God—when it rises, it removes all the darkness in the world. A sincere student should pray for that light of knowledge.

इति श्री स्कान्दोत्तरखण्डे उमामहेश्वर संवादे
श्री गुरुगीतायां तृतीयोऽध्यायः संपूर्णाम

Iti Śrī Skāndottarakhaṇḍe Umāmaheśvara Saṃvāde
Śrī Gurugītāyāṃ Tṛtīyo'dhyāya: Saṃpūrṇāma

इस प्रकार श्री स्कान्दोतरखण्ड में शिव पार्वती संवाद में श्री गुरुगीता का तीसरा अध्याय संपूर्ण हुआ।

This is the end of the third chapter, the conversation between Lord Śiva and Pārvatī, as written in Śrī Sakāndotarakhaṇḍa.

ॐ भगवान् श्री गुरुवे नमः
ॐ नमः शिवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

Oṃ Bhagavān Śrī Guruve Nama:
Oṃ Nama: Śivāya
Oṃ Namo Bhagavate Vāsudevāya

Om salutations to Śrī Gurudev.
Om salutations to Lord Śiva.
Om salutations to Lord Viṣṇu.

आरती श्री गुरुदेव जी की

Śrī Gurudeva's Prayer

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुसाक्षात् परं-ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

Gururbrahmā Gururviṣṇu: Gururdevo Maheśvara: I
Gurusākṣāt Paraṃ-Brahma Tasmai Śrī Guruve Nama: II

Guru alone is Lord Brahma, Guru Himself is Lord Vishnu, and Guru is none other than Lord Shiva. Guru is a direct form of Supreme formless God; I bow to that Guru.

जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी ।
जय जय मोह विनाशक भव बन्धन हारी ।।

Jaya Gurudeva Dayānidhi Dīnana Hitakārī I
Jaya Jaya Moha Vināśaka Bhava Bandhana Hārī II

Hail to Guru Deva, who provides his grace to meek human beings, which is beneficial for them. I bow to that Guru, who dispels attachments and free men from their mental bondage.

ॐ जय जय ...

Oṃ Jaya Jaya…

Om my salutations … to Guru Dev.

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव गुरु मूरत धारी ।

वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी ।।

Brahmā Viṣṇu Sadāśiva Guru Mūrata Dhārī I
Veda Purāṇa Bakhānata Guru Mahimā Bharī II

Guru comes as an idol of Lord Brahma, Vishnu, and Shiva. All Vedas and Puranas explicate about Supreme Guru Dev.

ॐ जय जय ...

Oṃ Jaya Jaya…

Om my salutations … to Guru Dev.

जप तप तीरथ संयम दान विविध कीजै ।
गुरु बिन ज्ञान न होवे कोटि यतन कीजै ।।

Japa Tapa Tīratha Saṃyama Dāna Vividha Kījai I
Guru Bina Jñāna Na Hove Koṭi Yatana Kījai II

One may regularly do japa or penances and do different kinds of charities, however, without Guru, a person cannot attain self-knowledge no matter how much effort one may do.

ॐ जय जय ...

Oṃ Jaya Jaya…

Om my salutations … to Guru Dev.

माया मोह नदी जल जीव बहे सारे ।
नाम जहाज बिठा कर गुरु पल में तारे ।।

Māyā Moha Nadī Jala Jīva Bahe Sāre I
Nāma Jahāja Biṭhā Kara Guru Pala Meṃ Tāre II

All men are flowing with the waters of the river of māyā (illusions) and attachments. But with the ship of Guru’s name can help a person come ashore within moments.

ॐ जय जय ...

Oṃ Jaya Jaya…

Om my salutations … to Guru Dev.

काम क्रोध मद मत्सर चोर बड़े भारी ।

ज्ञान खड्ग दे कर में गुरु सब संहारी ।।

Kāma Krodha Mada Matsara Mora Baḍe Bhārī I

Jñāna Khaḍga De Kara Meṃ Guru Saba Saṃhārī II

Human passions, anger, jealousy, and ego are thieves of the highest category. With the sword of self-knowledge, Guru destroys all these imperfections.

ॐ जय जय ...

Oṃ Jaya Jaya…

Om my salutations … to Guru Dev.

नाना पंथ जगत में निज-निज गुण गावें ।

सब का सार बताकर गुरु मारग लावे ।।

Nānā Paṃtha Jagata Meṃ Nija-Nija Guṇa Gāveṃ I

Saba Kā Sāra Batākara Guru Māraga Lāve II

Different paths in this world speak the glory of God in their own language. Guru brings people on the right path by explicating the essence of all varied paths.

ॐ जय जय ...

Oṃ Jaya Jaya…

Om my salutations … to Guru Dev.

गुरु चरणामृत निर्मल सब पातक हारी ।
वचन सुनत श्री गुरु के सब संशयहारी ।।

Guru Caraṇāmṛta Nirmala Saba Pātaka Hārī I
Vacana Sunata Śrī Guru Ke Saba Saṃśayahārī II

The ambrosia flowing from the lotus feet of Guru destroys all sins. Hearing words of Guru clear all confusion.

ॐ जय जय ...

Oṃ Jaya Jaya…

Om my salutations … to Guru Dev.

तन-मन-धन सब अर्पण गुरु चरनन कीजे ।
ब्रह्मानन्द परम पद मोक्ष गति दिजे ।।

Tana-Mana-Dhana Saba Arpaṇa Guru Caranana Kījai I
Brahmānanda Parama Pada Mokṣa Gati Dijai II

One should offer his body, mind, and wealth in the lotus feet of Guru. May Guru give us the highest seat of bliss and mokṣa—a state of perpetual bliss and end of all pains and sufferings.

ॐ जय जय ...

Oṃ Jaya Jaya…

Om my salutations … to Guru Dev.